सांकळियु.

पाठ.	विषय.	पृष्ठ.
	प्रस्तावना.	
१	वांचनारने भलामण.	१—२
२	सर्वमान्यधर्म (पद्य)	२—३
३	कर्मनाचमत्कार	३—५
४	मानवदेह	५—६
५—७	अनाथीमुनि भाग ३	७—१२
८	सद्देवतत्त्व	१२—१४
९	सद्धर्मतत्त्व	१४—१५
१०—११	सद्गुरुतत्त्व भाग २	१६—१८
१२	उत्तमगृहस्थ	१८—१९
१३—१४	जिनेश्वरनी भक्ति	१९—२३
१५	भक्तिनो उपदेश (पद्य)	२४
१६	खरीमहत्ता	२५—२६
१७	बाहुबळ	२६—२८
१८	चारगति	२८—३०
१९—२०	संसारने चार उपमा भाग २	३०—३३
२१	बार भावना	३३—३५
२२	कामदेव श्रावक	३५—३६
२३	सत्य	३६—३८
२४	सत्संग	३८—४१
२५	परिग्रहने संकोचवो	४१—४३

२६	तत्त्व समजवुं	४३-४५
२७	यत्ना	४५-४६
२८	रात्रिभोजन	४६-४७
२९-३०	सर्व जीवनी रक्षा भाग २	४७-५१
३१	प्रत्याख्यान	५१-५३
३२	विनयवडे तत्त्वनी सिद्धि छे	५३-५५
३३	सुदर्शन शेठ	५५-५७
३४	ब्रह्मचर्य विषे सुभाषित (पद्य)	५७
३५	नमस्कार	५८-५९
३६	अनानुपूर्वी	६०-६१
३७-३९	सामायिक विचार भाग ३	६१-६७
४०	प्रतिक्रमण विचार	६७-६९
४१-४२	भिखारीनो खेद भाग २	६९-७२
४३	अनुपम क्षमा	७२-७३
४४	राग	७३-७४
४५	सामान्य मनोरथ (पद्य)	७५
४६-४८	कपिलमुनि भाग ३	७५-८१
४९	तृष्णानी विचित्रता (पद्य)	८१-८३
५०	प्रमाद	८३-८४
५१	विवेक एटले शुं ?	८४-८६
५२	ज्ञानिओए वैराग्य शा माटे बोध्यो ?	८६-८८
५३	महावीर शासन	८८-९०
५४	अशुचि कोने कहेवी	९०-९२

५५	सामान्य नित्य नियम	९२-९३
५६	क्षमापना	९३-९४
५७	वैराग्य ए धर्मनुं स्वरुप छे	९४-९५
५८-६०	धर्मना मतभेद भाग ३	९६-१०१
६१-६६	सुख विषे विचार भाग ६	१०१-११३
६७	अमूल्य तत्त्व विचार (पद्य)	११४-११५
६८	जीतेंद्रियता	११५-११६
६९	ब्रह्मचर्यनी नव वाड	११६-११७
७०-७१	सनत् कुमार भाग २	११९-१२२
७२	बत्रीश योग	१२२-१२४
७३	मोक्षनां सुख	१२४-१२६
७४-७६	धर्मध्यान भाग ३	१२६-१३२
७७-८०	ज्ञान संबंधी बे बोल भाग ४	१३२-१३७
८१	पंचमकाळ	१३८-१४०
८२-९८	तत्त्वावबोध भाग १७	१४०-१६२
९९	समाजनी अगत्यता	१६२-१६३
१००	मनोनिग्रहनां विघ्नो	१६३-१६४
१०१	स्मृतिमां राखवा योग्य महावाक्यो	१६४-१६५
१०२-१०६	विविध प्रश्नो भाग ५	१६५-१७०
१०७	जिनेश्वरनी वाणी (पद्य)	१७१
१०८	पूर्णमालिका (पद्य)	१७१

शुद्धिपत्रक.

पानुं.	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१९	९	न	ते
१८	६	निमग्नहोय	निमग्नहोय,
"	९	सभावी	समभावी,
१९	३	उपजीविका ग	उपजीविकामां
"	२०	उत्तमगतिनु	उत्तमगतिनुं
२९	१३	हेतुथी	गतिथी
३१	१४	उडो	उंडो
३३	१९	आत्महितैषिए	आत्महितैषिए
३५	११	निर्गंथ	निर्ग्रंथ
४०	२४	रंगलागे	रंगलागे.
४१	१२	एवा	एवी
४३	१५	पाम्यो	पाम्या
४४	१०	प्रतिक्रमणी	प्रतिक्रमण
४९	१६	भगवंतवांधेली	भगवंतेबांधेली
५०	९	आप्यु	आप्युं
५७	२०	ज	जे
५८	६	उवाझायाणं	उवाझायाणं
"	२२	तेम	ते
६९	९	मिष्टान	मिष्टान्न
७६	२	उपरथी	उदरथी
८१	३	एथी	एथी
"	१२	चाहनाछे.	चाहनाने वधारी दछे.

૧૨	ભવ	ભવ
૨૩	પિવાકને	વિપાકને
૨૪	પિવાકનું	વિપાકનું
૯	વર્મ	ધર્મ
૧૮	ચક્રાવર્ત્તિ	ચક્રવર્ત્તિ
૨	છે. અનાનાથિથી પરાધિન છે	છે; અજ્ઞાનાથી પરાધીન છે.
૨૧	પામ્યા	પામ્યા.
૧૨	મુનિયાના	મુનિયોના
૧૩	સ્વરુપ	સ્વરુપ
૨૨	નિશ્વર્ય	નિશ્ચય
૧૭	નિર્ગંથિ	નિર્ગ્રંથ
૧૯	પથિનો	પંથિનો
૨૦	બોઘ	બોધ
૨૨	ત્યેરે	ત્યારે
૧૦	કરી	કરી.
૨૧	સુસ્વી	સુખી
૨૩	સમચલું	સમજ્યું
૧૨	દેવયોગે	દેવયોગે
૧૭ ૧૮ ૫	નિર્ગંથ	નિર્ગ્રંથ
૯	વિગજે	વિરાજે

विवेचन अने प्रज्ञावबोध भाग भिन्न छे. आ पुस्तक एमांनो एक खंड छे; छतां सामान्य तत्त्वरूप छे.

गुजराती भाषानुं जेने सारूं ज्ञान छे, अने नवतत्त्वादि सामान्य प्रकरणो जे समजी शकेछे, एओने आ ग्रंथ विशेष बोधदायक थशे. आ ग्रंथनी योजनानो एक हेतु उछरता युवानोने आत्म-हित भणी लक्ष करावयानो छे. तेमज आत्मा-र्थी पुरुषो भारी बीजी स्व-पर हितकारी माळा गुंथी प्रसि-द्धिमां आणे एवो पण एक हेतु छे. आ मोक्षमाळाना चार पुस्तको थवानी योजना हती; एमांनुं आ बीजुं पुस्तक छे.

आगळ कह्युं तेम आ पुस्तक बालावबोध छे; विवेचन अने प्रज्ञावबोध त्रीजा अने चोथा पुस्तकमां आववानी योजना हती. पहेला पुस्तकनो उद्देश वाचवा पारीप्राकट्यथी सूचित थाय छे. आ ग्रंथना कर्ता पुरुष ए बाकीनां पुस्तको गूंथे ए प्रथम तेमो-थनो देहोत्सर्ग थया छे; जेना करतां बीजुं कंइ संतापजनक होइ शके नहीं. त्रीजा अने चोथा पुस्तकनी संकलना— दरेक माळाना १०८ शिक्षापाठना मणकाथी— पत्रोमां अक्षर बसतमां एओए दर्शावीछे. कोइ विवेकी, मध्यस्थभावी वीर इन्द्रियवशनुं आलंबन लइ ए संकलना प्रमाणे माळा गुंथवा पुरुषार्थ करे तो ते महाभागने फलदायक थइशकेछे. तथास्तु !

२. आ ग्रंथनी आ बीजी आवृत्ति प्रगट थायछे. "वीतराग मार्ग बोधिका" एवुं उपनाम आ ग्रंथने योग्यछे. वीतराग कथित मार्गनुं स्वरूप आ ग्रंथमां दर्शाव्युंछे. ज्ञानादि रत्नत्रयनी, विशुद्ध करवानी आसां कुंची रहेलीछे. कर्ता पुरुषे तत्वार्थ ए

केः—"बहु ऊंडा उतरतां आ मोक्षमाळा मोक्षनां कारणरुप थइ पडशे. (कारणके) मध्यस्थताथी एमां तत्त्वज्ञान अने शिल बोधवानो उद्देश छे." आ मोक्षमाळा मोक्षवधूमाटेनी वरमाळा थाय ए सहज सिद्ध थाय छे. तत्त्वज्ञान अने सत्शील, अथवा ज्ञान अने क्रिया, अथवा श्रुत अने चारित्र धर्मनी आराधना, अथवा सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन अने सम्यक्चारित्र, सरळ भाषामां सत्य जाणपणुं अने ते प्रमाणे सत्य वर्त्तन आ मोक्ष प्राप्तिनां साधनछे; अने ए साधनोनो आ ग्रंथमां बोधछे. तो ते यथार्थ वांची–विचारी ते प्रमाणे प्रवर्त्तनारने मोक्ष केम सुलभ न होय? अर्थात् तत्त्व समजवानो प्रयास करी, ते समजी सुधी रीते वर्त्ते तो तेने मोक्ष दूर नथी. आम तत्त्वज्ञान पामवानो, सत्शील सेववानो, अने परिणामे मोक्ष मेळववानो आखा ग्रंथमां बोधछे. तत्त्वजिज्ञासा जागृत करे, अने सद्वर्त्तनमां प्रेरे एवो स्थळे स्थळे उपदेशछे. अज्ञान अने मतमतांतर टाळवानो, मध्यस्थताथी तत्त्व उपर आववानो, एवी रुचि उपजाववानो प्रयास स्थळे स्थळे छे; जे मोक्षनां कारणरुप छे. शिक्षापाठमात्र मनन करवा योग्य छे. एटले प्रत्येकनुं पृथग् अवलोकन न करतां ए वांचनारने शीर राखवुं योग्य छे. वांचनारने भलामणना पाठमां दर्शाव्या प्रमाणे विवेकपूर्वक, मननपूर्वक, आ माळा कंठे धरवाथी मांते बहुहित थशे. माटे सर्व सुज्ञ भाइओ, व्हेनोए विवेक पूर्वक, मध्यस्थताथी, ममत्व दूर करी, बहुमान अने विनय पूर्वक आ ग्रंथनुं पठन—मनन करवुं, जेथी मोक्षनां कारण रुप थइ पडवानो आ माळानो हेतु सहज सिद्ध थाय. तथास्तु!

आवडतुं न होय अने तेओनी इच्छा होय तो आ पुस्तक अनुक्रमे तेमने वांची संभळाववुं.

तमने आ पुस्तकमांथी जे कंइ न समजाय ते सुविचक्षण पुरुष पासेथी समजी लेवुं योग्य छे.

तमारा आत्मानुं आथी हित थाय; तमने ज्ञान, शांति अने आनंद मळे; तमे परोपकारी, दयाळु, क्षमावान, विवेकी अने बुद्धिशाळी थाओ; एवी शुभ याचना अर्हत भगवान पासे करी आ पाठ पूर्ण करुं छउं.

—:०:—

शिक्षापाठ २ सर्वमान्यधर्म.

चोपाइ.

धर्मतत्व जे पूछयुं मने,
ते संभळावुं स्नेहे तने;
जे सिद्धांत सकळनो सार,
सर्व मान्य सहुने हितकार.
भाख्युं भाषणमां भगवान,
धर्म न बीजो दया समान;
अभयदान साथे संतोष,
द्यो प्राणीने, दळवा दोष.
सत्य शीळने सघळां दान,
दया होइने रह्यां प्रमाण;

दया नहीं तो ए नहि एक,
विना सूर्य कीरण नहि देख. ३.
पुष्पपांखडी ज्यां दूभाय,
जिनवरनी त्यां नहि आज्ञाय;
सर्व जीवनुं ईच्छो सूख,
महावीरनी शिक्षा मुख्य. ४.
सर्व दर्शने ए उपदेश;
ए एकांते-नहीं विशेष;
सर्व प्रकारे जिननो बोध,
दया दया निर्मळ अविरोध ! ५
ए भवतारक सुंदर राह,
धरिये तरिये करि उत्साह;
धर्म सकळनुं ए शुभ मूळ,
ए वण धर्म सदा प्रतिकूळ. ६.
तत्त्वरूपथी ए ओळखे,
ते जन प्होंचे शाश्वत सुखे;
शांतिनाथ भगवान प्रसिद्ध,
राज्यचंद्र करुणाए सिद्ध. ७.

—:०:—

शिक्षापाठ ३ कर्मना चमत्कार.

हुं तमने केटलीक सामान्य विचित्रताओ कही जाउं छउं; ए उपर विचार करशो तो तमने परभवनी श्रद्धा द्रढ थशे.

एक जीव सुंदर पलंगे पुष्पशय्यामां शयन करे छे, एकने

फाटल गोदडी पण मळती नथी; एक भात भातनां भोजनोथी तृप्त रहे छे, एकने काळी जारनां पण सांसा पडे छे; एक अगणित लक्ष्मीनो उपभोग ले छे, एक फुटी बदाम माटे थइने घेर घेर भटके छे; एक मधुरां वचनथी मनुष्यनां मन हरे छे, एक अवाचक जेवो थइने रहे छे, एक सुंदर वस्त्रालंकारथी विभूषित थइ फरे छे, एकने खरा शियाळामां फाटेलुं कपडुं पण ओढवाने मळतुं नथी. एक रोगी छे, एक प्रबळ छे. एक बुद्धिशाळी छे, एक जडभरत छे. एक मनोहर नयनवाळो छे, एक अंध छे. एक लूलो के पांगळो छे, एकना पग ने हाथ रमणीय छे. एक कीर्तिमानछे, एक अपयश भोगवे छे. एक लाखो अनुचरो पर हुकम चलावे छे, अने तेटलानाज टुंबा सहन अेक करे छे. एकने जोइने आनंद उपजे छे, एकने जोतां वमन थाय छे. एक संपूर्ण इंद्रियो वाळो छे, अने एक अपूर्ण इंद्रियोवाळो छे. एकने दीन दुनियानुं लेश भान नथी, एकनां दुःखनो किनारो पण नथी.

एक गर्भाधानमां आवतां ज मरण पामे छे, एक जन्म्यो के तरत मरण पामे छे, एक मुवेलो अवतरे छे अने एक सो वर्षनो वृद्ध थईने मरे छे.

कोइना मुख, भाषा अने स्थिति सरखां नथी. मूर्ख राज्यगादी पर खमा खमाथी वधावाय छे, समर्थ विद्वानो धक्का खाय छे!

आम आखा जगतनी विचित्रता भिन्न भिन्न प्रकारे तमे जुओ छो; ए उपरथी तमने कंइ विचार आवे छे? में कह्युं छे

ते उपरथी तमने विचार आवतो होय तो कहो के ते शा वडे थाय छे ?

पोतानां बांधेलां शुभाशुभ कर्मवडे. कर्म वडे आखो संसार भमवो पडे छे. परभव नहीं माननार पोते ए विचारो शा-वडे करे छे ?–ते उपर यथार्थ विचार करे तो ते पण आ सिद्धांत मान्य राखे.

शिक्षापाठ ४ मानवदेह.

आगळ कह्युं छे ते प्रमाणे विद्वानो मानवदेहने बीजा सघळा देह करतां उत्तम कहे छे; ते उत्तम कहेवानां केटलांक कारणो अत्रे कहीशुं.

आ संसार बहु दुःखथी भरेलो छे. एमांथी ज्ञानीयो तरी-ने पार पामवा प्रयोजन करे छे. मोक्षने साधी तेओ अनंत सुखमां विराजमान थाय छे. ए मोक्ष बीजा कोइ देहथी मळतो नथी. देव, तिर्यंच के नर्क ए एक्के गतिथी मोक्ष नथी, मात्र मानवदेहथी मोक्षछे.

त्यारे तमे कहेशो के सघळां मानवियोनो मोक्ष केम थतो नथी ? तेनो उत्तर जेओ मानवपणुं समजे छे, तेओ संसार शोकने तरी जायछे. जेनामां विवेकबुद्धि उदय पामी होय, अने ते वडे सत्यासत्यनो निर्णय समजीने परम तत्त्वज्ञान तथा उत्तम चारी-त्ररूप सद्धर्मनुं सेवन करीने जेओ अनुपम मोक्षने पामे छे, तेनां देहधारीपणाने विद्वानो मानवपणुं कहेछे.मनुष्यना शरीरना देखाव उपरथी विद्वानो तेने मनुष्य कहेता नथी; परंतु तेना विवेकने लइने

कहे छे. बे हाथ, बे पग, बे आंख, बे कान, एक मुख, बे होठ अने एक नाक ए जेने होय तेने मनुष्य कहेवो एम आपणे समजवुं नहीं; जो एम समजीए तो पछी वांदराने पण मनुष्य गणवो जोइए; एणे पण ए प्रमाणे सघलुं प्राप्त कर्युं छे. विशेषमां एक पूछडुं पण छे; त्यारे शुं एने महा मनुष्य कहेवो ? ना, नहीं—मानवपणुं समजे तेज मानव केहेवाय.

ज्ञानीओ कहेछे के ए भव बहु दुर्लभ छे; अति पुण्यना प्रभावथी ए देह सांपडे छे; माटे एथी उतावळे आत्मसार्थक करी लेवुं. अयमंतकुमार, गजसुकुमार जेवां नानां वाळको पण मानवपणांने समजवाथी मोक्षने पाम्यां. मनुष्यमां जे शक्ति वधारे छे, ते शक्तिवडे करीने मदोन्मत्त हाथी जेवां प्राणीने पण वश करी लेछे; एज शक्तिवडे जो तेओ पोतानां मनरुपी हाथीने वश करी ले तो केटलुं कल्याण थाय !

कोइ पण अन्य देहमां पूर्ण सद् विवेकनो उदय थतो नथी अने मोक्षना राजमार्गमां प्रवेश थइ शकतो नथी. एथी आपणने मळेलो आ बहु दुर्लभ मानवदेह सफळ करी लेवो अवश्यनो छे. केटलाक मूर्खो दुराचारमां, अज्ञानमां, विषयमां, अने अनेक प्रकारना मदमां आवो मानवदेह वृथा गुमावे छे. अमूल्य कौस्तुभ हारी बेसेछे. ए नामना मानव गणाय, बाकी तो वानररुपज छे.

मोतनी पळ निश्चय आपणे जाणी शकता नथी, माटे जेम बने तेम धर्ममां त्वराथी सावधान थवुं.

—✻—

शिक्षापाठ ५ अनाथी मुनि भाग १.

अनेक प्रकारनी रीद्धिवाळो मगधदेशनो श्रेणिक नामे राजा अश्वक्रिडाने माटे मंडिकूक्ष नामनां वनमां नीकळी पड्यो, वननी विचित्रता मनोहारिणी हती. नाना प्रकारनां वृक्षो त्यां आवी रह्यां हतां; नाना प्रकारनी कोमळ वेलीओ घटाटोप थइ रही हती; नाना प्रकारनां पंखीओ आनंदथी तेनुं सेवन करतां हतां; नाना प्रकारनां पक्षियोनां मधुरां गायन त्यां संभळातां हतां; नाना प्रकारनां फूलथी ते वन छवाइ रह्युं हतुं; नाना प्रकारनां जळनां झरण त्यां वहेतां हतां; टुंकामां ए वन नंदन-वन जेवुं लागतुं हतुं. ते वनमां एक झाड तळे महा समाधिवंत पण सुकुमार अने सुखोचित मुनिने ते श्रेणिके बेठेलो दीठो. एनु रुप जोइने ते राजा अत्यंत आनंद पाम्यो. उपमारहित रुपथी विस्मित थइने मनमां तेनी प्रशंसा करवा लाग्यो. आ मुनिनो केवो अद्भुत वर्णछे! एनुं केवुं मनोहर रुप छे! एनी केवी अद्भुत सौम्यता छे! आ केवी विस्मयकारक क्षमानो धरनार छे! आना अंगथी वैराग्यनो केवो उत्तम प्रकाश छे! आनी केवी निर्लोभता जणाय छे! आ संयति केवुं निर्भय नम्रपणुं धरावे छे! ए भोगथी केवो विरक्त छे! एम चिंतवतो चिंतवतो-मुदित थतो थतो-स्तुति करतो करतो-धीमेथी चालतो चालतो, प्रदक्षिणा देइने ते मुनिने वंदन करीने अति समीप नहीं तेम अति दूर नही, एम ते श्रेणिक बेठो; पछी बे हाथनी अंजलि करीने विनयथी तेणे ते मुनिने पूछ्युं के हे

आर्य ! तमे प्रशंसा करवा योग्य एवा तरुण छो; भोगविला- सने माटे तमारी वय अनुकूळ छे; संसारमां नाना प्रकारनां सुख रह्यांछे, ऋतु ऋतुना कामभोग, जळ संबंधीना विलास, तेमज मनोहारिणी स्त्रीओनां मुखवचननुं मधुरं श्रवण छतां ए सघळानो त्याग करीने मुनित्वमां तमे महा उद्यम करोछो एनुं शुं कारण ? ते मने अनुग्रहथी कहो. राजानां आवां वचन सां- भळीने मुनिए कह्युं, हे राजा हुं अनाथ हतो. मने अपूर्व वस्तुनो प्राप्त करावनार, तथा योगक्षेमनो करनार, मारापर अनुकंपा आणनार, करुणाथी करीने परम सुखनो देनार एवो मारो कोइ मित्र थयो नहीं. ए कारण मारा अनाथीपणानुं हतुं.

शिक्षापाठ ६ अनाथी मुनि भाग २.

श्रेणिक, मुनिना भाषणथी स्मित करीने बोल्या, तमारे म- हा ऋद्धिवंतने नाथ केम न होय ? जो कोइ नाथ नथी तो हुं थउं छउं. हे भयत्राण ! तमे भोग भोगवो. हे संयति ! मित्र, ज्ञातिए करीने दुर्लभ एवो आ तमारो मनुष्यभव सुलभ करो ! अनाथीए कह्युं, अरे श्रेणिक राजा ! पण तुं पोते अनाथछो तो मारो नाथ शुं थइश ? निर्धन ते धनाढ्य क्यांथी बनावे ? अबुध ते बुद्धिदान क्यांथी आपे ? अज्ञ ते विद्वत्ता [illegible] दे ? वंध्या ते संतान क्यांथी आपे ? ज्यारे तुं पोते [illegible], त्यारे मारो नाथ क्यांथी थइश ? मुनिनां वचनथी [illegible] आकुळ अने अति विस्मित थयो. कोइ काळे [illegible] नहीं एवां यतिना मुखथी वचन [illegible]

थयो अने बोल्यो हुं अनेक प्रकारना अश्वनो भोगी छउं; अनेकप्रकारना मदोन्मत्त हाथीओनो धणी छउं; अनेक प्रकारनी सैन्या मने आधीन छे; नगर, ग्राम, अंतःपुर अने चतुष्पादनी मारे कंइ न्यूनता नथी; मनुष्य संबंधी सघळा प्रकारना भोग हुं पाम्यो छउं; अनुचरो मारी आज्ञाने रुडी रीते आराधे छे; एम राजाने छाजती सर्व प्रकारनी संपत्ति मारे घेरछे; अनेक मनवांछित वस्तुओ मारी समीपे रहेछे. आवो हुं महान् छतां अनाथ केम होउं ? रखे हे भगवन्, तमे मृषा बोलता हो ! मुनिए कह्युं, राजा ! मारु कहेवुं तुं न्यायपूर्वक समज्यो नथी. हवे हुं जेम अनाथ थयो; अने जेम में संसार त्याग्यो तेम तने कहुं छउं; ते एकाग्र अने सावधान चित्तथी सांभळ; सांभळीने पछी तारी शंकानो सत्यासत्य निर्णय करजे.

कौशांबी नामे अति जीर्ण अने विविध प्रकारनी भव्यताथी भरेली एक सुंदर नगरी छे; त्यां रीद्धिथी परिपूर्ण धनसंचय नामनो मारो पिता रहेतो हतो. हे महाराजा ! योवन वयना प्रथम भागमां मारी आंखो अति वेदनाथी घेराइ; आखे शरीरे अग्नि बळवा मंड्यो. शस्त्रथी पण अतिशय तीक्ष्ण ते रोग वैरीनी पेठे मारापर कोपायमान थयो. मारुं मस्तक ते आंखनी असह्यवेदनाथी दुःखवा लाग्युं. वज्रना प्रहार जेवी, बीजाने पण रौद्रभय उपजावनारी एवी ते दारुण वेदनाथी हुं अत्यंत शोकमां हतो. संख्याबंध वैद्यकशास्त्रनिपूण वैद्यराजा मारी ते वेदनानो नाश करवाने माटे आव्या अने तेमणे अनेक औषध उपचार कर्या पण ते वृथा गया. ए महा निपूण गणाता वैद्यराजो

मने ते दरदथी मुक्त करी शक्या नहीं; एज हे राजा ! मारुं अनाथपणुं हतुं. मारी आंखनी वेदना टाळवाने माटे मारा पिताए सर्व धन आपवा मांडयुं; पण तेथी करीने मारी ते वेदना टळी नहीं, हे राजा ! एज मारुं अनाथपणुं हतुं. मारी माता पुत्रने शोके करीने अति दुःखार्त थइ; परंतु ते पण मने दरदथी मूकावी शकी नहीं, एज हे राजा ! मारुं अनाथपणुं हतुं. एक पेटथी जन्मेला मारा ज्येष्ठ अने कनिष्ठ भाइओ पोताथी बनतो परिश्रम करी चूक्या पण मारी ते वेदना टळी नहीं, हे राजा ! एज मारुं अनाथ पणुं हतुं. एक पेटथी जन्मेली मारी ज्येष्ठा अने कनिष्ठा भगनीओथी मारुं ते दुःख टळ्युं नहीं, हे महाराजा ! एज मारुं अनाथपणुं हतुं. मारी स्त्री जे पतिव्रता, मारापर अनुरक्त अने प्रेमवंती हती, ते आंसु भरी मारुं हैयुं पलाळती हती तेणे अन्न पाणी आप्या छतां अने नानाप्रकारनां अंघोलण, चुवादिक सुगंधि पदार्थ, तेमज अनेक प्रकारनां फुल चंदनादिकनां जाणिता अजाणिता विलेपन कर्या छतां, हुं ते विलेपनथी मारो रोग शमावी न शक्यो. क्षण पण अळगी रहेती नहोती, एवी ते स्त्री पण मारा रोगने टाळी न शकी, एज हे महाराजा ! मारुं अनाथपणुं हतुं. एम कोइना प्रेमथी, कोइनां औषधथी, कोइना विलापथी के कोइना परिश्रमथी ए रोग उपशम्यो नहीं. ए वेळा पुनः पुनः मे असह्य वेदना भोगवी; पछी हुं प्रवंची संसारथी खेद पाम्यो. एकवार जो आ महा विडंबनामय वेदनाथी मुक्त थउं तो खंती, दंती अने निरारंभी प्रवज्याने धारण

करुं, एम चिंतवीने शयन करी गयो. ज्यारे रात्रि अतिक्रमी गइ त्यारे हे महाराजा! मारी ते वेदना क्षय थइ गइ; अने हुं निरोगी थयो. मात, तात स्वजन बंधवादिकने पूछीने प्रभाते में महा क्षमावंत, इंद्रियने निग्रह करवावाळुं, अने आरंभोपाधिथी रहित एवुं अणगारत्व धारण कर्युं.

शिक्षापाठ ७ अनाथी मुनि भाग ३.

हे श्रेणिक राजा! त्यार पछी हुं आत्मा परआत्मानो नाथ थयो. हवे हुं सर्व प्रकारना जीवनो नाथ छउं. तुं जे शंका पाम्यो हतो ते हवे टळी गइ हशे. एम आखुं जगत्—चक्रवर्त्ति पर्यंत अशरण अने अनाथ छे. ज्यां उपाधि छे त्यां अनाथता छे; माटे हुं कहुंछउं ते कथन तुं मनन करी जजे. निश्चय मानजे के आपणो आत्माज दुःखनी भरेली वैतरणीनो करनार छे; आपणो आत्माज क्रूर सालमलि वृक्षनां दुःखनो उपजाववनार छे; आपणो आत्माज वंछित वस्तुरुपी दुधनी देवावाळी कामधेनु सुखनो उपजाववनार छे; आपणो आत्माज नंदनवननी पेठे आनंदकारी छे; आपणो आत्माज कर्मनो करनार छे; आपणो आत्माज ते कर्मनो टाळनार छे; आपणो आत्माज दुःखोपार्जन करनार छे, अने आपणोआत्माज सुखोपार्जन करनारछे; आपणो आत्माज मित्र ने आपणो आत्माज वैरी छे; आपणो आत्मा कनिष्ट आचारे स्थित अने आपणो आत्माज निर्मळ आचारे स्थित रइ छे. एम आत्मप्रकाशकबोध श्रेणिकने ते अनाथी मुनिए आप्यो. श्रेणिकराजा बहु संतोष पाम्यो. बे हाथनी अंजलि करीने ते एम बोल्यो

के, हे भगवन् ! तमे मने भलो रीते उपदेश्यो; तमे जेम हतुं तेम अनाथपणुं कही बताव्युं. महर्षि ! तमे सनाथ, तमे सबंधव अने तमे सधर्म छो. तमे सर्व अनाथना नाथ छो. हे पवित्र संयति ! हुं तमने क्षमावुंछुं. तमारी ज्ञानी शिक्षाथी लाभ पाम्यो छुं. धर्मध्यानमां विघ्न करवावाळुं भोग भोगव्वा संबंधीनुं में तमने हे महा भाग्यवंत ! जे आमंत्रण दीधुं ते संबंधीनो मारो अपराध मस्तक नमावीने क्षमावुंछुं. एवा प्रकारथी स्तुति उच्चारीने राजपुरुष केशरी श्रेणिक विनयथी प्रदक्षिणा करी स्वस्थानके गयो.

महा तपोधन, महा मुनि, महा प्रज्ञावंत, महायशवंत, महा निर्ग्रंथ अने महा श्रुत अनाथी मुनिए मगध देशना श्रेणिक राजाने पोताना वितक चरित्रथी जे बोध आप्यो छे, ते खरे ! अशरणभावना सिद्ध करे छे. महा मुनि अनाथीए भोगवेली वेदना जेवी के एथी अति विशेष वेदना अनंत आत्माओने भोगवता जोइए छीए. ए केवुं विचारवा लायक छे ! संसारमां अशरणता अने अनंत अनाथता छवाइ रही छे, तेनो त्याग उत्तम तत्वज्ञान अने परम शीलने सेववाथीज थाय छे. एज मुक्तिनां कारण रुप छे. जेम संसारमां रह्या अनाथी अनाथ हता; तेम प्रत्येक आत्मा तत्वज्ञाननी प्राप्ति विना सदैव अनाथज छे ! सनाथ थवा सद्देव, सद्धर्म अने सद्गुरुने जाणवा अने ओळखवा अवश्यनां छे.

—⁂—

शिक्षापाठ ८ सद्देवतत्व.

त्रण तत्व आपणे अवश्य जाणवां जोइए. ज्यां सुधी ते

तत्व संबंधी अज्ञानता होय छे त्यां सुधी आत्महित नथी. ए त्रण तत्व सद्देव, सद्धर्म अने सद्गुरु छे. आ पाठमां सद्देवनुं स्वरुप संक्षेपमां कहीशुं.

चक्रवर्त्ति—राजाधिराज के राजपुत्र छतां जेओ संसारने एकांत अनंत शोकनुं कारण मानीने तेनो त्याग करेछे. पूर्ण दया, शांति, क्षमा, निरागीत्व अने आत्मसमृद्धिथी त्रिविध तापनो लय करे छे. महा उग्र तपोपध्यानवडे विशोधन करीने जेओ कर्मना समूहने बाळी नाखे छे, अने चंद्र तथा शंखथी अत्यंत उज्वळ एवुं शुक्ल ध्यान जेओने प्राप्त थाय छे. सर्व प्रकारनी निद्रानो जेओ क्षय करेछे. संसारमां मुख्यता भोगवतां ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहिनीय अने अंतराय ए चार कर्म भस्मिभूत करी, जेओ केवल ज्ञान केवल दर्शनसहित स्वस्वरुपथी विहार करे छे. जेओ चार अघाति कर्म रह्या सुधी यथाख्यात चारित्ररुप उत्तम शीलनुं सेवन करे छे.कर्मग्रीष्मथी अकळाता पामर प्राणीओने परम शांति मळवा जेओ शुद्ध बोध बीजनो निष्कारण करुणाथी मेघधारा वाणीवडे उपदेश करे छे. कोइ पण समये किंचित् मात्र पण संसारी वैभवविलासनो स्वप्नांश पण जेने रह्यो नथी. घनघाति कर्मक्षय कर्या पहेलां, पोतानी छद्मस्थता गणी जेओ श्रीमुखवाणीथी उपदेश करता नथी.पांच प्रकारना अंतराय, हास्य, रति, अरति, भय, जुगुप्सा, शोक, मिथ्यात्व, अज्ञान, अप्रत्याख्यान, राग, द्वेष, निद्रा अने काम ए अढार दूषणथी रहित छे, सत्चिदानंद स्वरुपथी विराजमान छे, महा उद्योतकर बार गुणो जेओने प्रगटे छे. जन्म, मरण अने

अनंत संसार जेनो गयो छे तेने, निर्ग्रंथना आगममां सद्देव कह्या छे. ए दोषरहित शुद्ध आत्मस्वरुपने पामेला होवाथी पूजनीय परमेश्वर कहेवा योग्य छे. उपर कह्या ते अढार दोषमांनो एक पण दोष होय त्यां सद्देवनुं स्वरुप घटतुं नथी. आ परम तत्व महत्पुरूषोथी विशेष जाणवुं अवश्यनुं छे.

शिक्षापाठ ९ सद्धर्मतत्व.

अनादि काळथी कर्मजाळनां बंधनथी आ आत्मा संसारमां रखड्या करेछे. समय मात्र पण तेने खरुं सुख नथी. अधोगतिने ए सेव्या करेछे; अने अधोगतिमां पडता आत्माने धरी राखनार–सद्गति आपनार वस्तु तेनुं नाम धर्म कहेवाय छे, अने एज सत्य सुखनो उपाय छे. ते धर्मतत्वना सर्वज्ञ भगवाने भिन्न भिन्न भेद कह्याछे. तेमांना मुख्य बे छे १ व्यवहारधर्म २ निश्चयधर्म.

व्यवहारधर्ममां दया मुख्य छे. सत्यादि बाकीनां चार महाव्रतो तेपण दयानी रक्षा वास्ते छे. दयाना आठ भेदछे. १ द्रव्यदया २ भाव दया ३ स्वदया ४ परदया ५ स्वरुपदया ६ अनुबंधदया ७ व्यवहारदया, ८ निश्चयदया.

प्रथम द्रव्यदया—कोइ पण काम करवुं ते यत्नापूर्वक जीवरक्षा करीने करवुं ते द्रव्यदया.

बीजी भावदया—बीजा जीवने दुर्गति जतो देखीने अनुकंपाबुद्धियी उपदेश आपवो ते भावदया.

त्रीजी स्वदया—आ आत्मा अनादि काळथी मिथ्यात्व-

थी मूंझायोछे, तत्व पामतो नथी, जिनाज्ञा पाळी शकतो नथी. एम चिंतवी धर्ममां प्रवेश करवो ते स्वदया.

चोथी परदया—छकाय जीवनी रक्षा करवी ते परदया.

पांचमी स्वरूपदया—सूक्ष्म विवेकथी स्वरूप-विचारणा ते स्वरूप दया.

छट्ठी अनुबंधदया—सद्गुरु के सुशिक्षक शिष्यने कडवां कथनथी उपदेश आपे ए देखवामां तो अयोग्य लागेछे; परंतु परिणाम करुणानुं कारणछे-एनुं नाम अनुबंधदया.

सातमी व्यवहारदया—उपयोगपूर्वक तथा विधिपूर्वक जे दया पाळवी तेनुं नाम व्यवहारदया.

आठमी निश्चयदया—शुद्ध साध्य उपयोगमां एकता भाव, अने अभेद उपयोग ते निश्चयदया.

ए आठ प्रकारनी दयावडे करीने व्यवहारधर्म भगवाने कह्यो छे. एमां सर्व जीवनुं सुख, संतोष अभयदान ए सघळुं विचारपूर्वक जोतां आवी जायछे.

बीजो निश्चयधर्म—पोतानां स्वरुपनी भ्रमणा टाळवी, आत्माने आत्मभावे ओळखवो, आ संसार ते मारो नथी, हुं एथी भिन्न परमअसंग सिद्धसद्दश शुद्ध आत्मा छुं, एवी आत्मस्वभाववर्त्तना ते निश्चयधर्म छे.

जेमां कोइ प्राणीनुं दुःख, अहित के असंतोष रह्योछे त्यां दया नथी; अने दया नथी त्यां धर्म नथी. अर्हंत भगवाननां कहेलां धर्मतत्त्वथी सर्व प्राणी अभय थायछे.

शिक्षापाठ १० सद्‌गुरुतत्व भाग १.

पिता—पुत्र, तुं जे शाळामां अभ्यास करवा जायछे ते शाळानो शिक्षक कोणछे?

पुत्र—पिताजी, एक विद्वान अने समजु ब्राह्मणछे.

पिता—तेनी वाणी, चालचलगत वगेरे केवांछे?

पुत्र—एनां वचन बहु मधुरां छे. ए कोईने अविवेकथी बोलावता नथी अने बहु गंभीर छे, बोलेछे त्यारे जाणे मुखमांथी फुल झरेछे. कोईनुं अपमान करता नथी; अने अमने योग्य-नीति समजाय तेवी शिक्षा आपे छे.

पिता—तुं त्यां शा कारणे जाय छे ते मने कहे जोईए.

पुत्र—आप एम केम कहोछो पिताजी? संसारमां विचक्षण थवाने माटे पद्धतियो समजुं, व्यवहारनी नीति शीखुं एटला माटे थइने आप मने त्यां मोकलोछो.

पिता—तारा ए शिक्षक दुराचरणी के एवा होततो?

पुत्र—तो तो बहु मांठुं थात; अमने अविवेक अने कुवचन बोलतां आवडत; व्यवहार नीति तो पछी शीखवे पण कोण?

पिता—जो पुत्र, ए उपरथी हुं हवे तने एक उत्तम शिक्षा कहुं. जेम संसारमां पडवा माटे व्यवहारनीति शीखवानुं प्रयो-जन छे. तेम धर्मतत्व अने धर्मनीतिमां प्रवेश करवानुं परभवने माटे प्रयोजन छे. जेम ते व्यवहारनीति सदाचारी शिक्षकथी उत्तम मळी शके छे; तेम परभव श्रेयस्करधर्मनीति उत्तम गुरु-थी मळी शकेछे. व्यवहारनीतिना शिक्षक अने धर्मनीतिना

शिक्षकमां बहु भेद छे. एक पीत्तोरीना कडका जेम व्यवहार शिक्षक अने अमूल्य कौस्तुभ जेम आत्मधर्मशिक्षक छे.

पुत्र—पीरछत्र ! आपनुं कहेवुं व्याजबी छे. धर्मना शिक्षकनी संपूर्ण अवश्य छे. आपे वारंवार संसारनां अनंत दुःख संबंधी मने कह्युं छे; एथी पार पामवा धर्मज सहायभूत छे; त्यारे धर्म केवा गुरुथी पामिये तो श्रेयस्कर नीवडे ते मने कृपा करीने कहो.

—⁂—

शिक्षापाठ ११ सद्गुरुतत्त्व भाग २.

पिता—पुत्र! गुरु त्रण प्रकारना कहेवाय छे. १ काष्टस्वरूप. २ कागळस्वरूप. ३ पथ्थरस्वरूप. काष्टस्वरूप गुरु सर्वोत्तम छे; कारण संसाररूपी समुद्रने काष्टस्वरूपी गुरुज तरे छे—अने तारी शके छे. २ कागळस्वरूप गुरु ए मध्यम छे. ते संसारसमुद्रने पोते तरी शके नहीं; परंतु कंइ पुन्य उपार्जन करी शके. ए बीजाने तारी शके नहीं. ३ पथ्थरस्वरूप ते पोते बुडे अने परने पण बुडाडे. काष्टस्वरूप गुरु मात्र जिनेश्वर भगवंतना शासनमां छे. बाकी बे प्रकारना जे गुरु रह्या ते कर्मावरणने वृद्धि करनार छे. आपणे बधा उत्तम वस्तुने चाहिए छीए; अने उत्तमथी उत्तम मळी शके छे. गुरु जो उत्तम होय तो ते भवसमुद्रमां नाविकरूप थइ सद्धर्मनावमां बेसाडी पार पमाडे. तत्त्वज्ञानना भेद, स्वस्वरूपभेद, लोकालोकविचार, संसारस्वरूप ए सघळुं उत्तम गुरु विना मळी शके नहीं; त्यारे तने प्रश्न करवानी इच्छा थशे के एवा गुरुना लक्षण कया कया ? ते कहुं. जिनेश्वर भ-

गवाननी भाखेली आज्ञा तेने यथातथ्य पाळे, जाणे, अने बीजाने बोधे, कंचन कामिनीथी सर्व भावथी त्यागी होय, विशुद्ध अहारजळ लेता होय, बाविश प्रकारना परिसह सहन करता होय, क्षांत, दांत, निरारंभि अने जितेंद्रिय होय, सिद्धांतिक ज्ञानमां निमग्न होय धर्म माटे थइने मात्र शरीरनो निर्वाह करता होय, निर्गंथ-पंथ पाळता कायर न होय, सळी मात्र पण अदत्त लेता न होय, सर्व प्रकारना अहार रात्रिये त्याग्या होय, समभावि होय, अने निरागताथी सत्योपदेशक होय. टुंकामां तेओनि काष्ट स्वरुप सद्गुरु जाणवा. पुत्र! गुरुना आचार, ज्ञान ए सम्बंधी आगममां बहु विवेक पूर्वक वर्णन कर्युं छे. जेम तुं आगळ विचार करतां शीखतो जइश, तेम पछी हुं तने ए विशेष तत्वो बोधतो जइश.

पुत्र-पिताजी, आपे मने टुंकामां पण बहु उपयोगी अने कल्याणमय कह्युं; हुं निरंतर ते मनन करतो रहीश.

शिक्षापाठ १२ उत्तम गृहस्थ.

संसारमां रह्या छतां पण उत्तम श्रावको गृहाश्रमथी आत्मसाधनने साधेछे; तेओनो गृहाश्रम पण वखणायछे.

ते उत्तम पुरुष, सामायिक, क्षमापना चोविहार प्रत्याख्यान इ० यम नियमने सेवे छे.

पर पत्नि भणी मात बहेननी द्रष्टि राखे छे.

सत्पात्रे यथाशक्ति दान देछे.

शांत, मधुरी अने कोमळ भाषा बोले छे.

सत्शास्त्रनुं मनन करे छे.

बने त्यां सुधी उपजीविकामां पण माया, कपट, इ० करतो नथी.

स्त्री, पुत्र, मात, तात, मुनि अने गुरुए सघळांने यथायोग्य सन्मान आपे छे.

मावापने धर्मनो बोध आपे छे.

यत्नाथी घरनी स्वच्छता, रांधवुं, सींधवुं शयन इ० रखावे छे.

पोते विचक्षणताथी वर्त्ती स्त्री, पुत्रने विनयि अने धर्मि करे छे.

सघळां कुटुंबमां संपनी वृद्धि करे छे.

आवेला अतिथिनुं यथायोग्य सन्मान करे छे.

याचकने क्षुधातुर राखतो नथी.

सत्पुरुषोनो समागम अने तेओनो बोध धारण करे छे.

समर्याद अने संतोष युक्त निरंतर वर्त्ते छे.

यथाशक्ति शास्त्रसंचय जेनां घरमां रह्यो छे.

अल्प आरंभथी जे व्यवहार चलावे छे.

आवो गृहस्थावास उत्तम गतिनु कारण थाय, एम ज्ञानीओ कहे छे.

शिक्षापाठ १३ जिनेश्वरनी भक्ति भाग १.

जिज्ञासु—विचक्षण सत्य ! कोइ शंकरनी, कोइ ब्रह्मानी

कोई विष्णुनी, कोई अग्निनी, कोई भवानीनी, कोई पेगम्बरनी अने कोई क्राइस्टनी भक्ति करेछे. एओ भक्ति करीने शुं आशा राखता हशे?

सत्य—प्रिय जिज्ञासु, ते भाविक मोक्ष मेळववानी परम आशाथी ए देवोने भजेछे.

जिज्ञासु—कहो त्यारे, एथी तेओ उत्तम गति पामे एम तमारुं मत छे?

सत्य—एओनी भक्तिवडे तेओ मोक्ष पामे एम हुं कही शकतो नथी. जेओने ते परमेश्वर कहेछे तेओ कंई मोक्षने पाम्या नथी; तो पछी उपासकने ए मोक्ष क्यांथी आपे? शंकर वगेरे कर्मक्षय करी शक्या नथी अने दूषणसहीत छे. एथी ते पूजवा योग्य नथी.

जिज्ञासु—ए दूषणो कयां कयां ते कहो?

सत्य—अज्ञान, निद्रा, मिथ्यात्व, राग, द्वेष, अविरति, भय, शोक, जुगुप्सा दानांतराय, लाभांतराय, वीर्यांतराय अने उपभोगांतराय, काम, हास्य, रति, अने अरति ए अढार दूषणमांनुं एक दूषण होय तोपण ते अपूज्य छे. एक समर्थ पंडिते पण कह्युं छे के परमेश्वर छउं एम मिथ्या रीते मनावनारा पुरुषो पोते पोताने ठगे छे कारण, पडखामां स्त्री होवाथी तेओ विषयी ठरे; शस्त्र धारण करेलां होवाथी द्वेषी ठरेछे. जपमाळा धारण करवाथी तेओनुं चित्त व्यग्र छे एम सूचवे छे मारे शरण आव, हुं सर्व पाप हरी लउं एम कहेनारा अभिमानी अने नास्तिक ठरेछे आम छे तो पछी बीजाने तेओ

केम तारी शके? वळी केटलाक अवतार लेवारुपे परमेश्वर कहेवराये छे तो त्यां तेओने अमुक कर्मनुं भोगववु बाकी छे एम सिद्ध थाय छे.

जिज्ञासु—भाई, त्यारे पूज्य कोण? अने भक्ति कोनी करवी के जेवडे आत्मा स्वशक्तिनो प्रकाश करे.

सत्य—शुद्ध सच्चिदानंदस्वरुप जीवन सिद्ध भगवाननी भक्तिथी तेमज सर्व दूषणरहित, कर्ममलहीन, मुक्त वीतराग सकळभय रहित, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी जिनेश्वर भगवाननी भक्ति-थी आत्मशक्ति प्रकाश पामे छे.

जिज्ञासु—एओनी भक्ति करवाथी आपणने तेओ मोक्ष आपे छे एम मानवुं खरुं?

सत्य—भाइ जिज्ञासु, ते अनंतज्ञानी भगवान तो निरागी अने निर्विकार छे. एने स्तुति निंदानुं आपणने कंइ फल आ-पवानुं प्रयोजन नथी. आपणो आत्मा अज्ञानी अने मोहांध थइने जे कर्मदलथी घेरायलो छे ते कर्मदल टाळवा अनुपम पुरुषार्थनी अवश्य छे. सर्व कर्मदल क्षय करी अनंतज्ञान, अनंत दर्शन, अनंतचारित्र, अनंतवीर्य, अने स्वस्वरूपमय थया एवा जिनेश्वरोनुं स्वरूप—आत्मानी निश्चयनये रीद्धि होवाथी ते भगवाननुं स्मरण, चिंतवन, ध्यान अने भक्ति पुरुषार्थता आपे छे विकारथी आत्मा विरक्त थाय छे शांति अने निर्जरा आवे छे. जेम तरवार हाथमां लेवाथी शौर्यवृत्ति अने भांग पीवाथी निशो उत्पन्न थाय छे तेम ए गुणचिंतवनथी आत्मा स्वस्वरू-पानंदनी श्रेणिए चडतो जाय छे. दर्पण जोतां जेम मुखाकृतिनुं

भान थाय छे तेम सिद्ध के जिनेश्वरस्वरूपनां चिंतवनरूप दर्पणथी आत्मस्वरूपनुं भान थाय छे.

शिक्षापाठ १४ जिनेश्वरनी भक्तिभाग २.

जिज्ञासु—आर्य सत्य ! सिद्धस्वरूप पामेला ते जिनेश्वरो तो सघळा पूज्य छे; त्यारे नामथी भक्ति करवानी कंइ जरुर छे !

सत्य—हा, अवश्य छे. अनंत सिद्धस्वरूपने ध्यातां जे शुद्ध स्वरूपना विचार थाय ते तो कार्य परंतु ए जे जेथी ते स्वरूपने पाम्या ते कारण कयुं ! ए विचारतां उग्रतप, महानवैराग्य, अनंतदया, महानध्यान ए सघळांनुं स्मरण थशे; एओनां अर्हंत तीर्थंकर पदमां जे नामथी तेओ विहार करता हता ते नामथी तेओना पवित्र आचार अने पवित्र चरित्रो अंतःकरणमां उदय पामशे. जे उदय परिणामे महा लाभदायक छे. जेम महावीरनुं पवित्र नाम स्मरण करवाथी तेओ कोण ! क्यारे ! केवा प्रकारे सिद्धि पाम्या ! ए आदि चरित्रोनी स्मृति थशे.. अने, एथी आपणे वैराग्य, विवेक इत्यादिकनो उदय पामीए.

जिज्ञासु—पण लोगस्समां तो चोवीश जिनेश्वरनां नामनुं सूचवन कर्युं ? एनो हेतु शुं छे ते मने समजावो.

सत्य—आ काळमां आ क्षेत्रमां जे चोवीश जिनेश्वरो थया एमनां नामनुं अने चरित्रनुं स्मरण करवाथी शुद्ध तत्त्वनो लाभ थाय वैरागीनुं चरित्र वैराग्य बोधे छे. अनंत चोवीशीनां अनंत नाम सिद्धस्वरूपमां समग्र आवी जाय छे. वर्तमानकाळ-

ना चोवीश तीर्थंकरनां नाम आ काळे लेवाथी काळनी स्थिति-नुं बहु सूक्ष्मज्ञान पण सांभरी आवेछे. जेम एओनां नाम आ काळमां लेवायछे. तेम चोवीशी चोवीशीनां नाम काळ अने चोवीशी फरतां लेवातां जायछे. एटले अमुक नाम लेवां एम कंइ हेतु नथी. परंतु तेओना गुण अने पुरुषार्थ स्मृति माटे वर्त्तती चोवीशीनी स्मृति करवी एम तत्त्व रह्युं छे. तेओना जन्म, विहार उपदेश ए सघळुं नाम निक्षेपे जाणी शकायछे. ए वडे आपणो आत्मा प्रकाश पामेछे. सर्प जेम मोरलीना नादथी जागृत थायछे; तेम आत्मा पोतानी सत्य रीद्धि सांभळतां ते मोहनिद्राथी जागृत थाय छे.

जिज्ञासु—मने तमे जिनेश्वरनी भक्ति संबंधी बहु उत्तम कारण कह्युं. आधुनिक केळवणीथी जिनेश्वरनी भक्ति कंइ फळदायक नथी एम मने आस्था थइ हती. ते नाश पामी छे. जिनेश्वर भगवाननी अवस्य भक्ति करवी जोइए ए हुं मान्य राखुं छउं.

सत्य—जिनेश्वर भगवाननी भक्तिथी अनुपम लाभ छे, एना कारणो महान छे; तेमना परम उपकारनेलीधे पण तेओनी भक्ति अवश्य करवी जोईए. वळी तेओना पुरुषार्थनुं स्मरण थतां पण शुभ वृत्तियोनो उदय थायछे. जेम जेम श्री जिननां स्वरूपमां वृत्ति लय पामेछे तेम तेम परम शांति प्रवहेछे. एम जिनभक्तिनां कारणो अत्रे संक्षेपमा कह्यांछे ते आत्मार्थियोए विशेषपणे मनन करवां योग्य छे.

—:o:—

शिक्षापाठ १९ भक्तिनो उपदेश.

तोटकछंद.

शुभ शीतळतामय छांय रही,
मनवांछित ज्यां फळपंक्ति कही;
जिन भक्ति ग्रहो तरु कल्प अहो,
भजीने भगवंत भवंत लहो.
निज आत्मस्वरूप मुदा प्रगटे,
मन ताप उताप तमाम मटे;
अति निर्जरता वण दाम ग्रहो,
भजीने भगवंत भवंत लहो.
समभावि सदा परिणाम थशे,
जडमंद अधोगति जन्म जशे;
शुभ मंगळ आ परिपूर्ण चहो,
भजीने भगवंत भवंत लहो.
शुभ भाववडे मन शुद्ध करो,
नवकार महा पदने समरो;
नहि एह समान सुमंत्र कहो,
भजीने भगवंत भवंत लहो.
करशो क्षय केवळ राग कथा,
धरशो शुभ तत्त्वस्वरूप यथा;
नृपचंद्र प्रपंच अनंत दहो,
भजीने भगवंत भवंत लहो.

शिक्षापाठ १६ खरी महत्ता.

केटलाक लक्ष्मीथी करीने महत्ता मळे छे एम मानेछे; केटलाक महान कुटुंबथी महत्ता मळे छे एम माने छे; केटलाक पुत्र वडे करीने महत्ता मळे छे एम माने छे; केटलाक अधिकारथी महत्ता मळे छे एम माने छे. पण ए एमनुं मानवुं विवेकथी जोतां मिथ्या छे. एओ जेमां महत्ता ठरावे छे तेमां महत्ता नथी, पण लघुता छे; लक्ष्मीथी संसारमां खानपान मान, अनुचरोपर आज्ञा वैभव ए सघळुं मळे छे अने ए महत्ता छे, एम तमे मानता हशो, पण एटलेथी एने महत्ता मानवी जोइती नथी. लक्ष्मी अनेक पाप वडे करीने पेदा थाय छे. आव्या पछी अभिमान, बेभानता, अने मूढता आपे छे. कुटुंबसमुदायनी महत्ता मेळववा माटे तेनुं पालण पोषण करवुं पडे छे. ते वडे पाप अने दुःख सहन करवां पडे छे. आपणे उपाधिथी पाप करी एनुं उदर भरवुं पडे छे. पुत्रथी कंइ शाश्वत नाम रहेतुं नथी; एने माटे पण अनेक प्रकारनां पाप अने उपाधि वेठवी पडे छे; छतां एथी आपणुं मंगळ-शुं थाय छे? अधिकारथी परतंत्रता के अमलमद आवे छे अने एथी जुलम, अनीति, लांच तेमज अन्याय करवा पडे छे;—के थाय छे. कहो त्यारे एमांथी महत्ता शानी थाय छे? मात्र पापजन्य कर्मनी पापी कर्मवडे करी आत्मानी नीच गति थाय छे; नीच गति छे त्यां महत्ता नथी पण लघुता छे.

आत्मानी महत्ता तो सत्यवचन, दया, क्षमा, परोपकार अने समतामां रही छे. लक्ष्मी इ० ए तो कर्मनहत्ता छे. एम

शिक्षापाठ १५ भक्तिनो उप

तोटकछंद.

शुभ शीतळतामय छांय रही,
मनवांछित ज्यां फळपंक्ति कही;
जिन भक्ति ग्रहो तरु-कल्प अहो,
भजिने भगवंत भवंत लहो.
निज आत्मस्वरुप मुदा प्रगटे,
मन ताप उताप तमाम मटे;
अति निर्जरता वण दाम ग्रहो,
भजिने भगवंत भवंत लहो.
समभावि सदा परिणाम थशे,
जडमंद अधोगति जन्म जशे;
शुभ मंगळ आ परिपूर्ण चहो,
भजिने भगवंत भवंत लहो.
शुभ भाववडे मन शुद्ध करो,
नवकार महा पदने समरो;
नहि एह समान सुमंत्र कहो,
भजिने भगवंत भवंत लहो.
करशो क्षय केवळ राग कथा,
धरशो शुभ तत्त्वस्वरुप यथा;
नृपचंद्र प्रपंच अनंत दहो,
भजिने भगवंत भवंत लहो.

भ थ।
अनन नाम ।

शिक्षापाठ १६ खरी महत्ता.

केटलाक लक्ष्मीथी करीने महत्ता मळे छे एम माने छे; केटलाक महान कुटुंबथी महत्ता मळे छे एम माने छे; केटलाक पुत्र वडे करीने महत्ता मळे छे एम माने छे; केटलाक अधिकारथी महत्ता मळे छे एम माने छे. पण ए एमनुं मानवुं विवेकथी जोतां मिथ्या छे. एओ जेमां महत्ता ठरावे छे तेमां महत्ता नथी, पण लघुता छे; लक्ष्मीथी संसारमां खानपान मान, अनुचरोपर आज्ञा वैभव ए सघळुं मळे छे अने ए महत्ता छे, एम तमे मानता हशो, पण एटलेथी एने महत्ता मानवी जोइती नथी. लक्ष्मी अनेक पाप वडे करीने पेदा थाय छे. आव्या पछी अभिमान, बेभानता, अने मूढता आपे छे. कुटुंबसमुदायनी महत्ता मेळववा माटे तेनुं पालण पोषण करवुं पडे छे. ते वडे पाप अने दुःख सहन करवां पडे छे. आपणे उपाधिथी पाप करी एनुं उदर भरवुं पडे छे. पुत्रथी कंइ शाश्वत नाम रहेतुं नथी; एने माटे पण अनेक प्रकारनां पाप अने उपाधि वेठवी पडे छे; छतां एथी आपणुं मंगळ शुं थाय छे? अधिकारथी परतंत्रता के अमलमद आवे छे अने एथी जुलम, अनीति, लांच तेमज अन्याय करवा पडे छे;—के थाय छे. कहो त्यारे एमांथी महत्ता शानी थाय छे? मात्र पापजन्य कर्मथी पापी कर्मवडे करी आत्मानी नीच गति थाय छे; नीच गति छे त्यां महत्ता नथी पण लघुता छे.

आत्मानी महत्ता तो सत्यवचन, दया, क्षमा, परोपकार अने समतामां रही [illegible] छे. [illegible]

छतां लक्ष्मीथी घणा पुरुषो दान दे छे, उत्तम विद्याशाळाओ स्थापी परदुःखभंजन थाय छे. एक परणेली स्त्रीमांज मात्र वृत्ति रोकी परस्त्री तरफ पुत्रिभावथी जुए छे. कुटुंब वडे करीने अमुक समुदायनुं हित काम करे छे. पुत्र वडे तेने संसारनो भार आपी पोते धर्ममार्गमां प्रवेश करे छे. अधिकारथी डहापण वडे आचरण करी राजा प्रजा बन्नेनुं हित करी—धर्मनीतिनो प्रकाश करे छे, एम करवाथी केटलीक महत्ता पमाय खरी छतां ए महत्ता चोकस नथी. मरणभय माथे रह्यो छे. धारणा धरी रहे छे. योजेली योजना के विवेक वखते हृदयमांथी जतो रहे एवी संसारमोहिनीय छे. एथी आपणे एम निस्संशय समजवुं के सत्यवचन, दया, क्षमा, ब्रह्मचर्य अने समता जेवी आत्ममहत्ता कोइ स्थळे नथी. शुद्ध पंचमहाव्रतधारि भिक्षुके जे रीद्धि अने महत्ता मेळवी छे ते ब्रह्मदत्त जेवा चक्रवर्तिए लक्ष्मी, कुटुंब, पुत्र के अधिकारथी मेळवी नथी एम मारुं मानवुं छे!

शिक्षापाठ १७ बाहुबळ.

बाहुबळ एटले पोतानी भुजानुं बळ एम अहीं अर्थ करवानो नथी, कारण के बाहुबळ नामना महापुरुषनुं आ एक नानुं पण अद्भुत चरित्र छे.

सर्व संग परित्याग करी, ऋषभदेवजी भगवान भरत अने बाहुबळ नामना पोताना बे पुत्रोने राज्य सोंपी विहार करता हता त्यारे भरतेश्वर चक्रवर्ति थयो. आयुधशाळामां चक्रनी उत्पत्ति थया पछी प्रत्येक राज्यपर तेणे पोतानी आम्नाय बेसाडी, अने छ खंडनी प्रभुता मेळवी. मात्र बाहु-

लेज ए प्रभुता अंगीकार न करी. एथी परिणाममां भरतेश्वर अने बाहुबळने युद्ध मंडायुं. घणा वखत सुधी भरतेश्वर के बाहुबळ ए बन्नेमांथी एके हठ्या नहीं, त्यारे क्रोधावेशमां आवी जइ भरतेश्वरे बाहुबळपर चक्र मूक्युं. पण एक वीर्यथी उत्पन्न थयेला भाइपर पण ते चक्र प्रभाव न करी शके, ए नियमथी फरीने पाछुं भरतेश्वरना हाथमां आव्युं. भरते चक्र मूकवाथी बाहुबळने बहु क्रोध आव्यो. तेणे महा बळवतर मुष्टि उपाडी. तत्काळ त्यां तेनी भावनानुं स्वरुप फर्युं. ते विचारी गयो के हुं आ बहु निंदनिय करुं छउं; आनुं परिणाम केवुं दुःखदायक छ! भले भरतेश्वर राज्य भोगवो. मिथ्या परस्परनो नाश शा माटे करवो? आ मुष्टि मारवी योग्य नथी; तेम उगामी ते हवे पाछी वाळवी पण योग्य नथी. एम विचारी तेणे पंच मुष्टि केश लुंचन कर्युं; अने त्यांथी मुनिभावे चाली नीकळ्या. भगवान आदीश्वर ज्यां अठाणु दिक्षित पुत्रोथी तेमज आर्य--आर्याथी विहार करता हता त्यां जवा इच्छा करी; पण मनमां मान आव्युं के त्यां हुं जइशनो माराथी नाना अठाणु भाइने वंदन करवुं पडशे. माटे त्यां तो जवुं योग्य नथी. एम मानवृत्तियी वनमां ते एकाग्र ध्याने रह्या. हळवे हळवे बार मास थइ गया. महातपथी काया हाडकानो माळो थइ गइ; ते सूका झाड जेवा देखावा लाग्या; परंतु ज्यांसुधी माननो अंकुर तेना अंतःकरणथी खस्यो नहोतो त्यांसुधी ते सिद्धि न पाम्या. ब्राह्मी अने सुंदरीए आवीने तेने उपदेश कर्यो: आर्य वीर! हवे मदोन्मत्त हाथी परथी उतरो. एनाथी तो बहु [illegible]. एओना आ वचनो-

थी बाहुबळ विचारमां पड्या. विचारतां विचारतां तेने भान थयुं के सत्यछे—हुं मानरुपी मदोन्मत्त हाथीपरथी हजु क्यां उतर्यो छउं ? हवे एथी उतरवुं एज मंगळकारकछे; एम विचारी तेणे वंदन करवाने माटे पगलुं भर्युं के ते अनुपम दिव्य कैवल्य कमळाने पाम्या.

वांचनार, जुओ मान ए केवी दुरित वस्तु छे ! !

शिक्षापाठ १८ चारगति.

संसारवनमां शुभाशुभ जीव साताबेदनीय, असाताबेदनीय वेदतो कर्मनां फळ भोगववा आ चारगतिमां भम्या करे छे; तो ए चारगति खचीत जाणवी जोइए.

१ नर्कगति—महारंभ, मदीरापान, मांस भक्षण, इत्यादिक तीव्र हिंसाना करनार जीवो अघोर नर्कमां पडे छे. त्यां लेश पण साता, विश्राम के सुख नथी. महा अंधकार व्याप्त छे. अंगछेदन सहन करवुं पडेछे. अग्निमां बळवुं पडेछे अने छरपलानी धार जेवुं जळ पीवुं पडेछे. अनंत दुःखथी करीने ज्यां प्राणीयुने सांकर, असाता अने विलविलाट सहन करवा पडे छे. आवा जे दुःखने केवलज्ञानीओ पण कही शकता नथी. अहोहो ! ! ते दुःख अनंतिवार आ आत्माए भोगव्यांछे.

२ तिर्यंचगति—छल, जूठ प्रपंच इत्यादिक करीने जीव सिंह, वाघ, हाथी, मृग, गाय, भेंस, बळद इत्यादिक तिर्यंचना शरीर धारण करेछे ते तिर्यंचगतिमा भूख, तरश, ताप, वध बंधन, ताडन, भारवहन इत्यादिना दुःखने सहन करे छे,

३ मनुष्यगति—खाद्य, अखाद्य, विषे विवेकरहितछे; लज्जाहीन, माता पुत्री साथे काम गमन करवामां जेने पापापापनुं भान नथी; निरंतर मांसभक्षण, चोरी, परस्त्रीगमन वगेरे महा पातक कर्या करेछे. एतो जाणे अनार्यदेशनां अनार्य मनुष्य छे. आर्यदेशमां पण क्षत्रि, ब्राह्मण, वैश्य प्रमुख मतिहीन, दरिद्रि, अज्ञान अने रोगथी पीडित मनुष्योछे. मान, अपमान इत्यादि अनेक प्रकारनां दुःख तेओ भोगवी रह्यां छे.

४ देवगति--परस्पर वेर, झेर, क्लेश, शोक, मत्सर, काम, मद, क्षुधा आदिथी देवताओ पण आयुष्य व्यतित करी रह्याछे; ए देवगति. एम चारगति सामान्यरूपे कही आ चारे गतिमां मनुष्यगति सौथी श्रेष्ट अने दुर्लभ छे, आत्मानुं परमहित मोक्ष ए हेतुथी पमाय छे; ए मनुष्यगतिमां पण केटलाक दुःख अने आत्मसाधनमां अंतरायो छे.

एक तरुण सुकुमारने रोमे रोमे लालचोळ सुया घोंचवाथी जे असह्य वेदना उपजेछे; ते करतां आठगुणी वेदना गर्भस्थानमां जीव ज्यारे रहेछे त्यारे पामेछे. लगभग नवमहीना मळ, मूत्र, लोही, परु आदिमां अहोरात्र मुर्छागत स्थितिमां वेदना भोगवी भोगवीने जन्म पामे छे. गर्भस्थाननी वेदनाथी अनंतगुणी वेदना जन्मसमये उत्पन्न थाय छे. त्यार पछी बाळावस्था पमाय छे. मळमूत्र धूळ अने नग्नावस्थामां अणसमजथी रडी रखडीने ते बाळावस्था पूर्ण थायछे; अने युवावस्था आवेछे. धन उपार्जन करवा माटे नाना प्रकारना पापमां पडवुं पडेछे. ज्यांथी उत्पन्न थयोछे त्यां एटले विषय विकारमां वृत्ति जायछे.

सपाट देखाव छे तेम संसारपण सरळ देखाव देछे. समुद्र जेम क्यांक बहु उंडो छे, अने क्यांक भमरीओ खवरावेछे तेम संसार काम विषय प्रपंचादिकमां बहु उंडोछे. ते मोहरुपी भमरीओ खवरावे छे. थोडुं जळ छतां समुद्रमां जेम उभा रहेवाथी कादवमां गुंची जइए छीए तेम संसारना लेश प्रसंगमां ते तृष्णारुपी कादवमां गुंचवी देछे. समुद्र जेम नाना प्रकारना खरावा अने तोफानथी नाव के वहाणने जोखम पहोंचाडे छे. तेम स्त्रीयोरुपी खरावा अने कामरुपी तोफानथी संसार आत्माने जोखम पहोंचाडे छे. समुद्र जेम अगाध जळथी शीतळ देखातो छतां वडवानळ नामना अग्निनो तेमां वास छे तेम संसारमां मायारुपी अग्नि बळ्याज करेछे. समुद्र जेम चोमासामां वधारे जळ पामीने उंडो उतरेछे तेम पापरुपी जळ पामीने संसार उंडो उतरे छे, एटले मजबुत पाया करतो जाय छे.

२ संसारने बीजी उपमा अग्निनी छाजे छे. अग्निथी कर्मीने जेम महातापनी उत्पत्ति छे. एम संसारथी पण त्रिविध तापनी उत्पत्ति छे. अग्निथी बळेलो जीव जेम महा विलविलाट करेछे. तेम संसारथी बळेलो जीव अनंत दुःखरुप नर्कथी असह्य विलविलाट करेछे. अग्नि जेम सर्व वस्तुनो भस्म करी जायछे, तेम संसारना मुखमां पडेलांनो ते भस्म करी जायछे. अग्निमां जेम जेम घी अने इंधन होमाय छे तेम तेम ते वृद्धि पामे छे, तेवीज रीते संसाररुप अग्निमां तीव्र मोहिनीरुप घी अने विषयरुप इंधन होमातां ते वृद्धि पामे छे.

३ संसारने त्रीजी उपमा अंधकारनी छाजे छे अंधका-

रमां जेम सींदरी, सर्पनुं भान करावे छे तेम संसार सत्यने असत्यरूप बतावे छे; अंधकारमां जेम प्राणीओ आम तेम भटकी विपत्ति भोगवे छे तेम संसारमां बेभान थइने अनंत आत्माओ चतुर्गतिमां आम तेम भटके छे. अंधकारमां जेम काच अने हीरानुं ज्ञान थतुं नथी तेम संसाररूपी अंधकारमां विवेक अविवेकनुं ज्ञान थतुं नथी. जेम अंधकारमां प्राणीओ छती आंखे अंध बनी जाय छे तेम छती शक्तिए संसारमां तेओ मोहांध बनी जाय छे अंधकारमां जेम घुवड इत्यादिकनो उपद्रव वधे छे तेम संसारमां लोभ, मायादिकनो उपद्रव वधे छे. एम अनेक भेदे जोतां संसार ते अंधकाररूप जणाय छे.

शिक्षापाठ २० संसारने चार उपमा भाग २.

४ संसारने चोथी उपमा शकटचक्रनी एटले गाडाना पैडांनी छाजे छे चालतां, शकटचक्र जेम फरतुं रहे छे तेम संसारमां प्रवेश करतां ते फरतो रहे छे शकटचक्र जेम धरी विना चाली शकतुं नथी तेम संसार मिथ्यात्वरूपी धरी विना चाली शकतो नथी. शकटचक्र जेम आरावडे करीने रह्युं छे तेम संसार शंका प्रमादादिक आराथी टक्यो छे. एम अनेक प्रकारथी शकटचक्रनी उपमा पण संसारने लागी शके छे.

एवी रीते संसारने जेटली अधोउपमा आपो एटली थोडी छे. मुख्यत्वे ए चार उपमा आपणे जाणी ए पदार्थो तत्त्व लेवुं योग्य छे.

१ सागर जेम मजबुत नाव अने माहितगार नाविकथी तरीने पार पमाय छे तेम सद्धर्मरूपी नाव अने सद्गुरुरूपी नाविकथी संसारसागर पार पामी शकाय छे. सागरमां जेम डाह्या पुरुषोए निर्विघ्न रस्तो शोधी काढ्यो होय छे तेम जिनेश्वर भगवाने तत्वज्ञानरूप निर्विघ्न उत्तम राह बताव्यो छे.

२ अग्नि जेम सर्वने भस्म करी जाय छे, परंतु पाणीथी बुझाइ जाय छे तेम वैराग्यजळथी संसारअग्नि बुझवी शकाय छे.

३ अंधकारमां जेम दीवो लइ जवाथी प्रकाश थतां, जोइ शकाय छे; तेम तत्वज्ञान रूपी निर्बुज दीवो संसाररूपी अंधकारमां प्रकाश करी सत्य वस्तु बतावे छे.

४ शकटचक्र जेम बळदविना चाली शकतुं नथी तेम संसारचक्र राग, द्वेषविना चाली शकतुं नथी.

एम ए संसारदरदनुं निवारण उपमावडे अनुपानादि प्रतिकार साथे कह्युं. ते आत्महितैषिए निरंतर मनन करवुं; अने बीजाने बोधवुं.

शिक्षापाठ २१ बार भावना.

वैराग्यनी, अने एवा आत्महितैषि विषयोनी सुदृढता थवा माटे बार भावना चिंतववानुं तत्वज्ञानीओ कहे छे.

१ शरीर, वैभव, लक्ष्मी कुटुंब परिवारादिक सर्व विनाशी छे; जीवनो मूळ धर्म अविनाशी छे; एम चिंतववुं ते पहेली अनित्यभावना.

२ संसारमां मरण समये जीवने शरण राखनार कोई

नथी, मात्र एक शुभ धर्मनुंज शरण सत्यछे; एम चिंतववुं ते बीजी अशरण भावना

३ आ आत्माए संसारसमुद्रमां पर्यटन करतां करतां सर्व भव कीधाछे, ए संसारजंजीरथी हुं क्यारे छुटीश? ए संसार मारो नथी, हु मोक्षमयि छु; एम चिंतववुं ते त्रीजी संसार भावना.

४ आ मारो आत्मा एकलोछे; ते एकलो आव्योछे, एकलो जशे; पोताना करेला कर्म एकलो भोगवशे एम चिंतववुं ते चोथी एकत्वभावना.

५ आ संसारमां कोई कोइनुं नथी एम चिंतववुं ते पांचमी अन्यत्वभावना.

६ आ शरीर अपवित्र छे, मळमुत्रनी खाण छे, रोग जराने रहेवानुं धाम छे, ए शरीरथी हुं न्यारो छउं एम चिंतववुं ते छठ्ठी अशुचिभावना

७ राग, द्वेष, अज्ञान, मिथ्यात्व ईत्यादिक सर्व आश्रवछे एम चिंतववुं ते सातमी आश्रवभावना.

८ ज्ञान, ध्यानमां जीव प्रवर्त्तमान थईने नवां कर्म बांधे नहीं एवी चिंतवना करवी ते आठमी सम्वरभावना.

९ ज्ञानसहित क्रिया करवी ते निर्जरानुं कारण छे एम चिंतवधुं ते नवमी निर्जराभावना.

१० लोकस्वरुपनुं उत्पत्ति, स्थिति, विनाशस्वरुप विचारवुं ते दशमी लोकस्वरुपभावना.

११ संसारमां भमता आत्माने सम्यक्ज्ञाननी प्रासादी प्राप्त थवी दुर्लभ छे; वा सम्यक्ज्ञान पाम्यो तो चारित्र सर्व

विरति परिणामरूप धर्म पामवो दुर्लभ छे. एवी चिंतवना ते अग्यारमी बोधदुर्लभभावना.

१२ धर्मना उपदेशक तथा शुद्ध शास्त्रना बोधक एवा गुरु अने एनुं श्रवण मळवुं दुर्लभ छे एवी चिंतवना ते बारमी धर्मदुर्लभभावना.

आ बार भावनाओ मननपूर्वक निरंतर विचारवाथी सत्पुरुषो उत्तम पदने पाम्या छे-पामे छे--अने पामशे.

शिक्षापाठ २२ कामदेव श्रावक.

महावीर भगवानना समयमां द्वादशव्रतने विमळ भावथी धारण करनार, विवेकी अने निर्ग्रंथवचनानुरक्त कामदेव नामना एक श्रावक तेओना शिष्य हता. सुधर्मा सभामां इंद्रे एक वेळा कामदेवनी धर्मअचळतानी प्रशंसा करी. एवामां त्यां एक तुच्छ बुद्धिवान देव बेठो हतो तेणे एवी सुदृढतानो अविश्वास दर्शाव्यो अने कह्युं के ज्यांसुधी परिषह पड्या न होय त्यांसुधी बधाय सहनशील अने धर्मदृढ जणाय. आ मारी वात हुं एने चळावी आपीने सत्य करी देखाडुं. धर्मदृढ कामदेव ते वेळा कायोत्सर्गमां लीन हता. देवताए प्रथम हाथीनुं रूप वैक्रिय कर्युं; अने पछी कामदेवने खूब गूंद्या तोपण ते अचळ रह्या. पछी मुशळ जेवुं अंग करीने काळावर्णनो सर्प थइने भयंकर फुंकार कर्या. तोपण कामदेव कायोत्सर्गथी लेश चळ्या नहि; पछी अट्टहास्य करता राक्षसनो देह धारण करीने अनेक प्रकारना परिषह कर्या. तोपण कामदेव कायोत्सर्ग[illegible] चळ्या न[illegible] अनेक [illegible] [illegible] [illegible] नहीं. [illegible]

चारे पहोर देवताए कर्या कर्युं; पण ते पोतानी धारणामां फा-व्यो नहीं. पछी ते देवे अवधिज्ञानना उपयोगवडे जोयुं तो कामदेवने मेरुना शिखरनी पेरे अडोळ रह्या दीठा. कामदेवनी अद्‌भुत निश्चलता जाणी तेने विनयभावथी प्रणाम करी पोतानो दोष क्षमावीने ते देवता स्वस्थानके गयो.

कामदेव श्रावकनी धर्मदृढता एवो बोध करेछे के सत्यधर्म अने सत्यप्रतिज्ञामां परम दृढ रहेवुं; अने कायोत्सर्ग आदि जेम बने तेम एकाग्र चित्तथी अने सुदृढतायी निर्दोष करवां. चळ-विचळ भावथी कायोत्सर्गादि बहु दोषयुक्त थायछे. पाई जेवा द्रव्यलाभ माटे धर्मशास्त्र काढनाराथी धर्ममां दृढता क्यांथी रही शके ? अने रही शकेतो केवी रहे ! ए विचारतां खेद थायछे.

—:०:—

शिक्षापाठ २३ सत्य.

सामान्य कथनमां पण कहेवायछे के सत्य ए आ जगत्‌नुं धारण छे. अथवा सत्यने आधारे आ जगत् रह्युंछे. ए कथन-मांथी एवी शिक्षा मळेछे के धर्म, नीति, राज, अने व्यवहार ए सत्यवडे प्रवर्तन करी रह्यां छे अने ए चारे नहोय तो ज-गतनुं रूप केवुं भयंकर होय ! ए माटे सत्य ए जगत्‌नुं धारण छे एम कहेवुं ए कंइ अतिशयोक्ति जेवुं के नहीं मानवा जेवुं नथी.

वसुराजानुं एक शब्दनुं असत्य बोलवुं केटलुं दुःखदायक थयुं हतुं ते तत्त्व विचार करवा माटे अहीं कहीशुं.

वसुराजा, नारद अने पर्वत ए त्रण एक गुरु पासेथी वि-

पासे भणता हता. पर्वत अध्यापकनो पुत्र हतो; अध्यापके काळ
कर्यो. एथी पर्वत तेनी मा सहित वसुराजाना दरबारमां आवी
रह्यो हतो. एक रात्रे तेनी मा पासे बेठी छे; अने पर्वत तथा
नारद शास्त्राभ्यास करेछे. एमां एक वचन पर्वत एवुं बोल्यो
के 'अजाहोतव्यं.' त्यारे नारदे पूछ्युं अज ते शुं पर्वत? पर्वते
कह्युं, 'अज' ते 'बोकडो.' नारद बोल्यो, आपणे त्रणे जण
तारा पिता कने भणता हता त्यारे तारा पिताए तो 'अज' ते त्रण
वर्षनी 'व्रीहि' कही छे; अने तुं अवळुं शा माटे कहेछे? एम पर-
स्पर वचनविवाद वध्यो. त्यारे पर्वते कह्युं, आपणने वसुराजा
कहे ते खरुं. ए वातनी नारदे हा कही; अने जीते तेने माटे
अमुक शरत करी. पर्वतनी मा जे पासे बेठी हती तेणे आ
सांभळ्युं. 'अज' एटले 'व्रीहि' एम तेने पण याद हतुं: शरत-
मां पोतानो पुत्र हारशे एवा भयथी पर्वतनी मा रात्रे राजा
पासे गई अने पूछ्युं, राजा, 'अज' एटले शुं? वसुराजाए संबं-
धपूर्वक कह्युं. 'अज' एटले 'व्रीहि.' त्यारे पर्वतनी माए रा-
जाने कह्युं मारा पुत्रथी 'बोकडो' कहेवायो छे माटे, तेनो पक्ष
करवो पडशे; तमने पूछवा माटे तेओ आवशे. वसुराजा बोल्योः
हुं असत्य केम कहुं? माराथी ए बनी शके नहीं. पर्वतनी माए
कह्युं, पण जो तमे मारा पुत्रनो पक्ष नहीं करो तो तमने हुं ह-
त्या आपीश. राजा विचारमां पडी गयो के सत्यवडे करीने हुं
मणिमय सिंहासनपर अद्धर बेसुं छउं. लोकसमुदायने न्याय
आपु छउं. लोक पण एम जाणेछे के राजा सत्य गुणे करीने
सिंहासनपर अंतरिक्ष बेसेछे. हवे केम करवुं? जो पर्वतनो पक्ष

स्वेच्छाचार तेनुं आगमन होय नहीं; जेम पृथ्वीपर [illegible] नहीं.
तेम सत्संगथी कुटाय नहीं; आवी सत्संगमां चमत्कृति छे. नि-
रंतर एवा निर्दोष समागममां माया लइने आवे पण कोण !
कोइक दुर्भागी; अने ते पण असंभवित छे.

सत्संग ए आत्मानुं परम हितकारि औषध छे.

—:o:—

शिक्षापाठ २५ परिग्रहने संकोचवो.

जे प्राणीने परिग्रहनी मर्यादा नथी, ते प्राणी सुखी नथी;
तेने जे मळ्युं ते ओछुंछे. कारण जेटलुं जाय तेटलाथी विशे-
ष प्राप्त करवा तेनी इच्छा थायछे. परिग्रहनी प्रबळतामां जे
कंइ मळ्युं होय तेनुं सुख तो भोगवातुं नथी परंतु होय ते पण
वखते जायछे. परिग्रहथी निरंतर चळविचळ परिणाम अने
पापभावना रहेछे; अकस्मात् योगथी एवा पापभावनामां आ-
युष्य पूर्ण थाय तो बहुधा अधोगतिनुं कारण था पडे. केवळ
परिग्रह तो मुनिश्वरो त्यागी शके; पण गृहस्थो एनी अमुक
मर्यादा करी शके. मर्यादा थवाथी उपरांत परिग्रहनी उत्पत्ति
नथी; अने एथी करीने विशेष भावना पण बहुधा थती नथी;
अने वळी जे मळ्युंछे तेमां संतोष राखवानी प्रथा पडेछे; एथी
सुखमां काळ जायछे. कोण जाणे लक्ष्मीआदिकमां केवीय
विचित्रता रहीछे के जेम जेम लाभ थतो जायछे तेम तेम लो-
भनी वृद्धि थती जाय छे; धर्मसंबंधी केटलुंक ज्ञान छतां, ध-
र्मनी दृढता छतां पण परिग्रहना पाशमां पडेला पुरुष कोइक ज
[illegible] !

रूप होवाथी घणा माणसो छतां अने परस्परनो सहवास छतां ते एकांतरूपज छे; अने तेवी एकांत मात्र संतसमागममां रही छे. कदापि कोइ एम विचारशे के विषयीमंडळ मळे छे त्यां समभाव सरखी वृत्ति होवाथी एकांत कां न कहेवी? तेनुं समाधान तत्काळ छे के तेओ एक स्वभावि होता नथी तेमां परस्पर स्वार्थ बुद्धि अने मायानुं अनुसंधान होय छे; अने ज्यां ए बे कारणथी समागम छे ते एक स्वभावि के निर्दोष होता नथी. निर्दोष अने समस्वभावि समागम तो परस्परथी शांत मुनीश्वरोनो छे; तेमज धर्मध्यानप्रशस्त अल्पारंभी पुरुषनो पण केटलेक अंशे छे. ज्यां स्वार्थ अने माया कपटज छे त्यां समस्वभावता नथी; अने ते सत्संग पण नथी. सत्संगथी जे सुख अने आनंद मळे छे ते अति स्तुतिपात्र छे. ज्यां शास्त्रोनां सुंदर प्रश्नो थाय, ज्यां उत्तम ज्ञान ध्याननी सुकथा थाय, ज्यां सत्पुरुषोनां चरित्रपर विचार बंधाय, ज्यां तत्त्वज्ञानना तरंगनी लहरियो छूटे, ज्यां सरळ स्वभावथी सिद्धांत विचार चर्चाय, ज्यां मोक्षजन्य कथनपर पुष्कळ विवेचन थाय; एवो सत्संग ते महा दुर्लभ छे कोइ एम कहे के सत्संग मंडळमां कोइ मायावि नहि होय? तो तेनुं समाधान आ छेः ज्यां माया अने स्वार्थ होय छे त्यां सत्संगज होतो नथी. राजहंसनी सभानो काग देखावे कदापि न कळाय तो अवश्य रागे कळाशे; मौन रह्यो तो मुखमुद्राए कळाशे. पण ते अंधकारमां जाय नहीं. तेमज मायाविओ सत्संगमां स्वार्थे जइने शुं करे? त्यां पेट भरवानी वात तो होय नहीं बे घडी त्यां जइ ते विश्रांति लेतो होय तो भले के जेथी रंग लागे नहीं तो

चीजीवार तेनुं आगमन होय नहीं; जेम पृथ्विपर तराय नहीं, तेम सत्संगथी बुडाय नहीं; आवी सत्संगमां चमत्कृति छे. निरंतर एवा निर्दोष समागममां माया लइने आवे पण कोण ? कोइज दुर्भागी; अने ते पण असंभवित छे.

सत्संग ए आत्मानुं परम हितकारि औषध छे.

—:०:—

शिक्षापाठ २५ परिग्रहने संकोचवो.

जे प्राणीने परिग्रहनी मर्यादा नथी, ते प्राणी सुखी नथी; तेने जे मळ्युं ते ओछुंछे. कारण जेटलुं जाय तेटलांथी विशेष प्राप्त करवा तेनी इच्छा थायछे. परिग्रहनी प्रबळतामां जे कंइ मळ्युं होय तेनुं सुख तो भोगवातुं नथी परंतु होय ते पण वखते जायछे. परिग्रहथी निरंतर चळविचळ परिणाम अने पापभावना रहेछे; अकस्मात् योगथी एवा पापभावनामां आयुष्य पूर्ण थाय तो बहुधा अधोगतिनुं कारण थइ पडे. केवळ परिग्रह तो मुनिश्वरो त्यागी शके; पण गृहस्थो एनी अमुक मर्यादा करी शके. मर्यादा थवाथी उपरांत परिग्रहनी उत्पत्ति नथी; अने एथी करीने विशेष भावना पण बहुधा थती नथी; अने वळी जे मळ्युंछे तेमां संतोष राखवानी प्रथा पडेछे; एथी सुखमां काळ जायछे. कोण जाणे लक्ष्मीआदिकमां केवीए विचित्रता रहीछे के जेम जेम लाभ थतो जायछे तेम तेम लोभनी वृद्धि थती जाय छे; धर्म संबंधी केटलुंक ज्ञान छतां, धर्मनी द्रढता छतां पण परिग्रहना पाशमां पडेलो पुरुष कोइकज छूटी शके छे; वृत्ति एमांज लटकी रहेछे; परंतु ए वृत्ति कोइ

ने महा दोष छे एवो एनो स्वभाव छे. ए माटे थइने आत्महि-
तैषीए जेम बने तेम तेनो त्याग करी मर्यादापूर्वक वर्तन करवुं.

शिक्षापाठ २६ तत्व समजवुं.

शास्त्रोनां शास्त्रो मुखपाठे होय एवा पुरुषो घणा मळी शके; परंतु जेणे थोडां वचनोपर प्रौढ अने विवेकपूर्वक विचार करी शास्त्र जेटलुं ज्ञान हृदयगत कर्युं होय तेवा मळवा दुर्लभ छे. तत्वने पहोंची जवुं ए कंइ नानी वात नथी. कूदीने दरि-यो ओळंगी जवोछे.

अर्थ एटले लक्ष्मी, अर्थ एटले तत्व अने अर्थ एटले शब्दनुं बीजुं नाम. आवा अर्थशब्दना घणा अर्थ थायछे. पण अर्थ एटले तत्व ए विषयपर अहीं आगळ कहेवानुंछे. जेओ निर्ग्रंथ-प्रवचनमां आवेलां पवित्र वचनो मुखपाठे करेछे; ते तेओना उत्साहबळे सत्फळ उपार्जन करेछे; परंतु जो तेनो मर्म पाम्या होय तो एथी ए सुख, आनंद, विवेक अने परिणामे महद्भुत-फळ पामेछे. अभणपुरुष सुंदर अक्षर अने ताणेला मिथ्या लीटा ए बेना भेदने जेटलुं जाणेछे तेटलुंज मुखपाठी अन्य ग्रंथ विचार अने निर्ग्रंथप्रवचनने भेदरूप मानेछे. कारण तेणे अर्थ-पूर्वक निर्ग्रंथ वचनामृतो धार्यां नथी; तेम ते पर यथार्थ तत्ववि-चार कर्यो नथी. जोके तत्वविचार करवामां समर्थ बुद्धिप्रभाव जोइए तो पण कंइ विचार करी शके. ...र पीगळे नही तोपण पाणीथी पलळे तेमज जे वचनामृत मुखपाठे कर्यां होय

पडिक्कमणुं ठायमि' एम कां न कहुं? एनी भद्रिकताए तो बधाने विनोद उपजाव्यो; पछी अर्थनी कारणसहित समजण पाडी एटले खेतशी पोतानां मुखपाठी प्रतिक्रमणथी शरमायो.

आ तो एक सामान्य वात छे; परंतु अर्थनी खुबी न्यारी छे. तत्त्वज्ञ तेपर बहु विचार करी शके. बाकीतो गोळ गळ्योज लागे तेम निर्ग्रंथवचनामृतो पण सत्फळज आपे. अहो! पण मर्म पामवानी वातनी तो बलीहारीज छे!

—※—

शिक्षापाठ २७ यत्ना.

जेम विवेक ए धर्मनुं मूळतत्त्व छे; तेम यत्ना ए धर्मनुं उपतत्त्व छे. विवेकथी धर्म तत्त्व ग्रहण कराय छे; तथा यत्नाथी ते तत्त्व शुद्ध राखी शकाय छे अने ते प्रमाणे प्रवर्त्तन करी शकाय छे. पांच समितिरुप यत्ना तो बहु श्रेष्ट छे; परंतु गृहाश्रमीथी ते सर्व भावे पाळी शकाती नथी; छतां जेटला भावांशे पाळी शकाय तेटला भावांशे पण असावधानीथी पाळी शकता नथी. जिनेश्वर भगवंते बोधेली स्थूळ अने सूक्ष्म दया प्रत्ये ज्यां बेदरकारी छे, त्यां बहु दोषथी पाळी शकाय छे. ए यत्नानी न्यूनताने लीधे छे. उतावळी अने वेगभरी चाल, पाणी गळी तेनो संखारो राखवानी अपूर्ण विधि, काष्टादिक इंधननो वगर खंखेर्ये, जोये उपयोग; अनाजमां रहेला सूक्ष्म जंतुओनी अपूर्ण तपास, पुंज्या प्रमाज्या वगर रहेवा दीधेला ठाम; अस्वच्छ राखेला ओरडा, आंगणामां पाणीनुं ढोळवुं. एठनुं राखी मूकवुं. पाटला वगर धखधखती थाळी नीचे मूकवी एथी पोताने आ लोकमां अ-

प्राणीओने पण होवुं जोइए. आपणे समजणवाळां, बोलतां चालतां प्राणी छइए. ते बिचारां अवाचक अने निराधार प्राणी छे. तेमने मोतरुप दुःख आपीए ए केवुं पापनुं प्रबळ कारण छे. आपणे आ वचन निरंतर लक्षमां राखवुं के सर्व प्राणीने पोतानो जीव वहालो छे; अने सर्व जीवनी रक्षा करवी ए जेवो एके धर्म नथी. अभयकुमारना भाषणथी श्रेणिक महाराजा संतोषाया. सघळा सामंतो पण बोध पाम्या. तेओए ते दिवसथी मांस खावानी प्रतिज्ञा करी, कारण एक तो ते अभक्ष छे; अने कोइ जीव हणाया विना ते आवतुं नथी ए मोटो अधर्म छे; माटे अभय प्रधाननुं कथन सांभळीने तेओए अभयदानमां लक्ष आप्युं.

अभयदान आत्माना परम सुखनुं कारण छे.

शिक्षापाठ ३१ प्रत्याख्यान.

पच्चखाण नामनो शब्द वारंवार तमारा सांभळवामां आव्यो छे. एनो मूळ शब्द प्रत्याख्यान छे; अने ते अमुक वस्तु भणी चित्त न करवुं एवा जे तत्व समजी हेतुपूर्वक नियम करवो तेने बदले वपराय छे. प्रत्याख्यान करवानो हेतु महा उत्तम अने सूक्ष्म छे. प्रत्याख्यान नहीं करवाथी गमे ते वस्तु न खाओ के न भोगवो तोपण तेथी संवरपणुं नथी कारण के तत्वरुपे करीने इच्छानुं रुंधन कर्युं नथी. रात्रे आपणे भोजन न करता होइए; परंतु तेनो जो प्रत्याख्यानरुपे नियम न कर्यो होय तो ते फळ न आपे; कारण आपणी इच्छा खुल्ली रही.

पण शरीर निरोगी रही शके छे. मादक पदार्थो मनने अवळे रस्ते दोरे छे, पण मद्यप्रत्याख्यानथी मन त्यां जतां अटके छे; एथी ते विमळ थाय छे.

मद्यप्रत्याख्यान ए केवी उत्तम नियम पाळवानी प्रतिज्ञा छे ते आ उपरथी तमे समज्या हशो. विशेष सद्गुरु मुखथी अने शास्त्रावलोकनथी समजवा हुं बोध करुं छउं.

शिक्षापाठ २२ विनयवडे तत्वनी सिद्धि छे.

राजगृही नगरीनां राज्यासनपर ज्यारे श्रेणिक राजा विराजमान हता, त्यारे ते नगरीमां एक चंडाळ रहेतो हतो. एक वखते ए चंडाळनी स्त्रीने गर्भ रह्यो, त्यारे तेने केरी खावानी इच्छा उत्पन्न थइ. तेणे ते लावी आपवा चंडाळने कह्युं. चंडाळे कह्युं, आ केरीनो वखत नथी, एटले मारो उपाय नथी. नहीं तो हुं गमे तेटले उंचे होय त्यांथी मारी विद्याना बळवडे करीने लावी तारी इच्छा सिद्ध करुं. चंडाळणीए कह्युं, राजानी महाराणीना बागमां एक अकाळिक केरी देनार आंबो छे. तेपर अत्यारे केरीओ लची रही हशे, माटे त्यां जइने ए केरी लावो. पोतानी स्त्रीनी इच्छा पूरी पाडवा चंडाळ ते बागमां गयो. गुप्त रीते आंबा समीप जइ मंत्र भणीने तेने नमाव्यो; अने केरी लीधी. बीजा मंत्रवडे करीने तेने हतो एम करी दीधो. पछी ते घेर आव्यो. अने तेनी स्त्रीनी इच्छा माटे निरंतर ते चंडाळ विद्यावडे त्यांथी केरी लाववा लाग्यो. एक दिवसे फरतां फरतां माळीनी [illegible] ओनी, चोरी थयेली जोइने तेणे ज-

विनय ए उत्तम वशीकरणछे. उत्तराध्ययनमां भगवाने विनयने धर्मनुं मूळ कही वर्णव्यो छे. गुरुनो, मुनिनो, विद्वाननो, मातापितानो अने पोताथी वडानो विनय करवो ए आपणी उत्तमतानुं कारण छे.

शिक्षापाठ ३३ सुदर्शन शेठ.

प्राचीन काळमां शुद्ध एक पत्निव्रतने पाळनारा असंख्य पुरुषो थइ गया छे; एमांथी संकट सही नामांकित थयेलो सुदर्शन नामनो एक सत्पुरुष पण छे. ए धनाढ्य सुंदर मुखमुद्रावाळो कांतिमान अने मध्य वयमां हतो. जे नगरमां ते रहेतो हतो; ते नगरना राज्यदरबार आगळथी कंइ काम प्रसंगने लीधे तेने नीकळवुं पड्युं. ते वेळा राजानी अभया नामनी राणी पोताना आवासना गोखमां बेठी हती. त्यांथी सुदर्शन भणी तेनी दृष्टि गइ. तेनुं उत्तम रुप अने काया जोइने तेनुं मन ललचायुं. एक अनुचरी मोकलीने कपट भावथी निर्मळ कारण बतावीने सुदर्शनने उपर बोलाव्यो. केटलाक प्रकारनी वातचित कर्या पछी अभयाए सुदर्शनने भोग भोगववा संबंधी[illegible]नुं आमंत्रण कर्युं. [illegible] केटलोक उपदेश [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

के शूळी फीटीने तेनुं झळझळतुं सोनानुं सिंहासन थयुं; अने देव दुंदुभीना नाद थया; सर्वत्र आनंद व्यापी गयो. सुदर्शननुं सत्यशील विश्वमंडळमां झळकी उठयुं. सत्य शीळनो सदा जय छे.

शीयळ अने सुदर्शननी उत्तम दृढता ए बन्ने आत्माने पवित्र श्रेणिए चढावे छे!

शिक्षापाठ ३४ ब्रह्मचर्यविषेसुभाषित.

दोहरा.

निरखीने नवयौवना, लेश न विषयनिदान;
गणे काष्टनी पूतळी, ते भगवानसमान. १

आ सघळा संसारनी, रमणी नायकरुप;
ए त्यागी, त्याग्युं बधुं, केवळ शोकस्वरुप. २

एक विषयने जीततां, जीत्यो सौ संसार;
नृपति जीततां जीतिये, दळ, पुरने अधिकार. ३

विषयरुप अंकूरथी, टळे ज्ञानने ध्यान;
लेश मदीरापानथी, छाके ज्यम अज्ञान. ४

जे नववाड विशुद्धथी, धरे शियळ सुखदाइ;
भव तेनो लव पछि रहे, तत्ववचन ए भाइ. ५

सुंदर शीयळसुरतरु, मन वाणीने देह;
ज नरनारी सेवशे, अनुपम फळ ले तेह. ६

पात्र विना वस्तु न रहे, पात्रे आत्मिकज्ञान;
पात्र थवा सेवो सदा, ब्रह्मचर्य मतिमान. ७

शिक्षापाठ ३५ नमस्कारमंत्र.

नमो अरिहंताणं,
नमो सिद्धाणं;
नमो आयरियाणं;
नमो उवाझ्झायाणं;
नमो लोए सव्वसाहुणं.

आ पवित्र वाक्योने निर्ग्रंथप्रवचनमां नवकार (नमस्कार) मंत्र के पंचपरमेष्टिमंत्र केहेछे.

अर्हंत भगवंतना बार गुण, सिद्ध भगवंतना आठ गुण, आचार्यना छत्रीश गुण, उपाध्यायना पंचवीश गुण, अने साधुना सत्तावीश गुण मळीने एकसो आठ गुण थया. अंगुठा विना बाकीनी चार आंगळीओनां बार टेरवां थाय छे; अने एथी ए गुणोनुं चिंतवन करवानी योजना होवाथी बारने नवे गुणतां १०८ थाय छे. एटले नवकार एम केहेवामां साथे एवुं सूचवन रह्युं जणाय छे के हे भव्य! तारां ए आंगळीनां टेरवांथी (नवकार) मंत्र नववार गण.—कार एटले करनार एम पण थाय छे. बारने नवे गुणतां जेटला थाय एटला गुणनो भरेलो मंत्र एम नवकार मंत्र तरीके एनो अर्थ थइ शकेछे. पंच परमेष्टि एटले आ सकळ जगतमां पांच वस्तुओ परमोत्कृष्ट छे ते ते कयि कयि?–तो कहीं बतावी के अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय अने साधु. एने नमस्कार करवानो जे मंत्र तेम परमेष्टि मंत्र; अने पांच परमेष्टिने साथे नमस्कार होवाथी पंचपरमेष्टिमंत्र एवो शब्द थयो. आ मंत्र अनादिसिद्ध मनाय छे;

कारण पंचपरमेष्टि अनादि सिद्ध छे. एटले ए पांचे पात्रो आ-
द्यरुप नथी प्रवाहथी अनादि छे, अने तेना जपनार पण अनादि-
सिद्ध छे. एथी ए जाप पण अनादिसिद्ध ठरे छे.

प्र—ए पंचपरमेष्टिमंत्र परिपूर्ण जाणवाथी मनुष्य उत्तम
गतिने पामे छे एम सत्पुरुषो कहे छे ए माटे तमारुं शुं मत छे?

उ—ए कहेवुं न्यायपूर्वक छे, एम हुं मानुंछउं.

प्र—एने क्यां कारणथी न्यायपूर्वक कही शकाय?

उ—हा. ए तमने हुं समजावुं; मननी निग्रहता अर्थे एक
तो सर्वोत्तम जगद्भूषणना सत्य गुणनुं ए चिंतवन छे. तत्वथी
जोतां वळी अर्हतस्वरुप, सिद्धस्वरुप, आचार्यस्वरुप उपाध्याय
स्वरुप अने साधुस्वरुप एनो विवेकथी विचार करवानुं पण ए
सूचवन छे. कारण के तेओ पूज्यवा योग्य शाथी छे? एम
विचारतां एओनां स्वरुप, गुण इ० माटे विचार करवानी सत्पु-
रुषने तो खरी अगत्य छे. हवे कहो के ए मंत्र केटलो
कल्याणकारक छे?

प्रश्नकार—सत्पुरुषो नमस्कारमंत्रने मोक्षनुं कारण कहे छे.
ए आ व्याख्यानथी हुं पण मान्य राखुं छउं.

अर्हत भगवंत, सिद्ध भगवंत, आचार्य, उपाध्याय अने
साधु एओनो अकेको प्रथमअक्षर लेतां "असिआउसा" एवुं
महद्भूत वाक्य नीकळे छे. जेनुं 'ॐ' एवुं योगबिंदुनुं स्वरुप
थाय छे; माटे आपणे ए मंत्रनो अवश्य करीने विमळ भावथी
जाप करवो.

—::—

करवा माटे सत्पुरुषोए आ एक साधनरूप कोष्टकावलि करी छे.पंच परमेष्टिमंत्रना पांच अंक एमां पहेला मूक्या छे; अने पछी लोमविलोमस्वरुपमां लक्षबंध एना ए पांच अंक मूकीने भिन्न भिन्न प्रकारे कोष्टको कर्या छे. एम करवानुं कारण पण मननी एकाग्रता थईने निर्जरा करी शकाय, ए छे.

पुत्र—पिताजी ! अनुक्रमे लेवाथी एम शा माटे न थइ शके?

पिता—लोमविलोम होयतो ते गोठवतां जवुं पडे अने नाम संभारतां जवुं पडे. पांचनो अंक मूक्या पछी बेनो आंकडो आवे के 'नमो लोए सव्वसाहुणं' पछी-'नमोअरिहंताणं' ए वाक्य मूकीने 'नमो सिद्धाणं' ए वाक्य संभारवुं पडे. एम पुनःपुनः लक्षनी द्रढता राखतां मन एकाग्रताए पहोंचे छे. अनुक्रमबंध होयतो तेम थइ शकतुं नथी; कारणके विचार करवो पडतो नथीः ए सूक्ष्म वखतमां मन परमेष्टिमंत्रमांथी नीकळीने संसारतंत्रनी खटपटमां जइ पडे छे; अने वखते धर्म करतां धाड पण करी नाखे छे, जेथी सत्पुरुषोए अनानुपूर्विनी योजना करी छे. ते बहु सुंदर छे अने आत्मशांतिने आपनारी छे.

शिक्षापाठ ३७ सामायिकविचार भाग १.

आत्मशक्तिनो प्रकाश करनार, सम्यग्ज्ञानदर्शननो उदय करनार, शुद्ध समाधिभावमां प्रवेश करावनार, निर्जरानो अमूल्य लाभ आपनार, रागद्वेषथी मध्यस्थ बुद्धि करनार एवुं सामायिक नामनुं शिक्षाव्रत छे. सामायिक शब्दनी व्युत्पत्ति सम आय इक ए शब्दोथी थायछे. सम एटले रागद्वेषरहित मध्यस्थ

परिणाम, आय एटले ते समभावनाथी उत्पन्न थतो ज्ञानदर्शन चारित्ररूप मोक्षमार्गनो लाभ; अने इक कहेतां भाव एम अर्थ थायछे. एटले जेवडे करीने मोक्षना मार्गनो लाभदायक भाव उपजे ते सामायिक. आर्त, अने रौद्र ए बे प्रकारनां ध्याननो त्याग करीने; मन, वचन कायाना पापभावने रोकीने विवेकी मनुष्यो सामायिक करेछे.

मनना पुद्गळ तरंगी छे. सामायिकमां ज्यारे विशुद्ध परिणाममां रहेवु कह्युं त्यारे पण ए मन आकाश पाताळना घाट घड्या करेछे तेमज भूल, विस्मृति, उन्माद इत्यादिथी वचनकायामां पण दूषण आववाथी सामायिकमां दोष लागेछे. मन, वचन अने काय ना थइने बत्रीश दोष उत्पन्न थायछे. दश मनना, दश वचनना अने बार कायाना एम बत्रीश दोष जाणवा अवश्यना छे. ते जाणवाथी मन सावधान रही शकाय.

मनना दश दोष कहुं छउं

१ अविवेकदोष—सामायिकनुं स्वरूप नहीं जाणवाथी मनमां एवो विचार करे के आथी शुं फळ थवानुं हतुं? आथीतो कोण तर्युं हशे? एवा विकल्पनुं नाम अविवेकदोष.

२ यशोवांछादोष—पोते सामायिक करे छे एम बीजा मनुष्यो जाणे तो प्रशंसा करे एवी इच्छाए सामायिक करवुं ते यशोवांछादोष.

३ धनवांछादोष—धननी इच्छाए सामायिक करवुं ते धनवांछादोष.

४ गर्वदोष—मने लोको धर्मी कहे छे अने हुं सामायिक पण केवुं करुं छुं! एवा [illegible] गर्वदोष.

५ भयदोष हुं श्रावककुलमां जन्म्यो छउं; मने लोको मोटा तरीके मान दे छे, अने जो सामायिक नहीं करुं तो कहेशे के आटली क्रिया पण नथी करतो; एम निंदाना भयथी सामायिक करे ते भयदोष.

६ निदानदोष—सामायिक करीने तेनां फळथी धन स्त्री, पुत्रादिक मळवानुं ईच्छे ते निदानदोष.

७ संशयदोष—सामायिकनुं फळ हशे के नहीं होय? एवो विकल्प करे ते संशयदोष.

८ कषायदोष—सामायिक क्रोधादिकथी करवा वेसी जाय किंवा पछी क्रोध, मान, माया, लोभमां वृत्ति धरे ते कषायदोष.

९ अविनयदोष-विनय वगर सामायिक करे ते अविनयदोष.

१० अबहुमानदोष—भक्तिभाव अने उमंगपूर्वक सामायिक न करे ते अबहुमानदोष.

शिक्षापाठ ३८ सामायिकविचार भाग २.

मनना दश दोष कह्या हवे वचनना दश दोप कहीशुं.

१ कुबोलदोष. सामायिकमां कुवचन बोलवुं ते कुबोलदोष.

२ सहसात्कारदोष. सामायिकमां साहसथी अविचारपूर्वक वाक्य बोलवुं ते सहसात्कारदोष.

३ असदारोपणदोष. बीजाने खोटो बोध आदि आपवो ते असदारोपणदोष.

४ निरपेक्षदोष. सामायिकमां शास्त्रनी दरकार विना वाक्य बोले ते निरपेक्षदोष.

५ संक्षेपदोष. सूत्रपाठ इत्यादिक टुंकामां बोली नाखे; यथार्थ उच्चार करे नहीं ते संक्षेपदोष.

६ क्लेशदोष. कोइथी कंकास करे ते क्लेशदोष.

७ विकथादोष. स्त्र्यादि चार के सात प्रकारनी विकथा मांडी बेसे ते विकथादोष.

८ हास्यदोष. सामायिकमां कोइनी हांसी मश्करी करे ते हास्यदोष.

९ अशुद्धदोष. सामायिकमां सूत्रपाठ न्यूनाधिक अने अशुद्ध बोले ते अशुद्धदोष.

१० मुणमुणदोष. गडबडगोटाथी सामायिकमां सूत्रपाठ बोले जे पोते पण पूरुं मांड समजी शके ते मुणमुणदोष.

ए वचनना दश दोष कह्या; हवे कायाना बार दोष कहुं छुं.

१ सामायिकमां पगपर पग चडावी बेसे, ते श्री गुरु आदिकनो अविनयरूप आसन ते पहेलो अयोग्य आसनदोष.

२ चलासन दोष. डगडगतुं आसन बेसी सामायिक करे, किंवा वारंवार ज्यांथी उठवुं पडे तेवा आसने बेसे ते चलासनदोष.

३ चलदृष्टिदोष. कायोत्सर्गमां आंखो चंचळ राखे ए चलदृष्टिदोष.

४ सावद्यक्रियादोष. सामायिकमां कंइ पाप क्रिया के [illegible] सावद्यक्रियादोष.

परमशांति आपे छे. केटलाकनो ए बे घडीनो काळ, ज्यारे आवतो नथी त्यारे तेओ बहु कंटाळे छे. सामायिकमां नवराश लइने बेसवाथी काळ जाय पण क्यांथी? आधुनिक काळमां सावधानीथी सामायिक करनारा बहुज थोडा छे. प्रतिक्रमण सामायिकनी साथे करवानुं होय छे त्यारे तो वखत जवो सुगम पडे छे. जो के एवा पामरो प्रतिक्रमण लक्ष पूर्वक करी शकता नथी तोपण केवळ नवराश करतां एमां जरूर कंइक फेर पडे छे. सामायिक पण पुरुं जेओने आवडतुं नथी तेओ बिचारा सामायिकमां पछी बहु मुंझाय छे. केटलाक भारे कर्मियो ए अवसरमां व्यवहारना प्रपंचो पण घडी राखे छे. आथी सामायिक बहु दूषित थाय छे.

विधिपूर्वक सामायिक न थाय ए बहु खेदकारक अने कर्मनी बाहुल्यता छे. साठ घडीना अहोरात्र व्यर्थ चाल्या जाय छे असंख्याता दिवसथी भरेलां अनंता काळचक्र व्यतीत करतां पण जे सार्थक न थयुं ते बे घडीना विशुद्ध सामायिकथी थाय छे. लक्षपूर्वक सामायिक थवा माटे तेमां प्रवेश कर्या पछी चार लोगस्सथी वधारे लोगस्सनो कायोत्सर्ग करी चित्तनी कंइक स्वस्थता आणवी पछी सूत्रपाठ के उत्तम ग्रंथनुं मनन करवुं, वैराग्यनां उत्तम काव्यो बोलवां, पाछळनुं अध्ययन करेलुं स्मरण करी जवुं, नूतन अभ्यास थाय तो करवो. कोइने शास्त्राधारथी [illegible]ारवो; एम सामायिकी काळ व्यतीत करवो. मुनिरा-[illegible]ो समागम होय तो आगमवाणी सांभळवी अने ते मनन [illegible]तेम न होय अने शास्त्र परिचय न होय तो विचक्षण

अभ्यासी पासेथी वैराग्यबोधक कथन श्रवण करवुं; किंवा कंई अभ्यास करवो. ए सघळी योगवाइ न होय तो केटलोक भाग लक्षपूर्वक कायोत्सर्गमां रोकवो; अने केटलोक भाग महापुरुषोनां चरित्रकथानां उपयोगपूर्वक रोकवो; परंतु जेम बने तेम विवेकथी अने उत्साहथी सामायिककाळ व्यतित करवो. कंई साहित्य न होय तो पंच परमेष्ठिमंत्रनो जापज उत्साहपूर्वक करवो. पण व्यर्थ काळ काढी नाखवो नहीं. धीरजथी, शांतिथी अने यत्नाथी सामायिक करवुं. जेम बने तेम सामायिकमां शास्त्रपरिचय वधारवो.

साठघडीना अहोरात्रिमांथी बेघडी अवश्य बचावी सामायिक सद्भावथी करवुं.

—※—

शिक्षापाठ ४० प्रतिक्रमणविचार.

प्रतिक्रमण एटले पाछुं फरवुं—फरीथी जोई जवुं एम एनो अर्थ थई शकेछे. भावनी अपेक्षाए जे दिवसे जे वखते प्रतिक्रमण करवानुं थाय; ते वखतनी अगाउ अथवा ते दिवसे जे जे दोष थया होय ते एक पछी एक अंतरात्माथी जोई जवा अने तेनो पश्चाताप करी ते दोषथी पाछुं वळवुं तेनुं नाम प्रतिक्रमण कहेवाय.

उत्तम मुनियो अने भाविक श्रावको संध्याकाळे अने रात्रिना पाछला भागमां दिवसे अने रात्रे एम अनुक्रमे थयेला दोषना पश्चात्ताप करे छे के तेनी क्षमापना इच्छेछे; एनुं नाम अहीं आगळ प्रतिक्रमण छे. ए प्रतिक्रमण आपणे पण अवश्य करवुं; कारण आत्मा मन, वचन अने कायाना योगथी

अहो भव्यो ! भीखारीनां स्वप्नां जेवां संसारनां सुख अनित्य छे. स्वप्नामां जेम ते भीखारीए सुख समुदाय दीठो अने आनंद मान्यो तेम पामर प्राणीओ संसार स्वप्नना सुखसमुदायनो आनंद माने छे. जेम ते सुख समुदाय जागृतिमां मिथ्या जणाया तेम ज्ञान प्राप्त थतां संसारनां सुख तेवां जणाय छे. स्वप्नाना भोग न भोगव्या छतां जेम भीखारीने खेदनी प्राप्ति थइ, तेम मोहांध प्राणीओ संसारनां सुख मानी बेसे छे; अने भोगव्या सम गणे छे. परंतु परिणामे खेद, दुर्गति अने पश्चात्ताप ले छे; ते चपळ अने विनाशी छतां स्वप्नाना खेद जेवुं तेनुं परिणाम रह्युं छे. ए उपरथी बुद्धिमान पुरुषो आत्महितने शोधे छे. संसारनी अनित्यतापर एक काव्य छे केः—

उपजाति.

विद्युतलक्ष्मी प्रभुता पतंग;
आयुष्य तेतो जळना तरंग;
पुरंदरी चाप अनंगरंग;
शुं राचिये त्यां क्षणनो प्रसंग !

विशेषार्थः—लक्ष्मी वीजळी जेवी छे. वीजळीनो झबकार जेम थइने ओलवाइ जाय छे, तेम लक्ष्मी आवीने चाली जाय छे. अधिकार पतंगना रंग जेवो छे. पतंगनो रंग जेम चार दिवसनी चटकी छे; तेम अधिकार मात्र थोडो काळ रही हाथमांथी जतो रहे छे. आयुष्य पाणीना मोजां जेवुं छे पाणीनो हिलोळो आव्यो के गयो तेम जन्म पाम्या अने एक देहमां

अहो भव्यो ! भीखारीनां स्वप्नां जेवां संसारनां सुख अनित्य छे. स्वप्नामां जेम ते भीखारीए सुख समुदाय दीठो अने आनंद मान्यो तेम पामर प्राणीओ संसार स्वप्नाना सुखसमुदायमां आनंद माने छे. जेम ते सुख समुदाय जागृतिमां मिथ्या जणाया तेम ज्ञान प्राप्त थतां संसारनां सुख तेवां जणाय छे. स्वप्नाना भोग न भोगव्या छतां जेम भीखारीने खेदनी प्राप्ति थइ, तेम मोहांध प्राणीओ संसारनां सुख मानी बेसे छे; अने भोगव्या सम गणे छे. परंतु परिणामे खेद, दुर्गति अने पश्चाताप ले छे; ते चपळ अने विनाशी छतां स्वप्नाना खेद जेवुं तेनुं परिणाम रह्युं छे. ए उपरथी बुद्धिमान पुरुषो आत्महितने शोधे छे. संसारनी अनित्यतापर एक काव्य छे केः—

उपजाति.

विद्युतलक्ष्मी प्रभुता पतंग;
आयुष्य ते तो जळना तरंग;
पुरंदरी चाप अनंगरंग;
शुं राचिये त्यां क्षणनो प्रसंग !

विशेषार्थः—लक्ष्मी वीजळी जेवी छे. वीजळीनो झबकार जेम थइने ओलवाइ जाय छे. तेम लक्ष्मी आवीने चाली जाय छे. अधिकार पतंगना रंग जेवो छे. पतंगनो रंग जेम चार दिवसनी चटकी छे; तेम अधिकार मात्र थोडो काळ रही हाथमांथी जतो रहे छे. आयुष्य पाणीना मोजां जेवुं छे पाणीनो हिलोळो आव्यो के गयो तेम जन्म पाम्या अने एक देहमां

विशुद्ध भावथी कायोत्सर्गमां छे, त्यां आवी पहोंच्यो. कोमळ गजसुकुमारना माथापर चीकणी माटीनी वाड करी; अने अंदर धखधखता अंगारा भर्या, इंधन पूर्युं एटले महा ताप थयो. एथी गजसुकुमारनो कोमळदेह बळवा मंड्यो एटले ते सोमल जतो रह्यो. ते वखतना गजसुकुमारना असह्य दुःखनुं वर्णन केम थई शके! त्यारे पण तेओ समभावपरिणाममां रह्या. किंचित् क्रोध के द्वेष एमना हृदयमां जन्म पाम्यो नहीं. पोताना आत्माने स्थितिस्थापक करीने बोध दीधो के जो! तुं एनी पुत्रीने परण्यो होत तो ए कन्यादानमां तने पाघडी आपत. ए पाघडी थोडा वखतमां फाटी जाय तेवी अने परिणामे दुःखदायक थात. आ एनो बहु उपकार थयो के ए पाघडी बदल एणे मोक्षनी पाघडी बंधावी. एवां विशुद्ध परिणामथी अडग रही समभावथी असह्य वेदना सहीने तेओ सर्वज्ञ सर्वदर्शी थई अनंत जीवन सुखने पाम्या. केवी अनुपम क्षमा अने केवुं तेनुं सुंदर परिणाम! तत्वज्ञानीओनां वचन छे के आत्मा मात्र स्वसद्भावमां आववो जोइए; अने ते आव्यो तो मोक्ष हथेळीमांज छे. गजसुकुमारनी नामांकित क्षमा केवो शुद्ध बोध करेछे!

शिक्षापाठ ४४ राग.

श्रमण भगवान महावीरना अग्रेसर गणधर गौतमनुं नाम तमे बहुवार सांभळ्युं [illegible]

[illegible]

शिक्षापाठ ४५ सामान्य मनोरथ.

सवैया.

मोहिनिभावविचार आधीन थइ,
ना निरखुं नयने परनारी;
पत्थरतुल्य गणुं परवैभव,
निर्मळ तात्विक लोभ समारी!
द्वादश व्रत्त अने दिनता धरि,
सात्विक थाउं स्वरुप विचारी;
ए मुजनेम सदा शुभ क्षेमक,
नित्य अखंड रहो भवहारी. १
ते त्रिशलातनये मन चिंतवि,
ज्ञान विवेक विचार वधारुं;
नित्य विशोध करी नव तत्वनो,
उत्तम बोध अनेक उच्चारुं;
संशय बीज उगे नहिं अंदर,
जे जिननां कथनो अवधारुं.
राज्य, सदा मुज एज मनोरथ,
धार, थशे अपवर्ग, उतारु. २

शिक्षापाठ ४६ कपिलमुनि भाग १.

कौशांबी नामनी एक नगरी हती; त्यांना राजदरबारमां राज्यनां आभूषणरुप काश्यप नामनो एक शास्त्री रहेतो हतो.

अवध वीततां कपिल श्रावस्तिए शास्त्रीजीने घेर आवी प-होंच्या. प्रणाम करीने पोतानो इतिहास कही वताव्यो. शास्त्री-जीए मित्रपुत्रने विद्यादान देवाने माटे बहु आनंद देखाड्यो; पण कपिल आगळ कंइ पुंजी नहोती के ते तेमांथी खाय अने अभ्यास करी शके; एथी करीने तेने नगरमां याचवा जवुं पडतुं हतुं. याचतां याचतां वपोर थइ जता हता, पछी रसोइ करे अने जमे त्यां सांजनो थोडो भाग रहेतो हतो. एटले कंइ अभ्यास करी शकतो नहोतो. पंडिते तेनुं कारण पूछ्युं त्यारे कपिले ते कही वताव्युं. पंडित तेने एक गृहस्थ पासे तेडी गया. ते गृहस्थे कपिलनी अनुकंपा खातर एने हमेशां भोजन मळे एवी गोठवण एक विधवा ब्राह्मणीने त्यां करी दीधी. जेथी कपिलने ए एक चिंता ओछी थइ.

शिक्षापाठ ४७ कपिलमुनि भाग २.

ए नानी चिंता ओछी थइ त्यां बीजी मोटी जंजाळ उभी थइ. भद्रिक कपिल हवे युवान् थयो हतो; अने जेने त्यां ते जमवा जतो ते विधवा बाइ पण युवान् हती. तेनी साथे तेना घरमां बीजुं कोइ माणस नहोतुं. हमेशनो परस्परनो वातचितनो संबंध वध्यो. वधीने हास्यविनोदरूपे थयो; एम करतां करतां बन्नेने प्रीति बंधाइ. कपिल तेनाथी लुब्धायो ! एकांत बहु अनिष्ट चीज छे ! !

विद्या प्राप्त करवानुं ते भूली गयो. गृहस्थ तरफथी मळतां सीधांथी बन्नेनुं मांड पुरुं थतुं हतुंः पण लूगडालत्तांना वांधा

घणा. कपिले गृहस्थाश्रम मांडी बेठा जेवुं करी मूक्युं. पण तेनी घणी हळु-कर्मी जीव होवाथी संसारनी विशेष लोलुपता तेने नहोती. पैसा केम पेदा करवा ते विचारो तेने आवतो पण नहोतो. चंचळ स्त्रीए तेने रस्तो बताव्यो के मुंझावाथी कंइ वळवानुं नथी; परंतु उपायथी सिद्धि छे. आ गामना राजानो एवो नियम छे के सवारमां पहेलो जइ जे ब्राह्मण आशिर्वाद आपे तेने ते बे मासा सोनुं आपेछे. त्यां जो जइ शको अने प्रथम आशिर्वाद आपी शको तो ते बे मासा सोनुं मळे. कपिले ए वातनी हा कही. आठ दिवस सुधी धक्का खाधा पण वखत वीत्या पछी जाय एटले कंइ वळे नहीं. एथी तेणे एक दिवस एवो निश्चय कर्यो के जो हुं चोकमां सुइश तो चीवट राखीने उठाशे. पछी ते चोकमां सुतो; अधरात भागतां चंद्रनो उदय थयो. कपिल प्रभात समीप जाणीने मुठीओ वाळीने आशिर्वाद देवा माटे दोडतां जवा मांड्युं. रक्षपाळे चोर जाणीने तेने पकडी राख्यो. एक करतां बीजुं थइ पड्युं. प्रभात थयो एटले रक्षपाळे तेने लइ जइने राजानी समक्ष उभो राख्यो. कपिल बेभान जेवो उभो रह्यो; राजाने तेनां चोरनां लक्षण भास्यां नहीं. एथी तेने सघळुं वृत्तांत पूछ्युं. चंद्रना प्रकाशने सूर्यसमान गणनार तेना भोळपणपर राजाने दया आवी. तेनी दरिद्रता टाळवा राजानी इच्छा थइ एथी कपिलने कह्युं; आशिर्वादने माटे थइ [illegible] [illegible] छे. [illegible] [illegible] पूर्ण करवा [illegible] [illegible]

आप्यो; मारुं मन हजु स्थिर थयुं नथी; एटले शुं मागवुं ते सूझतुं नथी. राजाए सामेना बागमां जइ त्यां बेसीने स्वस्थता पूर्वक विचार करी कपिलने मागवानुं कह्युं. एटले कपिल ते बागमां जइने विचार करवा बेठो.

शिक्षापाठ ४८ कपिलमुनि भाग ३.

बे मासा सोनुं लेवानी जेनी इच्छा हती ते कपिल हवे तृष्णातरंगमां घसडायो. पांच महोर मागवानी इच्छा करी तो त्यां विचार आव्यो के पांचथी कंइ पुरुं थनार नथी. माटे पंचवीश महोर मागवी. ए विचार पण फर्यो. पंचवीश महोरथी कंइ आखुं वर्ष उतराय नहीं माटे सो महोर मागवी; त्यां वळी विचार फर्यो. सो महोरे बे वर्ष उतरी, वैभव भोगवीए; पाछां दुःखनां दुःख. माटे एक हजार महोरनी याचना करवी ठीक छे; पण एक हजार महोर छोकरां छैयांनां बेचार खर्चे आवे के एवुं थाय तो पुरुं पण शुं थाय! माटे दश हजार महोर मागवी के जेथी जींदगी पर्यंत पण चिंता नहीं. त्यां वळी इच्छा फरी. दश हजार महोर खवाई जाय एटले पछी मुडी वगरना थई रहेवुं पडे. माटे एक लाख महोरनी मागणी करुं के जेना व्याजमां बधा वैभव भोगवुं; पण जीव! लक्षाधिपति तो घणाय छे. एमां आपणे नामांकित क्यांथी थवाना? माटे करोड महोर मागवी के जेथी महान श्रीमंतता कहेवाय. वळी पाछो रंग फर्यो. महान श्रीमंतताथी पण घेर अमल कहेवाय नहीं. माटे राजानुं अर्धुं राज्य मागवुं; पण जो अर्धुं

सुख तो संतोषमांज छे. तृष्णा ए संसार वृक्षनुं बीज छे. एनो हे जीव, तारे शुं खपछे! विद्या लेतां तुं विषयमां पडी गयो; विषयमां पडवाथी आ उपाधिमां पड्यो; उपाधि वडे करिने अनंत तृष्णा समुद्रना तरंगमां तुं पड्यो. एक उपाधिमांथी आ संसारमां एम अनंत उपाधि वेठवी पडेछे. एथी एनो त्याग करवो उचितछे. सत्य संतोष जेवुं निरुपाधि सुख एके नथी. एम विचारतां विचारतां—तृष्णा समाववाथी ते कपिलनां अनेक आवरण क्षय थयां. तेनुं अंतःकरण प्रफुल्लित अने बहु विवेकशील थयुं. विवेकमां ने विवेकमां उत्तम ज्ञानवडे ते स्वात्मनो विचार करी शक्यो. अपूर्वश्रेणिए चढी ते कैवल्यज्ञानने पाम्यो.

तृष्णा केवी कनिष्ठ वस्तु छे! ज्ञानीओ एम कहेछे के तृष्णा आकाशना जेवी अनंत छे; निरंतर ते नवयौवन रहेछे. कंइक चाहना जेटलुं मळ्युं एटले चाहना छे. संतोष एज कल्पवृक्ष छे; अने एज मात्र मनोवांछितता पूर्ण करे छे.

शिक्षापाठ ४९ तृष्णानी विचित्रता.

मनहर छंद.

(एक गरीबनी वधती गयेली तृष्णा.)

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

(४)

थइ क्षीण नाडी अवाचक जेवो रह्यो पडी,
जीवन दीपक पाम्यो केवळ झंखाइने,
छेल्ली इसे पड्यो भाळी भाइए त्यां एम भाख्युं,
हवे टाढी माटी थाय तो तो ठीक भाइने;
हाथने हलावी त्यां तो खीजी बुढ्ढे सूचव्युं ए,
बोल्या विना बेस बाळ तारी चतुराइने!
अरे राजचंद्र देखो देखो आशापाश केवो!
जतां गइ नहीं डोशे ममता मराइने! ४

शिक्षापाठ ५० प्रमाद.

धर्मनो अनादरता, उन्माद, आळस, कषाय ए सघळां प्रमादनां लक्षण छे.

भगवाने उत्तराध्ययन सूत्रमां गौतमने कह्युं के, हे गौतम, मनुष्यनुं आयुष्य डाभनी अणीपर पडेला जळना बिंदु जेवुं छे. जेम ते बिंदुने पडतां वार लागती नथी तेम आ मनुष्यायु जतां वार लागती नथी. ए बोधना काव्यमां चोथी कडी स्मरणमां अवश्य राखवा जेवी छे 'समयं गोयम मा पमाए'–ए पवित्र वाक्यना बे अर्थ थाय छे. एक तो हे गौतम! समय एटले अवसर पामीने प्रमाद न करवो अने बीजो एके मेषोन्मेषमां चाल्या जता असंख्यातमां भागना जे समय कहेवाय छे तेटलो वखत पण प्रमाद न करवो कारण देह क्षणभंगुर छे; काळशीकारी माथे धनुष्यबाण चढावीने उभो छे.

मळी नृपताइ त्यारे ताकी देवताइअने,
दीठी देवताइ त्यारे ताकी शंकराइने;
अहो राज्यचंद्रमानो मानो शंकराइ मळी (!)
वधे तृशनाइ तोय जाय न मराइने. १

(२)

करोचली पडी डाढी डाचातणो दाट वाळ्यो,
काळी केशपटी विषे, श्वेतता छवाइ गइ;
सूंघवुं सांभळवुंने देखवुं ते मांडी वळ्युं,
तेम दांत आवळी ते, खरी, के खवाइ गइ;
वळी केड वांकी हाड गयां अंगरंग गयो,
उठवानी आय जतां लाकडी लेवाइ गइ;
अरे! राज्यचंद्र एम, युवानी हराइ पण,
मनथी न तोय रांड, ममता मराइ गइ. २

(३)

करोडोना करजना, शीरपर डंका वागे,
रोगथी रुंधाइ गयुं, शरीर सूकाइने;
पुरपति पण माथे, पीडवाने ताकी रह्यो,
पेट तणी वेठ पण, शके न पुराइने;
पितृ अने परणी ते, मचावे अनेक धंध,
पुत्र, पुत्री भाखे खाउं खाउं दुःखदाइने,
अरे राज्यचंद्र तोय जीव झावा दावा करे,
जंजाळ छडाय नहीं तजी तृशनाइने. ३

(४)

थइ क्षीण नाडी अवाचक जेवो रह्यो पडी,
जीवन दीपक पाम्यो केवळ झंखाइने,
छेल्ली इसे पड्यो भाळी भाइए त्यां एम भाख्युं,
हवे टाढी माटी थाय तो तो ठीक भाइने;
हाथने हलावी त्यां तो खीजी बुढे सूचव्युं ए,
बोल्या विना बेस बाळ तारी चतुराइने!
अरे राज्यचंद्र देखो देखो आशापाश केवो!
जतां गइ नहीं डोशे ममता मराइने!   ४

शिक्षापाठ ५० प्रमाद.

धर्मनो अनादरता, उन्माद, आळस, कषाय ए सघळां प्रमादनां लक्षण छे.

भगवाने उत्तराध्ययन सूत्रमां गौतमने कह्युं के, हे गौतम, मनुष्यनुं आयुष्य डाभनी अणीपर पडेला जळना बिंदु जेवुं छे. जेम ते बिंदुने पडतां वार लागती नथी तेम आ मनुष्यायु जतां वार लागती नथी. ए बोधना काव्यनी चोथी कडी स्मरणमां अवश्य राखवा जेवी छे 'समयंगोयम मा-पमाए'-ए पवित्र वाक्यना बे अर्थ थाय छे. एक तो हे गौतम! समय एटले अवसर पामीने प्रमाद न करवो अने बीजो एके मेषोन्मेषमां चाल्या जता असंख्यातमां भागनो जे समय कहेवाय छे तेटलो वखत पण प्रमाद न करवो. कारण देह क्षणभंगुर छे; काळशीकारी माथे धनुष्यबाण चढावीने उभो छे.

करीने धर्म टकेछे. विवेक नथी त्यां धर्म नथी तो विवेक एटले शुं ? ते अमने कहो.

गुरुः—आयुष्यमन्नो ! सत्यासत्यने तेने स्वरूपे करीने समजवां तेनुं नाम विवेक.

लघु शिष्यो:—सत्यने सत्य अने असत्यने असत्य कहेवानुं तो बधाय समजे छे. त्यारे महाराज ! एओ धर्मनुं मूळ पाम्या कहेवाय !

गुरुः—तमे जे वात कहोछो तेनुं एक दृष्टांत आपो जोइए.

लघुशिष्यो:—अमे पोते कडवाने कडवुंज कहीए छीए मधुराने मधुर कहीए छीए. झेरने झेर ने अमृतने अमृत कहीए छीए.

गुरुः—आयुष्यमन्नो ! ए बधां द्रव्य पदार्थ छे; परंतु आत्माने कयि कडवाश, कयि मधुराश कयुं झेर अने कयुं अमृत छे ! ए भावपदार्थोनी एथी कंइ परीक्षा थइ शके ?

लघुशिष्यः—भगवन् ! ए संबंधो तो अमारुं लक्ष पण नथी.

गुरुः—त्यारे एज समजवानुं छे के ज्ञान-दर्शनरूप आत्माना सत्य भाव पदार्थने अज्ञान अने अदर्शन रूप असत्व वस्तुए घेरी लीधा छे, एमां एटली बधी मिश्रता थइ गइ छे के परीक्षा करवी अति अति दुर्लभ छे; संसारनां सुखो अनंतिवार आत्माए भोगव्यां छता, तेमांथी हजु पण मोह टळ्यो नहीं, अने तेने अमृत जेवो गण्यां ए अविवेक छे कारण संसार कडवो छे कडवा विपाकने आपेछे. तेमज वैराग्य जे ए कडवा विपाकनुं औषध छे, तेने कडवो गण्यं; आ पण अवि

स्वरुप जोवानी एणे आकांक्षा पण करी नथी. पतंगनी जेम दीपक मत्ये मोहिनी छे तेम आत्मानी संसारसंबंधे मोहिनी छे. ज्ञानीओ ए संसारने क्षणभर पण सुखरुप कहेता नथी. ए संसारनी तल जेटली जग्यो पण झेर विना रही नथी. एक भूंडथी करीने एक चक्रवर्त्ति सुधी भावे करीने सरखापणुं रह्युं छे. एटले चक्रवर्त्तीनी संसार संबंधमां जेटली मोहिनी छे; तेटलीज बलके तेथी विशेष भूंडने छे. चक्रवर्त्ति जेम समग्र प्रजापर अधिकार भोगवे छे तेम तेनी उपाधि पण भोगवेछे. भूंडने एमांनुं कशुंए भोगववुं पडतुं नथी. अधिकार करतां उलटी उपाधि विशेष छे. चक्रवर्त्तिनो पोतानी पत्नि मत्येनो जेटलो प्रेम छे; तेटलो ज अथवा तेथी विशेष भुंडनो पोतानी भुंडणी मत्ये प्रेम रह्यो छे. चक्रवर्ति भोगथी जेटलो रस लेछे. तेटलोज रस भुंड पण मानी बेठुं छे. चक्रवर्त्तिनी जेटली वैभवनी बहोळता छे; तेटलीज उपाधि छे. भुंडने एना वैभवना प्रमाणमां छे. बन्ने जन्म्यां छे अने बन्ने मरवानां छे. आम सूक्ष्म विचारे जोतां क्षणिकताथी, रोगथी, जरा वगेरेथी बन्ने ग्राहित छे. द्रव्ये चक्रवर्ति समर्थ छे. महा पुण्यशाळी छे. मुख्यपणे शातावेदनीय भोगवे छे. अने भुंड बिचारुं असातावेदनीय भोगावे रह्युं छे. बन्नेने असाता—सातापण छे; परंतु चक्रवर्त्ति महा समर्थ छे. पण जो ए जीवन पर्यंत मोहांध रह्यो तो सघळी बाजी हारी जवा जेवुं करेछे. भुंडने पण तेमज छे. चक्रवर्त्ती शलाकापुरुष होवाथी भुंडथी ए रुपे एनी तुल्यना ज नथी; परंतु आ स्वरुपे छे. भोग भोगववामां बन्ने तुच्छ छे; बन्नेनां शरीर परु

मांसादिकनां छे. असातायिथी पराधिन छे संसारनी आ उत्तमोत्तम पद्वी आवी रही तेमां आवुं दुःख, आवी क्षणिकता, आवी तुच्छता, आवुं अंधपणुं ए रह्युं छे तो पछी बीजे सुख शा माटे गणवु जोइए ? ए सुख नथी छतां सुख गणो तो जे सुख भयवाळां अने क्षणिक छे ते दुःखज छे. अनंत ताप, अनंत शोक, अनंत दुःख जोइने ज्ञानीओए ए संसारने पुंठ दीधीछे; ते सत्य छे. ए भणी पाछुं वाळी जोवा जेवुं नथी. त्यां दुःख दुःखने दुःखज छे. दुःखनो ए समुद्र छे.

वैराग्य एज अनंतसुखमां लइ जनार उत्कृष्ट भोमियोछे.

शिक्षापाठ ५३ महावीरशासन.

हमणा जे जिन शासन प्रवर्त्तमान छे ते भगवान महावीरनुं प्रणीत करेलु छे. भगवान महावीरने निर्वाण पधार्या २४०० वर्ष थइ गयां; मगध देशना क्षत्रियकुंड नगरमां सिद्धार्थ राजानी राणी त्रिशलादेवी क्षत्रियाणीनी कुखे भगवान महावीर जन्म्या. महावीर भगवानना मोटा भाइनु नाम नंदीवर्द्धमान हतुं. तेमनी स्त्रीनुं नाम यशोदा हतु. त्रीश वर्ष तेओ गृहस्थाश्रममां रह्या. एकांतिक विहारे साडाबार वर्ष एक पक्ष तपादिक सम्यकाचारे, एमणे अशेष घनघाती कर्मने बाळीने भस्मिभूत कर्यां; अनुपमेय केवळज्ञान अने केवळदर्शन ऋजुवालिका नदीने किनारे पाम्या एकंदर बहोंतेर वर्षनी लगभग आयु भोगवी सर्व कर्म भस्मिभुत करी सिद्धस्वरुपने पाम्या. वर्त्तमान चोवीशीना ए छेल्ला जिनेश्वर हता.

एओनुं आ धर्मतीर्थ प्रवर्त्ते छे ते २१००० हजार वर्ष एटले पंचमकाळनी पूर्णता सुधी प्रवर्त्तशे; एम भगवतीसूत्रमां कह्युं छे.

आ काळ दश आश्चर्यथी युक्त होवाथी ए श्री धर्मतीर्थ प्रत्ये अनेक विपत्तिओ आवी गइ छे. आवे छे; अने आवशे.

जैनसमुदायमां परस्पर मतभेद बहु पडी गया छे. परस्पर निंदाग्रंथोथी जंजाळ मांडी बेठा छे. मध्यस्थ पुरुषो मतमतांतरमां नहीं पडतां विवेक विचारे जिनशिक्षानां मूळ तत्वपर आवे छे; उत्तम शीलवान मुनियोपर भाविक रहे छे. अने सत्य एकाग्रताथी पोताना आत्माने दमेछे.

काळप्रभावने लीधे वखते वखते शासन कंइ न्यूनाधिक प्रकाशमां आवे छे.

'वंक जडाय पछिमा' एवुं उत्तराध्ययन सूत्रमां वचन छे, एनो भावार्थ ए छे के छेल्ला तीर्थंकर (महावीरस्वामी) ना शिष्यो वांका अने जड थशे. अने तेनी सत्यता विषे कोइने बोलवुं रहे तेम नथी. आपणे क्यां तत्वनो विचार करीए छीए! क्यां उत्तम शीलनो विचार करीए छीए! नियमित वखत धर्ममां क्यां व्यतित करीए छीए! धर्मतीर्थना उदयने माटे क्यां लक्ष राखीए छीए! क्यां दाझवडे धर्मतत्वने शोधीए छीए! श्रावक कुळमां जन्म्या एथी करीने श्रावक, ए वात आपणे भावे करीने मान्य करवी जोइती नथी; एने माटे जोइता आचार–ज्ञान–शोध के एमाना कंइ विशेष लक्षणो होय

पडे छे. यावत् जीवन तेनुं पाणी पीए छे. गृहस्थने घेर तेओ बेसी शकता नथी. शुद्ध ब्रह्मचर्य पाळे छे. फूटी बदाम पण पासे राखी शकता नथी. अयोग्य वचन तेओ बोली शकता नथी. वाहन तेओ लई शकता नथी. आवा पवित्र आचारो, खरे ! मोक्षदायक छे. परंतु नववाडमां भगवाने स्नान करवानी ना कही छे ए वात तो मने यथार्थ बेसती नथी.

सत्य—शा माटे बेसती नथी ?

जिज्ञासु—कारण एथी अशुचि वधे छे.

सत्य—कई अशुचि वधे छे ?

जिज्ञासु—शरीर मलिन रहे छे ए.

सत्य—भाई, शरीरनी मलिनताने अशुचि कहेवी ए वात कंई विचारपूर्वक नथी. शरीर पोते शानुं बन्युं छे एतो विचार करो. रक्त, पित्त, मळ, मूत्र श्लेष्मनो ए भंडार छे तेपर मात्र त्वचा छे; छतां ए पवित्र केम थाय ? वळी साधुए एवुं कंई संसारी कर्तव्य कर्युं न होय के जेथी तेओने स्नान करवानी आवश्यक रहे.

जिज्ञासु—पण स्नान करवाथी तेओने हानि शुं छे ?

सत्य—ए तो स्थूळबुद्धिनुं ज प्रश्न छे. नाहवाथी कामाग्निनी प्रदीप्तता, व्रतनो भंग, परिणामनुं बदलवुं, असंख्याता जंतुओनो विनाश. ए सघळी अशुचि उत्पन्न थाय छे अने एथी आत्मा महामलिन थाय छे. प्रथम एनो विचार करवो जोइए. जीवहिंसायुक्त शरीरनी जे मलिनता छे ते अशुचि छे. अन्य मलिनताथी तो आत्मानी उज्ज्वळता थाय छे ए तत्त्वविचारे

समजवानुं छे; नहावाथी वृत्तभंग थइ आत्मा मलीन थाय छे; अने आत्मानी मलीनता एज अशुचि छे.

जिज्ञासुः—मने तमे बहु सुंदर कारण बताव्युं. सूक्ष्म विचार करतां जिनेश्वरनां कथनथी बोध अने अत्यानंद प्राप्त थाय छे. वारु, गृहस्थाश्रमीओए सांसारिक प्रवर्त्तनथी थयेली अनीच्छितनीवाहिंसादियुक्त एवी शरीर संबंधी अशुचि टाळवी जोइए के नहीं?

सत्यः—समजणपूर्वक अशुचि टाळवीज जोइए. जैन जेवुं एके पवित्र दर्शन नथी; यथार्थ पवित्रतानो बोधक ते छे. परंतु शौचाशौचनुं स्वरुप समजवुं जोइए.

—:०:—

शिक्षापाठ ५५ सामान्य नित्यनियम.

प्रभात पहेलां जागृत थइ नमस्कारमंत्रनुं स्मरण करी मनविशुद्ध करवुं. पापव्यापारनी वृत्ति रोकी रात्रिसंबंधी थयेला दोषनुं उपयोगपूर्वक प्रतिक्रमण करवुं.

प्रतिक्रमण कर्या पछी यथावसर भगवाननी उपासना-स्तुति तथा स्वाध्यायथी करी मनने उज्ज्वळ करवुं.

मात पिताना विनय करी संसारिकामनी आत्महितनो लक्ष भूलाय नहीं तेम व्यवहारिक कार्यमां प्रवर्त्तन करवुं.

पोते भोजन करता पहेलां सत्पात्रे दान देवानी परम आतुरता राखी तेवो योग मळतां यथोचित प्रवृत्ति करवी.

१.

सर्व पापथी मुक्त थवुं ए मारी अभिलाषा छे. आगळ करेलां पापोनो हुं हवे पश्चात्ताप करुं छउं. जेम जेम हुं सूक्ष्म विचारथी उंडो उतरुं छउं तेम तेम तमारा तत्वना चमत्कारो मारा स्वरूपनो प्रकाश करे छे. तमे निरागी, निर्विकारी, सच्चिदानंदस्वरूप, सहजानंदी, अनंतज्ञानी, अनंतदर्शी, अने त्रैलोक्यप्रकाशक छो. हुं मात्र मारा हितने अर्थे तमारी साक्षिए क्षमा चाहुं छउं. एक पळ पण तमारा कहेलां तत्वनी शंका न थाय, तमारा कहेला रस्तामां अहोरात्र हुं रहुं एज मारी आकांक्षा अने वृत्ति थाओ! हे सर्वज्ञ भगवान! तमने हुं विशेष शुं कहुं? तमाराथी कंइ अजाण्युं नथी मात्र पश्चात्तापथी हुं कर्मजन्य पापनी क्षमा इच्छुं छउं—ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

शिक्षापाठ ५७ वैराग्य ए धर्मनुं स्वरूपछे.

एक वस्त्र लोहीथी मलिनताथी रंगायु तेने जो लोहीथी धोइए तो ते उजळुं थइ शके नहीं; पण वधारे रंगायछे. जो पाणीथी ए वस्त्रने धोइए तो ते मलिनता जवानो संभवछे. आ द्रष्टांत परथी आत्माप विचार करिए. अनादिकाळथी आत्मा संसाररूपी लोहीथी मलिन थयोछे. मलिनता प्रदेशे प्रदेशे व्यापि रही छे! ए मलिनता आपणे विषय शृंगारथी टाळवा धारीए तो टळी शके नहीं. लोहीथी जेम लोही धोवातुं नथी; तेम शृंगारथी करीने विषयजन्य आत्ममलिनता टळनार नथी ए जाणे निश्चयरूपछे. आ जगतमां अनेक धर्ममतो चाले छे ते संबंधी अपक्षपात विचार करतां आगळथी आटलुं विचारवुं अवश्यनुं

छे के ज्यां स्त्रिओ भोगववानो उपदेश कर्यो होय, लक्ष्मीलो-लुपी शिक्षा आपी होय, रंग, राग, गुल्तान अने एशाराम करवानुं तत्त्व बताव्युं होय त्यां आपणा आत्मानी सत् शांति नथी, कारण ए धर्ममत गणीए तो आखो संसार धर्म-मतयुक्त छे. प्रत्येक गृहस्थनुं घर एज योजनाथी भरपूर होय छे. छोकरांछैयां, स्त्री, रंग राग तान त्यां जाम्युं पड्युं होय छे अने ते घर धर्ममंदिर कहेवुं, तो पछी अधर्मस्थानक कयुं! अने जेम वर्तिए छीए तेम वर्तवाथी खोटुं पण शुं! कोइ एम कहे के एवां धर्ममंदिरथी तो प्रभूनी भक्ति थइ शके छे तो तेओने माटे खेदपूर्वक आटलोज उत्तर देवानो छे के ते परमा-त्मतत्त्व अने तेनी वैराग्यमय भक्तिने जाणता नथी. गमे तेम हो पण आपणे आपणा मूळ विचारपर आववुं जोइए. तत्त्व-ज्ञानीनी दृष्टिए आत्मा संसारमां विषयादिक मलिनताथी पर्यटन करे छे. ते मलिनतानो क्षय विशुद्ध भाव जळथी होवो जोइए. अर्हंतनां तत्त्वरूप साबु अने वैराग्यरूपी जळ वडे, उत्तम आचा-ररूप पथ्थरपर, आत्मवस्त्रने धोनार निर्ग्रंथ गुरु छे.

आमां जो वैराग्यजळ न होय तो बीजां बधां साहि-त्यो कंइ करी शकतां नथी; माटे वैराग्यने धर्मनुं स्वरूप कही शकीए. अर्हंतप्रणीत तत्त्व वैराग्यज बोधे छे, तो तेज धर्मनुं स्वरूप एम गणवुं.

कंइक ओछो खोटो होय. अथवा प्रतिवादी कंईक वधारे साचो, अने वादी कंईक ओछो खोटो होय. केवळ बन्नेनी वात खोटी होवी न जोइए. आम विचारकरतां तो एक धर्ममत साचो ठरे; अने बाकीना खोटा ठरे.

जिज्ञासु—ए एक आश्चर्यकारक वात छे. सर्वने असत्य के सर्वने सत्य केम कही शकाय? जो सर्वने असत्य एम कहीए तो आपणे नास्तिक ठरीए; अने धर्मनी सच्चाइ जाय. आ तो निश्चय छे के धर्मनी सच्चाइ छे तेम जगत्पर तेनी अवश्य छे. एक धर्ममत सत्य अने बाकीना सर्व असत्य एम कहीए तो ते वात सिद्ध करी बताववी जोइए. सर्व सत्य कहीए तो तो ए रेतीनी भींत जेवी वात करी; कारण के तो आटला बधा मतभेद केम पडे? जो कंइ पण मतभेद न होय तो पछी जुदा जुदा पोतपोताना मतो स्थापवा शा माटे यत्न करे? एम अन्योन्यना विरोधथी थोडीवार अटकवुं पडे छे.

तोपण ते संबंधी अत्रे कंइ समाधान करीशुं. ए समाधान सत्य अने मध्यस्थभावनानी द्रष्टिथी कर्युं छे. एकांतिक के मतांतिक द्रष्टिथी कर्युं नथी. पक्षपाती के अविवेकी नथी; उत्तम अने विचारवा जेवुं छे. देखावे ए सामान्य लागशे; परंतु सूक्ष्मविचारथी बहु भेदवाळुं लागशे.

—❧•❧—

शिक्षापाठ ५९ धर्मना मतभेद भाग २.

आटलुं तो तमारे स्पष्ट मानवुं के जेने ते एक धर्म आ लोकपर संपूर्णसत्यता धरावे छे. हवे एक दर्शनने सत्य कहेतां

बाकीना धर्ममतने केवळ असत्य कहेवा पडे; पण हुं एम कही न शकुं. शुद्ध आत्मज्ञानदाता निश्चयनयवडे तो ते असत्यरूप ठरे; परंतु व्यवहारनये ते असत्य कही शकाय नहीं. एक सत्य अने बाकीना अपूर्ण अने सदोष छे एम कहुं छउं. तेमज केटलांक कुतर्कवादी अने नास्तिकछे ते केवळ असत्य छे; परंतु जेओ परलोक संबंधी के पाप संबंधी कंइपण बोध के भय बतावेछे ते जातना धर्ममतने अपूर्ण अने सदोष कही शकाय छे. एक दर्शन जे निर्दोष अने पूर्ण कहेवानुंछे ते विषेनी वात हमणां एक बाजु राखीए.

हवे तमने शंका थशे के सदोष अने अपूर्ण एवुं कथन एना प्रवर्त्तके शा माटे बोध्युं हशे? तेनुं समाधान थवुं जोइए. एनुं समाधान एम छे के ते धर्ममतवाळाओनी ज्यांसुधी बुद्धिनी गति पहोंची त्यां सुधी तेमणे विचारो कर्या. अनुमान, तर्क अने उपमादिक आधारवडे तेओने जे कथन सिद्ध जणायुं ते प्रत्यक्षरूपे जाणे सिद्ध छे एवुं तेमणे दर्शाव्युं; जे पक्ष लीधो तेमां मुख्य एकांतिक वाद लीधो; भक्ति, विश्वास नीति ज्ञान, क्रिया आदि एक पक्षने विशेष लीधो, एथी बीजा मानवा योग्य विषयो तेमणे दूषित करी दीधा. वळी जे विषयो तेमणे वर्णव्या ते सर्व भाव भेदे तेओए कंइ जाण्या नहोता, पण पोतानी बुद्धि अनुसारे बहु वर्णव्या. तार्किक सिद्धांत दृष्टांतादिकथी सामान्य बुद्धिवाळा आगळ के जडभरत आगळ तेओए सिद्ध करी बताव्यां. कीर्ति, लोकहित, के भगवान मनाबानी आकांक्षा एमांना एकादे पण एमना मननी भ्रमना होवाथी

अत्युग्रहशमादिथी तेओ जय पाम्या. केटलाके शृंगार अने लोके-च्छित साधनोथी मनुष्यनां मन हरण कर्यां. दुनियां मोहमां तो मूळे डूबी पडी छे; एटले ए इच्छित दर्शनथी गाडररूपे थ-इने तेओए राजी थइ तेनुं कहेवुं मान्य राख्युं. केटलाके नीति, तथा कंइ वैराग्यादि गुण देखी इत्यादिकथी ते कथन मान्य राख्युं. प्रवर्तकनी बुद्धि तेओ करतां विशेष होवाथी तेने पछी भगवानरूप मानी लीधा. केटलाके वैराग्यथी धर्ममत फेलावी पाछळथी केटलांक सुखशीलियां साधननो बोध खोसी पो-ताना मतनी वृद्धि करी पोतानो मत स्थापन करवानी महान भ्रमणाए अने पोतानी अपूर्णता इत्यादिक गमे ते कारणथी बीजानुं कहेलुं पोताने न रुच्युं एटले तेणे जुदोज राह काढ्यो. आम अनेक मतमतांतरनी जाळ थती गइ. चार पांच पेढी एकनो एक धर्म मत रह्यो एटले पछी ते कुळधर्म थइ पड्यो. एम स्थळे स्थळे थतुं गयुं.

—∻⁂∻—

शिक्षापाठ ६० धर्मना मतभेद भाग ३.

जो एक दर्शन पूर्ण अने सत्य न होय तो बीजा धर्म-दर्शनने अपूर्ण अने असत्य कोइ प्रमाणथी कही शकाय नहीं; ए माटे जे एक दर्शन पूर्ण अने सत्य छे तेना तत्त्वप्रमा-णथी बीजा मतोनी अपूर्णता अने एकांतिकता जोइए.

ए बीजा धर्ममतोमां तत्त्वज्ञान संबंधी यथार्थ सूक्ष्म वि-चारो नथी. केटलाक जगत्कर्तानो बोध करे छे; पण जगत्-कर्ता प्रमाणवडे सिद्ध थइ शकतो नथी. केटलाक ज्ञानथी

मोक्षछे एम कहेछे ते एकांतिक छे; तेमज क्रियाथी मोक्ष छे एम कहेनारा पण एकांतिक छे. ज्ञान, क्रिया ए बन्नेथी मोक्ष कहेनारा तेना यथार्थ स्वरुपने जाणता नथी; अने ए बन्नेना भेद श्रेणिबंध नथी कही शक्या एज एमनी सर्वज्ञतानी खामी जणाइ आवेछे. ए धर्ममतस्थापको सत्देवतत्वमां कहेलां अष्टादश दूषणोथी रहित नहोता एम एओए उपदेशेलां शास्त्रो अथवा तेमना चरित्रोपरथी पण तत्वनी द्रष्टिए जोतां देखायछे. केटलाक मतोमां हिंसा, अब्रह्मचर्य इ. अपवित्र आचरणनो बोध छे ते तो सहजमां अपूर्ण अने सरागीना स्थापेला जोवामां आवेछे. कोइए एमां सर्वव्यापक मोक्ष, कोइए कंइ नहीं ए रुप मोक्ष, कोइए साकारमोक्ष अने कोइए अमूक काळसुधी रही पतित थवुं ए रुप मोक्ष मान्योछे; पण एमांथी कोइ वात तेओनी सप्रमाण थइ शकती नथी. एओना विचारोनुं अपूर्णपणुं निस्पृह तत्ववेत्ताओए दर्शाव्युंछे ते यथावस्थित जाणवुं योग्य छे.

वेद शीवायना बीजा मतोना प्रवर्त्तकोनां चरित्रो अने विचारो इत्यादिक जाणवाथी ते मतो अपूर्ण छे एम जणाई आवे छे. वर्त्तमानमां जे वेदो छे ते घणा प्राचीन ग्रंथो छे तेथी ते मतनुं प्राचीनपणुं छे, परंतु ते पण हिंसाए करीने दूषित होवाथी अपूर्ण छे, तेमज सरागीनां वाक्य छे एम स्पष्ट जणायछे.

जे पूर्ण दर्शन विषे अत्रे कहेवानुंछे ते जैन एटले निरागीनां स्थापन करेलां दर्शन विषे छे. एना बोधदाता सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी हता; काळभेदछे तोपण ए वात सिद्धांतिक जणाय छे. दया, ब्रह्मचर्य, शील, विवेक, वैराग्य ज्ञान,क्रियादि एना जेवां पूर्ण

एकेए वर्णव्यां नथी. तेनी साथे शुद्ध आत्मज्ञान, तेनी कोटिओ, जीवनां च्यवन, जन्म, गति, विगति, योनिद्वार, प्रदेश, काळ, तेनां स्वरुप ए विषे एवो सूक्ष्म बोधछे के जेवडे तेनी सर्वज्ञतानी निःशंकता थाय. काळभेदे परंपराम्नायथी केवळज्ञानादि ज्ञानो जोवामां नथी आवतां, छतां जे जे जिनेश्वरना कहेलां सिद्धांतिक वचनोछे ते अखंडछे. तेओना केटलाक सिद्धांतो एवा सूक्ष्म छे के जे अकेक विचारतां आखी जींदगी वही जाय.

जिनेश्वरनां कहेलां धर्मतत्वथी कोइ पण प्राणीने लेश खेद उत्पन्न थतो नथी. सर्व आत्मानी रक्षा अने सर्वात्मशक्तिनो प्रकाश एमां रह्यो छे. ए भेदो वांचवाथी, समजवाथी, अने ते पर अति अति सूक्ष्म विचार करवाथी आत्मशक्ति प्रकाश पामी जैनदर्शननी सर्वोत्कृष्टपणानी हा कहेवरावे छे. बहु मननथी सर्व धर्ममत जाणी पछी तुलना करनारने आ कथन अवश्य सिद्ध थशे.

निर्दोष दर्शननां मूळतत्वो अने सदोष दर्शननां मूळतत्वोविषे बीजे प्रसंगे विस्तारथी कहीशुं.

शिक्षापाठ ६१ सुखविषेविचार भाग १.

एक ब्राह्मण दरिद्रावस्थाथी बहु पीडातो हतो. तेणे कंटाळीने छेवटे देवनु उपासन करी लक्ष्मी मेळववानो निश्चय कर्यो पोते विद्वान होवाथी उपासन करवा पहेलां विचार कर्यो के कदापि देव तो कोइ तुष्ट थशे; पण पछी ते आगळ सुख

कयुं मागवुं ? तप करी पछी मागवानुं कंइ सूजे नहीं, अथवा न्यूनाधिक सूजे तो करेल तप पण निरर्थक जाय; माटे एक वखत आखा देशमां प्रवास करवो. संसारना महत्पुरुषोनां धाम, वैभव अने सुख जोवां. एम निश्चय करी ते प्रवासमां नीकळी पड्यो. भारतनां जे जे रमणिय अने रीद्धिमान शहेरो हतां ते जोयां. युक्तिप्रयुक्तिए राजाधिराजनां अंतःपुर, सुख अने वैभव जोयां. श्रीमंतोना आवास, वहिवट, बागबगीचा अनेकुटुंब परिवार जोया; पण एथी तेनुं कोइ रीते मन मान्युं नही. कोइने स्त्रीनुं दुःख, कोइने पतिनुं दुःख, कोइने अज्ञानथी दुःख, कोइने वहाल्नोना वियोगनुं दुःख, कोइने निर्धनतानुं दुःख, कोइने लक्ष्मीनी उपाधिनुं दुःख, कोईने शरीर संबंधी दुःख, कोइने पुत्रनुं दुःख, कोइने शत्रुनुं दुःख, कोइने जडतानुं दुःख, कोइने मावापनुं दुःख, कोइने वैधव्य दुःख, कोइने कुटुंबनुं दुःख, कोइने पोताना नीचकुळनुं दुःख, कोइने प्रीतिनुं दुःख, कोइने इर्ष्यानुं दुःख, कोइने हानिनुं दुःख, एम एक, बे विशेष के बधां दुःख स्थळे स्थळे ते विप्रना जोवामां आव्यां. एथी करीने एनुं मन कोई स्थळे मान्युं नहीं; ज्यां जुए त्यां दुःख तो खरुंज. कोई स्थळे संपूर्ण सुख तेना जोवामां आव्युं नहीं. हवे त्यारे शुं मागवुं ? एम विचारतां विचारतां एक महाधनाढ्यनी प्रशंसा सांभळीने ते द्वारिकामां आव्यो. द्वारिका महारीद्धिमान, वैभवयुक्त, बागबगीचावडे करीने सुशोभित अने वस्तीथी भरपूर शहेर तेने लाग्युं. सुंदर अने भव्य आवासो जोतां, अने पूछतां पूछतां ते पेला महाधनाढ्यने

घेर गयो. श्रीमंत सुखग्रहमां बेठा हता. तेणे अतिथि जाणीने ब्राह्मणने सन्मान आप्युं; कुशळता पूछी. अने तेओने माटे भोजननी योजना करावी. जरा वार जवा दइ धीरजथी शेठे ब्राह्मणने पूछ्युं: आपनुं आगमनकारण जो मने कहेवा जेवुं होय तो कहो. ब्राह्मणे कह्युं, हमणा आप क्षमा राखो; आपनो सघळी जातनो वैभव, धाम, बागबगीचा इत्यादि मने देखाडवुं पडशे; ए जोया पछी आगमनकारण कहीश. शेठे एनुं कंइ मर्मरूप कारण जाणीने कह्युं: भले, आनंदपूर्वक आपनी इच्छा प्रमाणे करो. जम्या पछी ब्राह्मणे शेठने पोते साथे आवीने धामादिक बताववा विनंति करी. धनाढ्ये ते मान्य राखी; अने पोते साथे जइ बागबगीचा, धाम, वैभव ए सघळुं देखाड्युं. शेठनी स्त्रि अने पुत्रो पण त्यां ब्राह्मणना जोवामां आव्या. तेओए योग्यतापूर्वक ते ब्राह्मणनो सत्कार कर्यो. एओनां रूप, विनय अने स्वच्छता जोइने तेमज तेओनी मधुरवाणी सांभळीने ब्राह्मण राजी थयो; पछी तेनी दुकाननो वहिवट जोयो. तेमां सोएक वहिवटिया त्यां बेठेला जोया. तेओ पण मायाळु, विनयि अने नम्र ते ब्राह्मणना जोवामां आव्या. एथी ते बहु संतुष्ट थयो. एनुं मन अही कंइक संतोषायुं. सुखी तो जगतमां आज जणाय छे एम तेने लाग्युं.

शिक्षापाठ ६२ सुखविषेविचार भाग २.

केवां घणा सुंदर घर छे! केवी सुंदर तेनी स्वच्छता अने जाळवणी छे! केवी शाणी अने मनोज्ञा तेनी सुशील स्त्री छे!

केवा तेना कांतिमान अने कह्यागरा पुत्रोछे ! केवुं संपीलुं तेनुं कुटुंब छे ! लक्ष्मीनी महेरपण एने त्यां केवीछे ! आखा भारतमां एना जेवो बीजो कोइ सुखी नथी. हवे तप करीने जो हुं मागुं तो आ महाधनाढ्य जेवुंज सघळुं मागुं, बीजी चाहना करुं नहीं.

दीवस वीती गयो अने रात्रि थइ. सुवानो वखत थयो. धनाढ्य अने ब्राह्मण एकांतमां बेठा हता; पछी धनाढ्ये विप्रने आगमन कारण कहेवा विनंति करी.

विप्रः—हुं घेरथी एवो विचार करी नीकळ्यो हतो के वधाथी वधारे सुखी कोण छे ते जोवुं; अने तप करीने पछी एना जेवुं सुख संपादन करवुं. आखा भारत ने तेनां सघळां रमणीय स्थळो जोयां; परंतु कोइ राजाधिराजने त्यां पण मने संपूर्ण सुख जोवामां आव्युं नहीं. ज्यां जोयुं त्यां आधि, व्याधि अने उपाधि जोवामां आवी. आप भणी आवतां आपनी प्रशंसा सांभळी एटले हुं अहीं आव्यो; अने संतोष पण पाम्यो. आपना जेवी रीद्धि, सत्पुत्र, कमाइ, स्त्री, कुटुंब, घर वगेरे मारा जोवामां क्यांय आव्यु नथी. आप पोते पण धर्मशील, सद्गुणी अने जिनेश्वरना उत्तम उपासकछो. एथी हुं एम मानुं छउं के आपना जेवुं सुख बीजे नथी. भारतमां आप विशेष सुखीछो. उपासना करीने कदापि देवकने याचुं तो आपना जेवी सुखस्थिति याचुं.

धनाढ्य—पंडितजी, आप एक बहु मर्मभरेला विचारथी नीकळ्या छो; एटले अवश्य आपने जेम छे तेम स्वानुभवी

वात करुं छउं; पछी जेम तमारी इच्छा थाय तेम करजो. मारे त्यां आपे जेजे सुख जोयां ते ते सुख भारतवर्षमां क्यांय नथी एम आपे कह्युं तो तेम हशे; पण खरुं ए मने संभवतुं नथी; मारो सिद्धांत एवोछेके जगत्‌मां कोइ स्थळे वास्तविक सुख नथी. जगत् दुःखथी करीने दाझतुं छे. तमे मने सुखी जुओ छो परंतु वास्तविक रीते हुं सुखी नथी.

विप्र—आपनुं आ कहेवुं कोइ अनुभवसिद्ध अने मार्मिक हशे. में अनेक शास्त्रो जोयां छे; छतां मर्मपूर्वक विचारो आवा लक्षमां लेवा परिश्रमज लीधो नथी. तेम मने एवो अनुभव सर्वने माटे थइने थयो नथी. हवे आपने शुं दुःख छे ? ते मने कहो.

धनाढ्य—पंडितजी आपनी इच्छाछे तो हुं कहुंछउं. ते लक्षपूर्वक मनन करवा जेवुं छे; अने ए उपरथी कंइ रस्तो पामवा जेवुं छे.

शिक्षापाठ ६२ सुखविषेविचार भाग ३.

जे स्थिति हमणां मारी आप जुओछो तेवी स्थिति लक्ष्मी, कुटुंब अने स्त्री संबंधमां आगळ पण हती. जे वखतनी हुं वात करुं छउं, ते वखतने लगभग वीश वर्ष थयां. व्यापार, अने वैभवनी बहोळाश ए सघळुं वहिवट अवळो पडवाथी घटवा मंड्युं. कोट्याधिपति [illegible] हुं [illegible] खोटना भार वहन करवाथी [illegible] थइ पड्यो. ज्यां केवळ सवळुं धारीने नाख्युं हतुं त्यां अवळुं पड्युं. [illegible]

त्रण पुत्र थया. वहिवट मवळ होवाथी अने नाणुं नाणाने व-
धारतुं होवाथी दश वर्षमां हुं महाकोट्याधिपति थइ पड्यो.
पुत्रनां नीति, विचार, अने बुद्धि उत्तम रहेवा में बहु सुंदर सा-
धनो गोठव्यां. जेथी, तेओ आ स्थिति पाम्या छे. मारां कुटुं-
बीओने योग्य योग्य स्थळ गोठवी तेओनी स्थितिने सुधरती
करी. दुकानना में अमुक नियमो बांध्या. उत्तम धामनो आ-
रंभ पण करी लीधो. आ फक्त एक ममत्व खातर कर्युं. गयेलुं
पाछुं मेळव्युं; अने कुळ परंपरानुं नामांकितपणुं जतुं अटकाव्युं,
एम कहेवराववा माटे में आ सघळुं कर्युं; एने हुं सुख मानतो
नथी. जोके हुं बीजा करतां सुखी छउं; तोपण ए शातावेदनी
छे. सत्सुख नथी. जगत्मां बहुधा करीने अशातावेदनी छे.
में धर्ममां मारो काळ गाळवानो नियम राख्योछे; शास्त्रनां
मनन, सत्पुरुषोना समागम, यमनियम, एक महीनामां बार
दीवस ब्रह्मचर्य, बनतुं गुप्तदान, सर्व व्यवहार संबंधीनी उपा-
धिमांथी केटलोक भाग बहु अंशे में त्याग्योछे. पुत्रोने व्यव-
हारमां यथायोग्य करीने हुं निर्ग्रंथ थवानी इच्छा राखुं छउं.
हमणां निर्ग्रंथ थइ शकुं तेम नथी; एमां संसारमोहिनी के एवुं
कारण नथी; परंतु ते पण धर्मसंबंधी कारण छे. गृहस्थधर्मनां
आचरण बहु कनिष्ट थइ गयांछे; अने मुनियो ते सुधारी श-
कता नथी. गृहस्थ गृहस्थने विशेष बोध करी शके; आचरणथी
पण असर करी शके. एटला माटे थइने धर्मसंबंधे गृहस्थवर्गने
हुं घणे भाग बोधी यमनियममां आणुं छउं. दरसप्ताहिके आ-
पणे त्यां पांचसें जेटला सद्गृहस्थोनी सभा भरायछे. आठ

दीवसनो नवो अनुभव अने बाकीनो आगळनो धर्मानुभव ए-
मने बे त्रण मुहुर्त बोधुं छउं. मारी स्त्री धर्मशास्त्रनो केटलोक
बोध पामेली होवाथी ते पण स्त्रीवर्गने उत्तम यमनियमनो बोध
करी सप्ताहिक सभा भरेछे. पुत्रो पण शास्त्रनो बनतो परि-
चय राखेछे. विद्वानोनुं सन्मान, अतिथिनो विनय, अने
सामान्य सत्यता—एकज भाव—एवा नियमो बहुधा मारा
अनुचरो पण सेवेछे. एओ बधा एथी शाता भोगवी शकेछे.
लक्ष्मीनी साथे मारा नीतिधर्म, सद्गुण, विनय एणे जनसमु-
दायने बहु सारी असर करी छे. राजासहित पण मारी नी-
तिवात अंगीकार करे तेवुं थयुंछे. आ सघळुं आत्मप्रशंसा माटे
हुं कहेतो नथी, ए आपे स्मृतिमां राखवुं; मात्र आपना पूछेला
खुलासा दाखल आ सघळुं संक्षेपमां कहेतो जउं छउं.

शिक्षापाठ ६९ सुखविषेविचार भाग ६.

आ सघळां उपरथी हुं सुखी छउं एम आपने लागी श-
कशे, अने सामान्यविचारे मने बहुसुखी मानो तो मानी
शकाय तेम छे. धर्म, शील अने नीतिथी तेमज शास्त्रावधानथी
मने जे आनंद उपजेछे ते अवर्णनिय छे. पण तत्त्व दृष्टिथी हुं
सुखी न मनाउं. ज्यांसुधी सर्व प्रकारे बाह्य अने अभ्यंतर प-
रिग्रह में त्याग्यो नथी, त्यांसुधी राग द्वेषनो भावछे. जो के
ते बहु अंशे छे नथी पण छे; तो त्यां उपाधि पणछे. सर्व-
संग परित्याग करवानी मारी संपूर्ण आकांक्षा छे; पण ज्यां-

सुधी तेम थयुं नथी त्यां सुधी गणातो इतु कोइ प्रियजननो वियोग, व्यवहारमां हानि, कुटुंबीनुं दुःख ए थोडे अंशे पण उपाधि आपी शके. पोताना देहपर मोत शिवाय पण नाना प्रकारना रोगनो संभवछे. माटे केवळ निर्ग्रंथ, बाह्याभ्यंतर परिग्रहनो त्याग, अल्पारंभनो त्याग ए सघळुं नथी थयुं त्यां सुधी, हुं मने केवळ सुखी मानतो नथी. हवे आपने तत्त्वनी दृष्टिए विचारतां मालम पडशे के लक्ष्मी, स्त्री, पुत्र के कुटुंब एवडे सुख नथी. अने एने सुख गणुं तो ज्यारे मारी स्थिति पतित थइ हती त्यारे ए सुख क्यां गयुं हतुं? जेनो वियोगछे, जे क्षणभंगुर छे अने ज्यां अव्याबाध पणुं नथी ते संपूर्ण के वास्तविक सुख नथी. एटला माटे थइने हुं मने सुखी कही शकतो नथी. हुं बहु विचारी विचारी व्यापार वगेरे करतो हतो तोपण मारे आरंभोपाधि, अनीति अने लेश पण कपट सेववुं पड्युं नथी, एम तो नथीज. अनेक प्रकारना आरंभ, अने कपट मारे सेववां पड्यां हतां. आप जो धारता होके देवोपासनथी लक्ष्मी प्राप्त करवी, तो ते जो पुण्य नहोय तो कोइ काळे मळनार नथी. पुण्यथी पामेली लक्ष्मी महारंभ कपट अने मानप्रमुख वधारवाद ते महापापनां कारण छे; पाप नरकमां नाखेछे. पापथी, आत्मा महान् मनुष्यदेह एळे गुमावी दे छे. एकतो जाणे पुण्यने खाइ जवां; बाकी वळी पापनुं बंधन करवुं; लक्ष्मीनी अने ते वडे आखा संसारनी उपाधि भोगववी ते हुं चोक्कस के विवेकी आत्माने मान्य न होय. मेंजे कारणथी लक्ष्मी उपार्जन करी हती,

ते कारण में आगळ आपने जणाव्युं हतुं. जेम आपनी इच्छा होय तेम करो. आप विद्वान छो. हुं विद्वानने चाहुं छउं. आपनी अभिज्ञापा होयतो धर्मध्यानमां प्रसक्त थइ सहकुटुंब अहीं भले रहो. आपनी उपजीविकानी सरळ योजना जेम कहो तेम हुं रुचिपूर्वक करावी आपुं. अहीं शास्त्राध्ययन अने सद्वस्तुनो उपदेश करो मिथ्यारंभोपाधिनी लोलुप्तामां हुं धारुं छउं के न पडो, पछी आपनी जेवी ईच्छा.

पंडित—आपे आपना अनुभवनी बहु मनन करवा जेवी आख्यायिका कही. आप अवश्य कोइ महात्माछो. पुण्यानुबंधीपुण्यवान जीव छो; विवेकी छो; आपनी विचारशक्ति अद्भूत छे; हुं दरिद्रताथी कंटाळीने जे इच्छा राखतो हतो ते एकांतिक हती. आवा सर्व प्रकारना विवेकी विचार में कर्या नहोता. आवो अनुभव—आवी विवेकशक्ति हुं गमे तेवो विद्वान छउं छतां मारामां नथी, ए वात हुं सत्यज कहुं छउं. आपे मारे माटे जे योजना दर्शावी ते माटे आपनो बहु उपकार मानुं छउं; अने नम्रतापूर्वक ए हुं अंगिकार करवा हर्ष बतावुं छउं. हुं उपाधिने चहातो नथी. लक्ष्मीनो फंद उपाधिज आपे छे. आपनुं अनुभवसिद्ध कथन मने बहु रुच्युं छे. संसार बळतोज छे. एमां सुख नथी. आपे निरुपाधि मुनिसुखनी प्रशंसा कही ते सत्य छे. ते सन्मार्ग परिणामे सर्वोपाधि, आधि व्याधिथी तेमज सर्व अज्ञानभावथी रहित एवा शाश्वत मोक्षनो हेतु छे.

शिक्षापाठ ६६ सुखविषेविचार भाग ६.

धनाढ्यः—आपने मारी वात रुची एथी हुं निराभिमानपूर्वक आनंद पामुं छउं. आपने माटे हुं योग्य योजना करीश. मारा सामान्य विचारो कथानुरुप अहीं कहेवानी हुं आज्ञा लउं छउंः

जेओ मात्र लक्ष्मीने उपार्जन करवामां कपट, लोभ अने मायामां मुंझाया पड्या छे ते बहु दुःखीछे. तेनो ते पुरो उपयोग के अधुरो उपयोग करी शकता नथी. मात्र उपाधिज भोगवे छे. ते असंख्यात पाप करेछे. काळ अचानक लइने उपाडी जाय छे. अधोगति पामी ते जीव अनंतसंसार वधारे छे. मळेलो मनुष्य देह निर्माल्य करी नाखे छे जेथी ते निरंतर दुःखीज छे.

जेओए पोतानां उपजीविका जेटलां साधनमात्र अल्पारंभथी राख्यां छे, शुद्ध एक पत्निव्रत, संतोष, परात्मानी रक्षा, यम, नियम, परोपकार, अल्पराग, अल्पद्रव्यमाया अने सत्य तेमज शास्त्राध्ययन राखेल छे, सत्पुरुषोने सेवेछे, निर्ग्रंथतानो मनोर्थ राख्यो छे, बहु प्रकारे करीने संसारथी जे त्यागी जेवा छे, जेनां वैराग्य अने विवेक उत्कृष्ट छे तेवा पुरुषो पवित्रतामां सुखपूर्वक काळ निर्गमन करे छे.

सर्व प्रकारना आरंभ अने परिग्रहथी जेओ रहित थयाछे. द्रव्यथी, क्षेत्रथी, काळथी अने भावथी जेओ अप्रतिबंधपणे विचरे छे, शत्रु, मित्र प्रत्ये सम न द्रष्टिवाळा अने शुद्ध आत्मध्यानमां

जेमनो काळ निर्गमन थाय छे, अथवा स्वाध्याय ध्यानमां लीन छे. जितेंद्रिय अने जित कषाय एवा ते निर्ग्रंथो परम सुखीछे.

सर्व घनघाती कर्मनो क्षय जेमणे कर्यो छे; चार कर्म पातळां जेनां पड्यां छे; जे मुक्त छे; जे अनंतज्ञानी अने अनंतदर्शी छे ते तो संपूर्ण सुखीज छे. मोक्षमां तेओ अनंत जीवनना अनंतसुखमां सर्व कर्मविरक्तताथी विराजे छे.

आम सत्पुरुषोए कहेलो मत मने मान्य छे. पहेलो तो मने त्याज्य छे. बीजो हमणां मान्य छे; अने घणे भागे ए ग्रहण करवानो मारो बोध छे. त्रीजो बहु मान्य छे. अने चोथो तो सर्वमान्य अने सच्चिदानंद स्वरुप छे.

एम पंडितजी आपनी अने मारी सुखसंबंधी वातचित थइ. प्रसंगोपात ते वात चर्चता जइशुं. तेपर विचार करीशुं. आ विचारो आपने कह्याथी मने बहु आनंद थयो छे. आप तेवा विचारने अनुकूळ थया एथी वळी आनंदमां वृद्धि थइ छे. एम परस्पर वातचित करतां करतां हर्षभेर पछी तेओ समाधिभावथी शयन करी गया.

जे विवेकीओ आ सुखसंबंधी विचार करशे तेओ बहु तत्त्व अने आत्मश्रेणिनी उत्कृष्टताने पामशे. एमां कहेला अल्पारंभी, निरारंभी अने सर्वमुक्त लक्षणो लक्षपूर्वक मनन करवा जेवां छे. जेम बने तेम अल्पारंभी थइ सद्भावथी जनसमुदायनां हित भणी वळवुं, परोपकार, दया, शांति क्षमा अने पवित्रतानुं सेवन करवुं ए बहु सुखदायक छे. निर्ग्रंथताविषे तो विशेष कहेवानुं नथी. मुक्तात्मा अनंत सुखमयज छे.

रे! आत्म तारो! आत्म तारो! शीघ्र एने ओळखो;
सर्वात्ममां समदृष्टि द्यो आ वचनने हृदये लखो. ५

शिक्षापाठ ६८ जितेंद्रियता.

ज्यांसुधी जीभ स्वादिष्ट भोजन चाहेछे; ज्यांसुधी नासिका सुगंधी चाहेछे; ज्यांसुधी कान वारांगनाआदिनां गायन अने वाजित्र चाहेछे; ज्यांसुधी आंख वनोपवन जोवानुं लक्ष राखेछे; ज्यांसुधी त्वचा सुगंधीलेपन चाहेछे, त्यांसुधी, ते मनुष्य निरागी निर्ग्रंथ, निःपरिग्रही, निरारंभी अने ब्रह्मचारी थइ शकतो नथी. मनने वश करवुं ए सर्वोत्तम छे. एना वडे सघळी इंद्रियो वश करी शकाय छे. मन जीतवुं बहु दुर्घट छे. एक समयमां असंख्याता योजन चालनार अश्व ते मन छे. एने थकाववुं बहु दुर्लभ छे. एनी गति चपळ अने न झाली शकाय तेवी छे. महा ज्ञानीओए ज्ञानरूपी लगामवडे एने स्तंभित राखी सर्व जय कर्योछे.

उत्तराध्ययन सूत्रमां नमिराज महर्षिए शक्रेंद्रने एम कह्युं के दश लाख सुभटने जीतनार कइक पड्या छे; परंतु आत्माने जीतनारा बहु दुर्लभ छे; अने ते दश लाख सुभटने जीतनार करतां अत्युत्तम छे.

मनज सर्वोपाधिनी जन्मदाता भूमिका छे. मनज बंध अने मोक्षनुं कारण छे. मनज सर्व संसारनी मोहिनीरूप छे. ए वश थतां आत्मस्वरूपने पामवुं लेश मात्र दुर्लभ ...

मनवडे इंद्रियोनी लोलुपता छे. भोजन, वाजिंत्र, सुगंधी, स्त्रीनुं निरीक्षण, सुंदर विलेपन ए सघळुं मनज मागे छे. ए मोहिनी आडे ते धर्मने संभारवा पण देतुं नथी. संभार्या पछी सावधान थवा देतुं नथी. सावधान थया पछी पतितता करवामां प्रवृत थाय छे. एमां नथी फावतुं त्यारे सावधानीमां कंइ न्यूनता पहोंचाडे छे. जेओ ए न्यूनता पण न पामतां अडग रहीने ते मनने जीते छे तेओ सर्वथा सिद्धिने पामे छे.

मन कोइथीज अकस्मात जीती शकायछे, नहींतो गृहस्थाश्रमे अभ्यास करीने जीतायछे; ए अभ्यास निर्ग्रंथतामां बहु थइ शकेछे छतां सामान्य परिचय मागीए तो तेनो मुख्य मार्ग आ छे के ते जे दुरिच्छा करे तेने भूली जवी तेम करवुं नहीं. ते ज्यारे शब्दस्पर्शादि विलास इच्छे त्यारे आपवा नहीं. टूंकामां आपणे एथी दोरावुं नहीं पण आपणे एने दोरवुं; मोक्षमार्ग चिंतववामां रोकवुं. जितेंद्रियता विना सर्व प्रकारनी उपाधि ऊभीज रही छे. त्यागे न त्याग्या जेवो थाय छे, लोकलज्जाए तेने सेववो पडे छे. माटे अभ्यासे करीने पण मनने स्वाधीनतामां लइ अवश्य आत्महित करवुं.

शिक्षापाठ ६९. ब्रह्मचर्यनी नववाड.

ज्ञानीओए थोडा शब्दोमां केवा भेद अने केवुं स्वरूप

थवावेल छे ! ए वडे केटली बधी आलोचना पामडे! ब्रह्मचर्य जेवा गंभिर विषयनुं स्वरुप संक्षेपमां अति चमत्कारिक रीते आप्युं छे. ब्रह्मचर्यरुपी एक सुंदर झाड अने तेने रक्षा करनारी जे नव विधियो तेने वाडनु रुप आपी आचार पाळवामां विशेष स्मृति रही शके एवी सरळता करी छे. ए नव वाड जेम छे तेम अहीं कही जउं छउं.

१ वसति. ब्रह्मचारी साधुए स्त्री, पशु के पंडग एथी संयुक्त वसतिमां रहेवुं नहीं. स्त्री बे प्रकारनी छे;—मनुष्यिणी अने देवांगना. ए प्रत्येकना पाछा बे बे भेद छे. एकतो मूळ अने बीजो स्त्रीनी मूर्ति के चित्र. एमांथी गमे ते प्रकारनी स्त्री ज्यां होय त्यां ब्रह्मचारी साधुए न रहेवुं, केमके ए विकारहेतु छे. पशु एटले तिर्यंचणी. गाय भेंस इत्यादिक जे स्थळे होय ते स्थळे न रहेवुं; अने पंडग एटले नपुंसक एनो वास होय त्यां पण न रहेवुं. एवा प्रकारनो वास ब्रह्मचर्यनी हानि करे छे. तेओना कामचेष्टा हाव भाव इत्यादिक विकारो मनने भ्रष्ट करे छे.

२ कथा. मात्र एकली स्त्रिओनेज के एकज स्त्रीने धर्मोपदेश ब्रह्मचारीए न करवो. कथा ए मोहनी उत्पत्तिरुप छे. ब्रह्मचारीए स्त्रीना रुप कामविलास संबंधी ग्रंथो वांचवा नहीं. तेमज जेथी चित्त चळे एवा प्रकारनी गमे ते शृंगार संबंधी कथा ब्रह्मचारीए करवी नहीं.

३ आसन- स्त्रिओनी साथे एक आसने न बेसवुं तेमज

धा ए तमारा सांभळवामां आवी हशे; परंतु गृहस्थावासमां अ-
मुक अमुक दिवस ब्रह्मचर्य धारण करवामां अभ्यासीओने
लक्षमां रहेवा अहीं आगळ कंइक समजणपूर्वक कही छे.

—:o:—

शिक्षापाठ ७० सनत्कुमार भाग १.

चक्रवर्तीना वैभवमां शी खामी होय! सनत्कुमार ए च-
क्रवर्ती हतो. तेनां वर्ण अने रूप अत्युत्तम हतां. एक वेळा
सुधर्मसभामां ते रूपनी स्तुति थइ; कोइ बे देवोने ते वात
रुची नहीं; पछी तेओ ते शंका टाळवाने विप्ररूपे सनत्कुमार-
नां अंतःपुरमां गया. सनत्कुमारनो देह ते वेळा खेळथी भर्यो
हतो. तेने अंग मर्दनादिक पदार्थोनुं मात्र विलेपन हतुं. तेणे
एक नानुं पंचीयुं पहेर्युं हतुं. अने ते स्नान मज्जन करवा माटे
बेठा हता. विप्ररूपे आवेला देवता तेनुं मनोहर मुख, कंचनव-
र्णि काया, अने चंद्र जेवी कांति जोइने बहु आनंद पाम्या,
अने माथुं धुणाव्युं. आ जोईने चक्रवर्तीए पूछ्युं: तमे माथुं शा
माटे धुणाव्युं! देवोए कह्युं, अमे तमारुं रूप अने वर्ण निरख-
वा माटे बहु अभिलाषी हता. स्थळे स्थळे तमारा वर्ण रूपनी
स्तुति सांभळी हती; आजे अमे ते प्रत्यक्ष जोयुं, जेथी अमने
पूर्ण आनंद उपज्यो. माथुं धुणाव्युं एनुं कारण एके जेवुं लो-
कोमां कहेवायछे तेवुंज रूपछे. एथी विशेषछे पण ओछुं नथी.
सनत्कुमार स्वरूपवर्णनी स्तुतिथी प्रभुत्व लावी बोल्यो. तमे
आ वेळा मारुं रूप जोयुं ते भले, परंतु हुं राजसभामां वस्त्रालं-
कार धारण करी, केवळ सज्ज थइने ज्यारे सिंहासनपर बेसुं

छउं त्यारे, मारुं रूप अने मारो वर्ण जोवा योग्य छे. अत्यारे तो हुं खेळभरी कायाए बेठो छउं. जो ते वेळा तमे मारां रूप-वर्ण जुओ तो अद्भुत चमत्कारने पामो अने चकित थइ जाओ. देवोए कह्युं, त्यारे पछी अमे राजसभामां आवीशुं; एम कहीने त्यांथी चाल्या गया. सनत्कुमारे त्यार पछी उत्तम वस्त्रालंकारो धारण कर्या. अनेक उपचारथी जेम पोतानी काया विशेष आश्चर्यता उपजावे तेम करीने ते राजसभामां आवी सिंहासनपर बेठो. आजुबाजु समर्थ मंत्रियो, सुभटो, विद्वानो अने अन्य सभासदो योग्य आसने बेसी गया हता. राजेश्वर चामर छत्रथी विंझाता अने खमा खमाथी वधावातां विशेष शोभी रह्या छे, त्यां पेला देवताओ पाछा विप्ररूपे आव्या. अद्भुत रूपवर्णथी आनंद पामवाने बदले जाणे खेद पाम्या छे एवा स्वरूपमां तेओए माथुं धुणाव्युं. चक्रवर्तीए पूछ्युं, अहो ब्राह्मणो! गइ वेळा करतां आ वेळा तमे जूदा रूपमां माथुं धुणाव्युं एनुं शुं कारण छे? ते मने कहो अवधिज्ञानानुसारे विप्रे कह्युं के हे, महाराजा! ते रूपमां अने आ रूपमां भूमी आकाशनो फेर पडी गयो छे. चक्रवर्तीए ते स्पष्ट समजाववाने कह्युं. ब्राह्मणोए कह्युं, अधिराज! तमारी काया प्रथम अमृततुल्य हती. आ वेळा झेर तुल्य छे. ज्यारे अमृततुल्य अंग हतुं त्यारे आनंद पाम्या, अने आ वेळा झेरतुल्य छे त्यारे खेद पाम्या. अमे कहीए छीए ते वातनी सिद्धता करवी होय तो तमे तांबूल थुंको, तत्काळ ते पर माखी बेसशे अने ते परलोक पहोंची जशे.

शिक्षापाठ ७१ सनत्कुमार भाग २.

सनत्कुमारे ए परीक्षा करी तो सत्य ठरी. पूर्वित कर्मनां पापनो जे भाग तेमां आ कायाना मद संबंधीनुं भेळवण थवाथी ए चक्रवर्तिकाया झेरमय थइ गइ हती. विनाशी अने अशुचिमय कायानो आवो प्रपंच जोइने सनत्कुमारने अंतःकरणमां वैराग्य उत्पन्न थयो. आ संसार केवळ तजवा योग्य छे. आवीने आवी अशुचि स्त्री, पुत्र, मित्रादिकनां शरीरमां रही छे. ए सघळुं मोहमान करवा योग्य नथी, एम विचारीने ते छ खंडनी प्रभुता त्यागी चाली नीकळ्या. साधुरूपे ज्यारे विचरता हता त्यारे तेओने महारोग उत्पन्न थयो. तेनां सत्यत्वनी परीक्षा लेवाने कोइ देव त्यां वैदरूपे आव्यो. साधुने कह्युं, हुं बहु कुशळ राजवैद छउं. तमारी काया रोगनो भोग थयेली छे. जो इच्छा होय तो तत्काळ हुं ते रोगने टाळी आपुं. साधु बोल्या, हे वैद ! कर्मरूपी रोग महोन्मत्त छे; ए रोग टाळवानी तमारी जो समर्थता होय तो भले मारो ए रोग टाळो, ए समर्थता न होय तो आ रोग भले रह्यो. देवता बोल्यो, ए रोग टाळवानी समर्थता नथी, साधुए पोतानी लब्धिनां परिपूर्ण प्रबळवडे थुंकवाळी अंगुलि करी ते रोगने खरडी के तत्काळ ते रोग नाश थयो; अने काया पाछी हती तेवी बनी गइ. पछी ते वेळा देवे पोतानुं स्वरूप प्रकाश्युं; धन्यवाद गाइ वंदन करी पोताने स्थानक गयो.

सनत्कुमार जेवा [illegible] दर्शानीनां

साथे लीधो. नगरमां आव्या पछी तेणे भीलने तेनी जींदगीमां नहीं जोयेली वस्तुमां राख्यो. सुंदर महेलमां, कने अनेक अनुचरो; मनोहर छत्रपलंग, अने स्वादिष्ट भोजनथी मंदमंद पवनमां, सुगंधी विलेपनमां तेने आनंद आनंद करी आप्यो. विविध जातिना हीरामाणेक, मौक्तिक, मणिरत्न अने रंग बेरंगी अमूल्य चीजो निरंतर ते भीलने जोवा माटे मोकल्यां करे बागबगीचामां फरवा हरवा मोकले. एम राजा तेने सुख आप्यां करतो हतो. कोइ रात्रे बधां सूइ रह्यां हतां, त्यारे ते भीलने बाळबच्चा सांभरी आव्यां एटले ते त्यांथी कंइ लीधा कर्याविगर एकाएक नीकळी पड्यो. जइने पोतानां कुटुंबीने मळ्यो. ते बधांये मळीने पूछयुं के तुं क्यां हतो ? भीले कह्युं, बहु सुखमां; त्यां में बहु वखाणवा लायक वस्तुओ जोइ.

कुटुंबीओ—पण ते केवी ? ते तो अमने कहे.

भील—शुं कहुं, अहीं एवी एके वस्तुज नथी.

कुटुंबीओ—एम होय के! आ शंखलां, छींप, कोडां केवां मजानां पड्यांछे; त्यां कोइ एवी जोवालायक वस्तु हती ?

भील—नहीं,भाइ,एवी चीज तो अहीं एके नथी.एना सोमा भागनी के हजारमा भागनी पण मनोहर चीज अहीं नथी.

कुटुंबीओ—त्यारे तो तुं बोल्याविना बेठो रहे. तने भ्रमणा थइछे; आथी ते पछी सारुं शुं हशे ?

हे गौतम! जेम ए भील राजवैभवसुख भोगवी आव्यो हतो; तेमज जाणतो हतो, छतां उपमा योग्य वस्तु नहीं मळवाथी ते कंइ कही शकतो नहोतो, तेम अनुपमेय मोक्षने स-

स्वरूपानंद स्वरूपमय निर्विकारी मोक्षना सुखना असंख्यातमा भागने पण योग्य उपमेय नहीं मळवाथी हुं तने कही शकतो नथी.

मोक्षना स्वरूपविषे शंका करनारा तो कुतर्कवादी छे; एओने क्षणिक सुखसंबंधी विचार आडे सत्सुखनो विचार नथी. वळी कोई आत्मिकज्ञानहीन एम पण कहे छे के आथी कोई विशेष सुखनुं साधन त्यां रह्युं नहि एटले अनंत अव्याबाध सुख कही दे छे, आ एनुं कथन विवेकी नथी. निद्रा प्रत्येक मानवीने प्रिय छे; पण तेमां तेओ कंई जाणी के देखी शकता नथी; अने जाणवामां आवे तो मात्र स्वप्नोपाधिनुं मिथ्यापणुं आवे; जेनी कंई असरपण थाय ए स्वप्ना वगरनी निद्रा जेमां सूक्ष्मस्थूळ सर्व जाणी अने देखी शकाय; अने निरुपाधिथी शांत ऊंघ लई शकाय तो तेनुं ते वर्णन शुं करी शके? एने उपमा पण शी आपे? आ तो स्थूळ दृष्टांत छे; पण बाळविवेकी ए परथी कंई विचार करी शके ए माटे कह्युं छे.

भीलनुं दृष्टांत, समजाववा भाषाभेद फेरफारथी तमने कही बताव्युं.

शिक्षापाठ ७४ धर्मध्यान भाग १.

भगवाने चार प्रकारनां ध्यान कह्यां छे. आर्त्त, रौद्र, धर्म अने शुक्ल. पहेलां बे ध्यान त्यागवा योग्य छे. पाछळनां बे ध्यान आत्मसार्थकरूप छे. श्रुतज्ञानना भेद जाणवा माटे, शास्त्र [illegible] कुशळ थवा माटे, निर्ग्रंथ प्रवचननुं तत्त्व पामवा माटे, सत्पुरुषोए [illegible] योग्य, [illegible] अने ग्रहवा [illegible]

योग्य धर्मध्यानना मुख्य सोळ भेद छे. पहेलां चार भेद कहुं छडं. १ आणाविजवे (आज्ञाविचय). २ आवायविजय (अपायविचय). ३ विवागविजवे (विपाकविचय). ४ सठांणविजय (संस्थानविचयं). १ आज्ञाविचय. आज्ञा एटले सर्वज्ञ भगवाने धर्मतत्त्व संबंधी जे जे कह्युं छे ते ते सत्य छे; एमां शंका करवा जेवुं नथी; काळनी हीनताथी, उत्तम ज्ञानना विच्छेद जवाथी; बुद्धिनी मंदताथी के एवां अन्य कोइ कारणथी मारा समजवामां ते तत्त्व आवतुं नथी. परंतु अर्हत भगवंते अंश मात्र पण माया युक्त के असत्य कह्युं नथीज, कारण एओ निरागी, त्यागी, अने निस्पृही हता. मृषा कहेवानुं कंइ कारण एमने हतुं नहीं. तेम एओ सर्वदर्शी होवाथी अज्ञानथी पण मृषा कहे नहीं, ज्यां अज्ञानज नथी, त्यां ए संबंधी मृषा क्यांथी होय ! एवुं जे चिंतन करवुं ते 'आज्ञाविचय' नामनो प्रथम भेद छे. २ अपायविचय. राग, द्वेष, काम, क्रोध ए वगेरेथीज जीवने जे दुःख उत्पन्न थाय छे तेथीज तेने भवमां भटकवुं पडे छे. तेनुं जे चिंतवन करवुं ते 'अपायविचय' नामे बीजो भेद छे. अपाय एटले दुःख. ३ विपाकविचय. हुं जे जे क्षणे क्षणे जे जे दुःख सहन करुं छडं, भवाटविमां पर्यटन करुं छडं, अज्ञानादिक पामुं छडं, ते सघळुं कर्मनां फळना उदय वडे छे, एम चिंतववुं ते धर्म ध्यानमो त्रीजो 'कर्मविपाक' चिंतन भेद छे. ४ संस्थानविचय. त्रणलोकनुं स्वरूप चिंतववुं ते. लोकस्वरूप सुप्रतिष्टिकने आकारे छे जीव अजीवे करीने संपूर्ण भरपूर छे. असंख्यात योजननी कोटानुकोटिए तिरछो लोक छे ज्यां अन-

ख्याता द्वीप—समुद्र छे. असंख्याता ज्योतिष्यि, वाणव्यंतरादिकना निवास छे. उत्पाद, व्यय अने ध्रुवतानी विचित्रता एमां लागी पडी छे. अढीद्वीपमां जघन्य तीर्थंकर २०, उत्कृष्ट एकसो सित्तेर होय. तेओ तथा केवळी भगवान अने निग्रंथ मुनिराज विचरे छे, तेओने "वंदामि, नमंसामि, सक्कारेमि, सम्माणेमि, कल्लाणं, मंगळं, देवयं, चेइयं पज्जुवासामि" एम तेमज त्यां वसतां श्रावक, श्राविकानां गुणग्राम करीए. ते त्रिछालोकथकी असंख्यात गुणो अधिक उर्द्ध लोक छे. त्यां अनेक प्रकारना देवताओना निवास छे. पछी इषत् प्राग्भाराछे. ते पछी मुक्तात्माओ विराजे छे. तेने "वंदामि, यावत् पज्जुवासामि" ते उर्द्ध लोकथी कंइक विशेष अधो लोक छे, त्यां अनंत दुःखथी भरेला नर्कावास अने भुवन पतिनां भुवनादिकछे. ए त्रण लोकनां सर्व स्थानक आ आत्माए सम्यक्त्वरहितकरणीथी अनंतिवार जन्ममरण करी स्पर्शी मूक्यां छे, एम जे चिंतन करवुं ते संस्थान विचय नामे धर्म ध्याननो चोथो भेदछे. ए चार भेद विचारीने सम्यक्त्वसहित श्रुत अने चारित्र धर्मनी आराधना करवी. जेथी ए अनंत जन्म मरण टळे. ए धर्मध्यानना चार भेद स्मरणमां राखवा.

शिक्षापाठ ७५ धर्मध्यान भाग २.

धर्मध्यानना चार लक्षण कहुं छउं. आज्ञारुचि—एटले वीतराग भगवाननी आज्ञा अंगीकार करवानी रुचि उपजे ते. २ निसर्ग रुचि—आत्मा स्वाभाविकपणे जातिस्मरणा-

दिक ज्ञाने करी श्रुत सहित चारित्र धर्म धरवानी रुचि पामे तेने निसर्ग रुचि कही छे. ३ सूत्र रुचि. श्रुतज्ञान, अने अनंत वत्त्वना भेदने माटे भाखेलां भगवानना पवित्र—वचनोनुं जेमां गुंथन थयुं छे, ते सूत्र श्रवण करवा, मनन करवा, अने भावथी पठन करवानी रुचि उपजे ते सूत्र रुचि. ४ उपदेशरुचि. अज्ञाने करीने उपार्जेलां कर्म ज्ञाने करीने खपावीए, तेमज ज्ञानवडे करीने नवां कर्म न बांधीए. मिथ्यात्वे करीने उपार्ज्यां कर्म ते सम्यग्भावथी खपावीए, सम्यग्भावथी नवां कर्म न बांधीए. अवैराग्य करीने उपार्ज्यां कर्म ते वैराग्ये करीने खपावीए अने वैराग्यवडे करीने पाछां नवां कर्म न बांधीए. कषाये करी उपार्ज्यां कर्म ते कषाय टाळीने खपावीए, एथी नवां कर्म न बांधीए. अशुभ योगे करी उपार्ज्यां कर्म ते शुभ योगे करी खपावीए, शुभ योगेकरी नवां कर्म न बांधीए. पांच इंद्रियना स्वादरुप आश्रवे करी उपार्ज्यां कर्म ते संवरे करी खपावीए. तपरुप संवरे करी नवां कर्म न बांधीए. ते माटे अज्ञानादिक आश्रवमार्ग छांडीने ज्ञानादिक संवरमार्ग ग्रहण करवा माटे तीर्थंकर भगवंतनो उपदेश सांभळवानी रुचि उपजे तेने उपदेश रुचि कहीए. ए धर्मध्याननां चार लक्षण कहेवायां.

धर्म ध्यानना चार आलंबन कहुं छउं १ वांचना २ पृच्छना ३ परावर्तन ४ धर्मकथा. [illegible] वांचना वडे विनय सहित निर्जरा [illegible] ज्ञान [illegible] सूत्रना अर्थनां [illegible] [illegible] सूत्र वांचना [illegible] [illegible] जिनेश्वर भगवंतना [illegible] [illegible] निवारवाने

१०

माटे तेमज अन्यना तत्त्वनी मध्यस्थ परीक्षाने माटे यथायोग्य विनय सहित गुर्वादिकने प्रश्न पूछीए तेने पृच्छना कहीए. ३ परावर्त्तना: पूर्वे जिनभाषित सूत्रार्थ जे भण्या होइए ते स्मरणमां रहेवा माटे, निर्जरा ने अर्थे शुद्ध उपयोग सहित शुद्ध सूत्रार्थनी वारंवार सझ्झाय करीए तेनुं नाम परावर्त्तना लंबन. ४ धर्मकथा. वीतराग भगवाने जे भाव जेवा प्रणीत कर्याछे ते भाव तेवा लइने, ग्रहीने विशेषे करीने, निश्चय करीने, शंका, कंखा अने वितिगिच्छारहितपणे, पोतानी निर्जराने अर्थे सभामध्ये ते भाव तेवा प्रणीत करीए के जेथी सांभळनार, सद्दहनार बन्ने भगवंतनी आज्ञाना आराधक थाय. ए धर्मकथालंबन कहीए. ए धर्मध्यानमां चार आलंबन कहेवायां. धर्मध्याननी चार अनुप्रेक्षा कहुं छउं. १ एकत्वानुप्रेक्षा. २ अनित्यानुप्रेक्षा. ३ अशरणानुप्रेक्षा. ४ संसारानुप्रेक्षा. ए चारेनो बोध बार भावनाना पाठमां कहेवाइ गयोछे. ते तमने स्मरणमां हशे.

शिक्षापाठ ७६ धर्मध्यान भाग ३.

धर्मध्यान पूर्वाचार्योए अने आधुनिक मुनीश्वरोए पण विस्तारपूर्वक बहु समजाव्युं छे. ए ध्यानवडे करीने आत्मा मुनिस्वभावमां निरंतर प्रवेश करे छे

जे जे नियमो एटले भेद, लक्षण, आलंबन अने अनुप्रेक्षा कह्या ते बहु मनन करवा जेवा छे अन्य मुनीश्वरोना कहेवा प्रमाणे में सामान्य भाषामा ते तमने कह्या: ए साथे निरंतर लक्ष राखवानी आवश्यकता छे के एमाथी आपणे कयो भेद

पाम्या; अथवा कया भेदभणी भावना राखी छे! ए सोळ भेदमांनो गमे ते भेद हितकारी अने उपयोगी छे;परंतु जेवा अनुक्रमथी लेवो जोइए ते अनुक्रमथी लेवायतो ते विशेष आत्मलाभनुं कारण थइ पडे.

सूत्रसिद्धांतनां अध्ययनो केटलाक मुखपाठ करे छे; तेना अर्थ, तेमां कहेलां मूळतत्त्वो भणी जो तेओ लक्ष पहोंचाडे तो कंइक सूक्ष्मभेद पामी शके. केळनां पत्रमां, पत्रमां पत्रनी जेम चमत्कृति छे तेम सूत्रार्थने माटे छे. ए उपर विचार करतां निर्मळ अने केवळ दयामय मार्गनो जे वीतरागप्रणीत तत्त्वबोध तेनुं बीज अंतःकरणमां उगी नीकळशे. ते अनेक प्रकारनां शास्त्रावलोकनथी, प्रश्नोत्तरथी, विचारथी अने सत्पुरुषना समागमथी पोषण पामीने वृद्धि थई वृक्षरूपे थशे. जे पछी निर्जरा अने आत्मप्रकाशरूप फळ आपशे.

श्रवण, मनन अने निदिध्यासनना प्रकारो वेदांतवादियोए बताव्या छे; पण जेवा आ धर्मध्यानना पृथक् पृथक् सोळ भेद कह्या छे तेवा तत्त्वपूर्वक भेद कोई स्थळे नथी, ए अपूर्व छे. एमांथी शास्त्रने श्रवण करवानो, मनन करवानो, विचारवानो, अन्यने बोध करवानो, शंकाकंखा टाळवानो, धर्मकथा करवानो-एकत्व विचारवानो. अनित्यता विचारवानो. अशरणता विचारवानो, वैराग्य पामवानो संसारनां अनंत दुःख मनन करवानो, अने वीतराग भगवंतनी आज्ञावडे करीने आखा लोकालोकना विचार करवानो अपूर्व उत्साह मळे छे भेदे भेद करीने एना पाछा अनेक भाव समजाव्या छे

नामृतनी प्राप्ति अने तेनी श्रद्धा ए पण साधनरुपछे. सर्वज्ञवच-नामृत अकर्म भूमि के केवळ अनार्य भूमिमां मळतां नथी तो पछी मानवदेह शुं उपयोगनो! ए माटे थइने सकर्म आर्यभूमि ए पण साधनरुप छे. तत्त्वनी श्रद्धा उपजवा अने बोध थवा माटे निर्ग्रंथ गुरुनी अवश्यछे. द्रव्ये करीने जे कुळ मिथ्यात्वि छे, ते कुळमां थयेलो जन्मपण आत्मज्ञान प्राप्तिनी हानि रुपज छे. कारण धर्ममत भेद ए अति दुःखदायकछे. परंपराथी पूर्वजोए ग्रहण करेलुं जे दर्शन तेमांज सत्यभावना बंधाय छे; एथी क-रीने पण आत्मज्ञान अटके छे. ए माटे भलुं कुळ पण जरुरनुं छे. ए सघळां प्राप्त करवा माटे थइने भाग्यशाळी थवुं तेमां सद्पुण्य एटले पुण्यानुबंधी पुण्य इत्यादिक उत्तम साधनो छे. ए द्वितीय साधन भेद कह्यो.

३ जो साधन छे तो तेने अनुकूळ देश काळ छे? ए त्रीजा भेदनो विचार करीए. भारतमां महाविदेह. इ० कर्म भूमि अने तेमां पण आर्यभूमि ए देश भावे अनुकूळ छे. जिज्ञासु भव्य! तमे सघळा आ काळे भारतमां छो; माटे भारत देश अनुकूळ छे. काळभाव प्रमाणे मति अने श्रुत प्राप्त करी शकाय एटली अनुकूळता छे. कारण आ दुःषमपंचम काळमां परमावधि, म-नःपर्यव अने केवळ ए पवित्र ज्ञान विच्छेद छे. एटले काळनी परिपूर्ण अनुकूळता नथी.

४ देशकाळादि जो अनुकूळ छे तो क्यां सुधी छे? एनो उत्तर शेष रहेलुं सिद्धांतिक मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, सामान्यमतथी ज्ञान काळभावे एकवीश हजार वर्ष रहवानुं तेमांथी अढी सहस्र

तेना रुपी अरुपी पुद्गळ आकाशादिक विचित्र भाव काळचक्र ३. जाणवा रुपछे. जीवाजीव जाणवानी प्रकारांतरे सर्वज्ञ सर्वदर्शीए नव श्रेणि रुप नवतत्त्व कह्यांछे.

जीव,	अजीव,	पुण्य,
पाप,	आश्रव,	संवर,
निर्जरा,	बंध,	मोक्ष.

एमांनां केटलांक ग्राह्यरुप, केटलांक जाणवारुप केटलांक त्यागवा रुप छे. सघळां ए तत्त्वो जाणवा रुप तो छेज.

५ जाणवानां साधन. सामान्य विचारमां ए साधनो जो के जाण्यां छे, तोपण विशेष कंइक जाणीए. भगवाननी आज्ञा अने तेनुं शुद्ध स्वरुप यथातथ जाणवुं. स्वयं कोइकज जाणे छे. नहीं तो निर्ग्रंथज्ञानी गुरु जणावी शके. निरागी ज्ञाता सर्वोत्तम छे. एटला माटे श्रद्धानुं बीज रोपनार के तेने पोपनार गुरु ए साधन रुप छे; ए साधनादिकने माटे संसारनी निवृत्ति एटले शम; दम ब्रह्मचर्यादिक अन्य साधनो छे. ए साधनो प्राप्त करवानी वाट कहीए तो पण चाले.

६ ए ज्ञाननो उपयोग के परिणामनो उत्तरनो आशय उपर आवी गयो छे; पण काळभेदे कंइ कहेवानुं छे. अने ते एटलुंज के दिवसमां बेघडीनो वखत पण नियमित राखीने जिनेश्वर भगवाननां कहेला तत्त्वबोधनी पर्यटना करो. वीतरागना एक सिद्धांतिक शब्दपरथी ज्ञाना वरणीनो बहु क्षयोपशम थशे एम हुं विवेकथी कहुं छउं.

—:※:—

शिक्षापाठ ८१ पंचमकाळ.

काळचक्रना विचारो अवश्य करीने जाणवा योग्य छे. जिनेश्वरे ए काळचक्रना बे मुख्य भेद कह्या छे; १ उत्सर्पिणी २ अवसर्पिणी. अकेका भेदना छ छ आरा छे. आधुनिक वर्त्तन करी रहेलो आरो पंचमकाळ केहवाय छे; अने ते अवसर्पिणी काळनो पांचमो आरो छे. अवसर्पिणी एटले उतरतो काळ; ए उतरता काळना पांचमा आरामां केवुं वर्त्तन आ भरतक्षेत्रे थवुं जोइए तेने माटे सत्पुरुषोए केटलाक विचारो जणाव्या छे; ते अवश्य जाणवा जेवा छे.

एओ पंचमकाळनुं स्वरुप मुख्य आ भावमां कहे छे. निर्ग्रंथप्रवचनपरथी मनुष्योनी श्रद्धा क्षीण थती जशे. धर्मनां मूळतत्वोमां मतमतांर वधशे. पाखंडी अने प्रपंची मतोनुं मंडन थशे. जनसमूहनी रुचि अधर्म भणी वळशे. सत्यदया हळवे हळवे पराभव पामशे. मोहादिक दोषोनी वृद्धि थती जशे. दंभी अने पापिष्ट गुरुओ पूज्यरुप थशे. दुष्टवृत्तिनां मनुष्यो पोताना फंदमां फावी जशे. मीठा पण धूर्त्तवक्ता पवित्र मनाशे शुद्ध ब्रह्मचर्यादिक शीलयुक्त पुरुषो मलिन केहवाशे. आत्मिकज्ञानना भेदो हणाता जशे; हेतु वगरनी क्रिया वधती जशे. अज्ञानक्रिया बहुधा सेवाशे; व्याकूळ करे एवा विषयोनां साधनो वधतां जशे. एकांतिक पक्षो सत्ताधिश थशे. शृंगारथी धर्म मनाशे.

खरा क्षत्रियोविना भूमि शोकग्रस्त थशे. निर्माल्य राजवंशीओ वेश्याना विलासमां मोह पामशे; धर्म, कर्म, अने खरी राज-

नीति भूली जशे; अन्यायने जन्म आपशे. जेम लूटाशे तेम प्र-जाने लूटशे. पोते पापिष्ट आचरणो सेवी प्रजा आगळ ते पळाववा जशे. राजनीजनने नामे शून्यता आववीं जशे. नीच मंत्रियोनी महत्ता वधती जशे. एओ दीनप्रजाने चुसीने भंडार भरवानो राजाने उपदेश आपशे. शीयळभंग करवानो धर्म रा-जाने अंगीकार करावशे. शौर्यादिक सद्गुणोनो नाश करावशे. मृगयादिक पापमां अंध बनावशे. राज्याधिकारीओ पोताना अधिकारथी हजारगुणी अहंपदता राखशे. विप्रो लालचु अने लोभी थइ जशे. सद्विद्याने दाटी देशे; संसारी साधनोने धर्म ठरावशे. वैश्यो मायावि, केवळ स्वार्थि अने कठोर हृदयना थ-ता जशे. समग्र मनुष्यवर्गनी सद्वृत्तियो घटती जशे. अकृत्य अने भयंकर कृत्यो करतां तेओनी वृत्ति अटकशे नहीं. विवेक, विनय, सरळता इ० सद्गुणो घटता जशे. अनुकंपाने नामे हीं-नता थशे. माता करतां पत्निमां प्रेम वधशे; पिता करतां पुत्रमां प्रेम वधशे; पातिव्रत्य नियम पूर्वक पाळनारी सुंदरीओ घटी जशे. स्नानथी पवित्रता गणाशे; धनथी उत्तमकूळ गणाशे. गु-रुथी शिष्यो अवळा चालशे. भूमिनो रस घटी जशे. संक्षेपमां कहेवानो भावार्थ के उत्तम वस्तुनी क्षीणता छे; अने कनिष्ट व-स्तुनो उदय छे. पंचमकाळनु स्वरुप आपानुं प्रत्यक्ष नुचवन पण केटलुं बधुं करेछे!

मनुष्य सद्धर्मतत्त्वमां परिपूर्ण श्रद्धावान नहीं थइ शके; संपूर्ण तत्त्वज्ञान नहीं पामी शके; जंबुस्वामीना निर्वाण पछी दश निर्वाणी वस्तु आ भरतक्षेत्रथी व्यवछेद गइ.

पंचमकाळनुं आवुं स्वरूप जाणीने विवेकी पुरुषो तत्त्वने ग्रहण करशे; काळानुसार धर्मतत्त्वश्रद्धा पामीने उच्चगति साधी परिणामे मोक्ष साधशे. निर्ग्रंथप्रवचन, निर्ग्रंथ गुरु इ० धर्मतत्त्व पामवानां साधनो छे. एनी आराधनाथी कर्मनी विराधना छे.

शिक्षापाठ ८२ तत्त्वाववोध. भाग १.

दश वैकालिक सूत्रमां कथन छे के जेणे जीवाजीवना भाव नथी जाण्या ते अबुध संयममां स्थिर केम रही शकशे? ए वचनामृतनुं तात्पर्य एम छे के तमे आत्मा, अनात्माना स्वरूपने जाणो, ए जाणवानी परिपूर्ण अवश्य छे.

आत्मा अनात्मानुं सत्य स्वरूप निर्ग्रंथप्रवचनमांथीज प्राप्त थइ शके छे. अनेक अन्य मतोमां ए बे तत्त्वो विषे विचारो दर्शाव्या छे, पण ते यथार्थ नथी. महा प्रज्ञावंत आचार्यो ए करेलां विवेचन सहित प्रकारांतरे कहेलां मुख्य नवतत्त्वने विवेकबुद्धिथी जे ज्ञेय करे छे, ते सत्पुरुष आत्मस्वरूपने ओळखी शके छे.

स्याद्वादशैली अनुपम, अने अनंत भावभेदथी भरेली छे; ए शैलीने परिपूर्ण तो सर्वज्ञ अने सर्वदर्शीज जाणी शके; छतां एओनां वचनामृतानुसार आगम उपयोगथी यथामति नवतत्त्वनुं स्वरूप जाणवुं अवश्यनुं छे. ए नवतत्त्व प्रिय श्रद्धा भावे जाणवाथी परम विवेकबुद्धि, शुद्ध सम्यक्त्व अने प्रभाविक आत्मज्ञाननो उदय थाय छे. नवतत्त्वमां लोकालोकनुं संपूर्ण स्वरूप आवी जाय छे. जे प्रमाणे जेनी बुद्धिनी गति छे, ते

प्रमाणे तेओ तत्त्वज्ञान संबंधी दृष्टि पहोंचाडे छे; अने भावानुसार तेओना आत्मानी उज्ज्वलता थाय छे. ते वडे तेओ आत्मज्ञानना निर्मळ रस अनुभवे छे. जेनुं तत्त्वज्ञान उत्तम अने सूक्ष्म छे, तेमज सुशीलयुक्त जे तत्त्वज्ञानने सेवे छे ते पुरुष महद्भागी छे.

ए नवतत्त्वनां नाम आगळना शिक्षापाठमां हुं कही गयो छउं; एनुं विशेष स्वरूप प्रज्ञावंत आचार्योना महान् ग्रंथोथी अवश्य मेळववुं; कारण सिद्धांतमां जे जे कह्युं छे, ते ते विशेष भेदथी समजवा माटे सहायभूत प्रज्ञावंत आचार्यविरचित ग्रंथो छे. ए गुरुगम्यरूप पण छे. नय, निक्षेपा अने प्रमाणभेद नवतत्त्वनां ज्ञानमां अवश्यनां छे; अने तेनी यथार्थ समजण ए प्रज्ञावंतोए आपीछे.

शिक्षापाठ ८३ तत्त्वावबोध भाग २.

सर्वज्ञ भगवाने लोकालोकना संपूर्ण भाव जाण्या अने जोया तेनो उपदेश भव्य लोकोने कर्यो. भगवाने अनंत ज्ञानवडे करीने लोकालोकनां स्वरूपविषेना अनंत भेद जाण्या हता; परंतु सामान्य मानवीओने उपदेशथी श्रेणिए चढवा मुख्य देखाता नव पदार्थ तेओए दर्शाव्या. एथी लोकालोकना सर्व भावनो एमां समावेश थइ जाय छे. निर्ग्रंथप्रवचनना जे जे सूक्ष्म बोध छे, ते तत्त्वनी दृष्टिए नवतत्त्वमां समाइ जाय छे; तेमज सघळा धर्ममतोना सूक्ष्म विचार ए नवतत्त्वविज्ञानना एक देशमां आवी जाय छे. आत्मानी जे अनंत शक्तियो ढंकाइ

रहीछे तेने प्रकाशित करवा अर्हंत भगवाननो पवित्र बोधछे; ए अनंत शक्तिओ त्यारे प्रफुल्लित थइ शके के ज्यारे नवतत्व विज्ञानना पारावार ज्ञानी थाय.

सूक्ष्म द्वादशांगी ज्ञान पण ए नवतत्व स्वरूप ज्ञानने सहायरूप छे. भिन्न भिन्न प्रकारे ए नवतत्वस्वरूप ज्ञाननो बोध करे छे; एथी आ निःशंक मानवा योग्य छे के नवतत्व जेणे अनंत भाव भेदे जाण्यां ते सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी थयो.

ए नवतत्व त्रिपदीने भावे लेवा योग्यछे. हेय, ज्ञेय अने उपादेय एटले त्याग करवा योग्य, जाणवा योग्य अने ग्रहण करवा योग्य एम त्रण भेद नवतत्व स्वरूपना विचारमां रहेलाछे.

प्रश्नः—जे त्यागवारूप छे तेने जाणीने करवुं शुं? जे गाम न जवुं तेनो मार्ग शा माटे पूछवो?

उत्तरः—ए तमारी शंकानुं समाधान सहजमां थइ शके तेवी छे. त्यागवारूप पण जाणवां अवश्य छे. सर्वज्ञ पण सर्व प्रकारना प्रपंचने जाणी रह्या छे. त्यागवारूप वस्तुने जाणवानुं मूळतत्व आछे के जो ते जाणी न होय तो अत्याज्य गणी कोइ वखत सेवी जवाय; एक गामथी बीजे पहोंचतां सुधी वाटमां जे जे गाम आववानां होय तेनो रस्तो पण पूछवो पडेछे; नहींतो ज्यां जवानुं छे त्यां न पहोंची शकाय. ए गाम जेम पूछ्यां पण त्यां वास कर्यो नहीं तेम पापादिक तत्वो जाणवां पण ग्रहण करवां नहीं. जेम वाटमां आवतां गामनो त्याग कर्यो तेम तेनो पण त्याग करवो अवश्यनो छे.

शिक्षापाठ ८४ तत्त्वावबोध भाग ३.

नवतत्वनुं काळभेदे जे सत्पुरुषो गुरुगम्यताथी श्रवण, मनन अने निदिध्यासन पूर्वक ज्ञान लेछे, ते सत्पुरुषो महा पुण्यशाळी तेमज धन्यवादने पात्र छे. प्रत्येक सुज्ञपुरुषोने मारो विनयभावभूषित एज बोध छे के नवतत्वने स्वबुद्ध्यानुसार यथार्थ जाणवां.

महावीर भगवंतनां शासनमां बहु मतमतांतर पडी गयां छे, तेनुं मुख्य कारण तत्वज्ञान भणीथी उपासक वर्गनुं लक्ष गयुं ए छे. मात्र क्रियाभावपर राचता रह्या; जेनुं परिणाम दृष्टिगोचरछे. अंग्रेजोना शोधमां आवेली पृथ्विनी वस्ति एक अबज अने चाळीश करोडनी गणाइ छे; तेमां सर्व गच्छनी मळीने जैनप्रजा मात्र वीश लाख छे. ए प्रजा ते श्रमणोपासक छे. एमांथी हुं धारु छउं नवतत्वने पठनरुपे बे हजार पुरुषो पण मांड जाणता हशे; मनन अने विचारपूर्वक तो आंगळीने टेरवे गणी शकीए तेटला पुरुषो पण नहीं हशे. ज्यारे आवीपतित स्थिति तत्वज्ञान संबंधी थइ गइ छे त्यारेज मतमतांतर वधी पड्या छे. एक लौकिक कथन छे के "सो शाणे एक मत तेम" अनेक तत्वविचारक पुरुषोना मतमां भिन्नता बहुधा आवतो नथी.

ए नवतत्व विचार संबंधी प्रत्येक मुनिओने मारी विज्ञप्ति छे के विवेक अने गुरुगम्यताथी एनुं ज्ञान विशेष वृद्धिमान करवुं; एथी तेओनां पवित्र पंच महाव्रत दृढ थशे; जिनेश्वरनां

आनंद, समर्थ तत्त्वज्ञाननी स्फूरणा, उत्तम विनोद अने गंभिर
चळकाट दिग् करी दइ शुद्ध सम्यक् ज्ञाननो ते विचारो बहु उदय
करेछे. स्याद्वादवचनामृतना अनंत सुंदर आशय समजवानो श-
क्ति आ काळमां आ क्षेत्रथी विच्छेद गयेली छतां ते परत्वे जे
जे सुंदर आशयो समजाय छे ते ते आशयो अति अति गंभिर
तत्त्वथी भरेला छे. पुनःपुनः ते आशयो मनन करायतो चार्वाक-
मतिना चंचळ मनुष्यने पण सद्धर्ममां स्थिर करी दे तेवा छे.
संक्षेपमां सर्व प्रकारनी सिद्धि, पवित्रता, महाशील निर्मळ
उंडा अने गंभिर विचार, स्वच्छ वैराग्यनी भेट ए तत्त्व-
ज्ञानथी मळे छे.

—❖—

शिक्षापाठ ८६ तत्त्वावबोध. भाग ५.

एकवार एक समर्थ विद्वानसाथे निर्ग्रंथप्रवचननी चमत्कृति
संबंधी वातचित थइ; तेना संबंधमां ते विद्वाने जणाव्युं के आ-
टलुं हुं मान्य राखुं छउं के महावीर ए एक समर्थ तत्त्वज्ञानी
पुरुष हता; एमणे जे बोध कर्यो छे, ते झीली लइ प्रज्ञावंत पु-
रुषोए अंग उपांगनी योजना करी छे; तेना जे विचारो छे ते
चमत्कृति भरेला छे; परंतु ए उपरथी लोकालोकनुं ज्ञान एमां
रह्युं छे एम हुं कही न शकुं. एम छतां जो तमे कंइ ए संबंधी
प्रमाण आपता हो तो हुं ए वातनी कंइ श्रद्धा लावी शकुं. एना
उत्तरमां में एम कह्युं के हुं कंइ जैन वचनामृतने यथार्थ तो
शुं पण विशेष भेदे करीने पण जाणतो नथी; पण जे सामान्य
भावे जाणुं छउं एथी पण प्रमाण आपी शकुं खरो. पछी नव-

तत्त्वविज्ञान संबंधी वातचित नीकळी. में कह्युं एथी आखी सृ-
ष्टिनुं ज्ञान आवी जाय छे; परंतु यथार्थ समजवानी शक्ति
जोइए. पछी तेओए ए कथननुं प्रमाण माग्युं, त्यारे आठ कर्म
में कही बताव्यां; तेनी साथे एम सूचव्युं के ए शिवाय एनाथी
भिन्न भाव दर्शावे एवुं नवमुं कर्म शोधी आपो; पापनी अने
पुण्यनी प्रकृतियो कहीने कह्युं आ शिवाय एक पण वधारे प्रकृ-
ति शोधी आपो. एम कहेतां अनुक्रमे वात लीधी. प्रथम जीवना
भेद कही पूछ्युं एमां कंइ न्यूनाधिक कहेवा मागो छो? अजीव-
द्रव्यना भेद कही पूछ्युं. कंइ विशेषता कहो छो? एम नव तत्त्वसं-
बंधी वातचित थइ त्यारे तेओए थोडीवार विचार करीने कह्युं
आतो महावीरनी कहेवानी अद्भुत चमत्कृति छे के जीवनो एक
नवो भेद मळतो नथी; तेम पापपुण्यादिकनी एक प्रकृति विशेष
मळती नथी; अने नवमुं कर्म पण मळतुं नथी. आवां आवां त-
त्त्वज्ञानना सिद्धांतो जैनमां छे ए मारा लक्ष नहोतुं. आमां आखी
सृष्टिनुं तत्त्वज्ञान केटलेक अंशे आवी शके खरुं.

शिक्षापाठ ८७ तत्त्वावबोध. भाग ६.

एनो उत्तर आ भणीथी एम थयो के हजु आप आटलुं
लो छो ते एम जैनना तत्त्वविचारो आपना हृदये आव्या
थी त्यांसुधी; परंतु हुं मध्यस्थताथी सत्य कहुं छउं के एमां
जे विशुद्धज्ञान बताव्युं छे ते क्यांय नथी; अने सर्व मतोए जे
ज्ञान बताव्युं छे ते महावीरना तत्त्वज्ञानना एक भागमां आवी
जाय छे एनुं कथन स्याद्वाद छे, एकपक्षी नथी.

तेमणे कह्युं के केटलेक अंशे सृष्टिनुं तत्त्वज्ञान एमां आवी शके. खरुं; परंतु ए मिश्रवचन छे. अमारी समजाववानी अल्पज्ञताथी एम बने खरुं; परंतु एथी ए तत्त्वोमां कंइ अपूर्णता छे एमनो नथीज. आ कंइ पक्षपाती कथन नथी. विचार करी आखी सृष्टिमांथी ए शिवायनुं एक दशमुं तत्त्व शोधतां कोइ काळे ते मळनार नथी. ए संबंधी प्रसंगोपात आपणे ज्यारे वातचित अने मध्यस्थ चर्चा थाय त्यारे निःशंकता थाय.

उत्तरमां तेओए कह्युं के आ उपरथी मने एम तो निःशंकता छे के जैन अद्भुत दर्शन छे. श्रेणिपूर्वक तमे मने केटलाक नव-तत्त्वना भाग कही बताव्या एथी हुं एम बेधडक कही शकुं छउं के महावीर गुप्तभेदने पामेला पुरुष हता. एम सहजसाज वात करीने "उपन्नेवा," "विगमेवा" "धुवेवा," ए लब्धिवाक्य मने तेओए कह्युं. ए कही बताव्या पछी तेओए एम जणाव्युं के आ शब्दोना सामान्य अर्थमां तो कंइ चमत्कृति देखाती नथी; उपजवुं, नाश थवुं अने अचळता, एम ए त्रण शब्दोना अर्थ छे. परंतु श्रीमान् गणधरोए तो एम दर्शित कर्युं छे के ए वचनो गुरुमुखथी श्रवण करतां आगळना भाविक शिष्योने द्वादशांगीनुं आशयभरित ज्ञान थतुं हतुं! ए माटे में केटलेक विचारो पहोंचाडी जोया छतां मने तो एम लाग्युं के ए बनवुं असंभवित छे, कारण अति अति सूक्ष्म मानेलुं सिद्धांतिक ज्ञान एमां क्यांथी समाय? ए संबंधी तमे कंइ लक्ष पहोंचाडी शकशो?

ना अनेध्रुवतानी ना कही पछी व्ययनी हा कही एना वळी पाछा छ दोष. एटले सर्वाळे चौद दोष. केवळ ध्रुवता जतां तीर्थंकरनां वचन त्रुटी जाय ए पंदरमो दोष. उत्पत्तिध्रुवता लेतां कर्त्तानी सिद्धि थाय जेथी सर्वज्ञ वचन त्रुटी जाय ए सोळमो दोष. उत्पत्तिविघ्नतारूपे पापपुण्यादिकनो अभाव एटले धर्माधर्म सघळुं गयुं ए सत्तरमो दोष. उत्पत्ति विघ्नता अने सामान्य स्थितिथी (केवळ अचळ नही) त्रिगुणात्मक माया सिद्ध थायछे ए अढारमो दोष.

शिक्षापाठ ८९ तत्त्वावबोध भाग ८.

एटला दोष ए कथनो सिद्ध न थतां आवे छे. एक जैनमुनिए मने अने मारा मित्रमंडळने एम कह्युं हतुं के जैनसप्तभंगी नय अपूर्व छे, अने एथी सर्व पदार्थ सिद्ध थाय छे. नास्ति, अस्तिना एमां अगम्यभेद रह्या छे. आ कथन सांभळी अमे बधा घेर आव्या पछी योजना करतां करतां आ लब्धिवाक्यनी जीवपर योजना करी. हुं धारूं छउं के एवी नास्ति अस्तिना बन्नेभाव जीवपर नही उतरी शके. लब्धिवाक्यो पण क्लेशरूप थइ पडशे. तोपण ए भणी मारी कंइ तिरस्कारनी द्रष्टि नथी.

आनां उत्तरमां अमे कह्युं के आपे जे नास्ति अने अस्ति नय जीवपर उतारवा धार्यो ते सनिक्षेप शैलीथी नथी, एटले वखते एमांथी एकांतिक पक्ष लेइ जवाय; तेम वळी हुं कंइ स्याद्वाद शैलीनो यथार्थ जाणनार नथी, मंदमतिथी लेश भाग जाणुं

छउं. नास्ति अस्ति नय पण आपे यथार्थ शैली पूर्वक उतार्यो नथी. एटले हुं तर्कथी जे उत्तर दइ शकुं ते आप सांभळो.

उत्पत्तिमां "ना" एवी जे योजना करी छे ते एम यथार्थ थइ शके के "जीव अनादि अनंत छे."

विप्रतामां "ना" एवी जे योजना करी छे ते एम यथार्थ थइ शके के "एनो कोइ काळे नाश नथी."

ध्रुवतामां "ना" एवी जे योजना करी छे ते एम यथार्थ थइ शके के "एक देहमां ते सदैवने माटे रहेनार नथी."

—:०:—

शिक्षापाठ ९० तत्वावबोध भाग ९.

उत्पत्तिमां "हा" एवी जे योजना करी छे ते एम यथार्थ थइ शके के "जीवनो मोक्ष थया सुधी एक देहमांथी च्यवन पामी ते बीजा देहमां उपजे छे."

विप्रतामां "हा" एवी जे योजना करी छे ते एम यथार्थ थइ शके के "ते जे देहमांथी आव्यो त्यांथी विप्र पाम्यो; वा क्षण क्षण प्रति एनी आत्मिक ऋद्धि विषयादिक मरणवडे रुंधाइ रही छे, ए रूपे विप्रता योजी शकाय छे."

ध्रुवतामां "हा" एवी जे योजना कही छे ते एम यथार्थ थइ शके के "द्रव्ये करी जीव कोइ काळे नाश रूप नथी, त्रिकाळ सिद्ध छे."

हवे एथी करीने एटले ए अपेक्षाओ लक्षमां राखवा योजता दोष पण हुं धारुं छउं के टळी जशे.

१ जीव विभ्ररूपे नथी माटे ध्रुवता सिद्ध थइ. ए पहेलो दोष टळ्यो.

२ उत्पत्ति, विभ्रता अने ध्रुवता ए भिन्न भिन्न न्याये सिद्ध थइ; एटले जीवनुं सत्यत्व सिद्ध थयुं ए बीजो दोषगयो.

३ जीवनां सत्यस्वरूपे ध्रुवता सिद्ध थइ एटले विभ्रता गइ. ए त्रीजो दोष गयो.

४ द्रव्य भावे जीवनी उत्पत्ति असिद्ध थइ ए चोथो दोष गयो.

५ अनादि जीव सिद्ध थयो एटले उत्पत्ति संबंधीनो पांचमो दोष गयो.

६ उत्पत्ति असिद्ध थइ एटले कर्त्ता संबंधीनो छठो दोष गयो.

७ ध्रुवता साथे विभ्रता लेतां अबाध थयुं एटले चार्वाक मिश्रवचननो सातमो दोष गयो.

८ उत्पत्ति अने विभ्रता पृथक् पृथक् देहे सिद्ध थइ माटे केवळ चार्वाकसिद्धांत ए नामनो आठमो दोष गयो.

१४ शंकानो परस्परनो विरोधाभास जतां चौदसुधीना दोष गया.

१५ अनादि अनंतता सिद्ध थतां स्याद्वादवचन सत्य थयुं ए पंदरमो दोष गयो.

१६ कर्त्ता नथी ए सिद्ध थतां जिनवचननी सत्यता रही ए सोळमो दोष गयो.

१७ धर्माधर्म देहादिक पुनरागमन सिद्ध थतां सत्तरमो दोष गयो.

१८ ए सर्वे थान सिद्ध थतां त्रिगुणात्मक माया असिद्ध थइ ए अढारमो दोष गयो.

—:०:—

शिक्षापाठ ९१ तत्त्वावबोध भाग १०.

आपनी योजेली योजना हुं धारुं छउं के आथी समाधान पामी हशे. आ कंइ यथार्थ शैली उतारी नथी, तोपण एमां कंइ पण विनोद मळी शके तेम छे. ए उपर विशेष विवेचनने माटे घणोखो वखत जोइए एटले वधारे कहेतो नथी; पण एक बे टुंकी वात आपने कहेवानी छे ते जो आ समाधान योग्य थयुं होय तो कहुं. पछी तेओ तरफथी मनमानतो उत्तर मळयो, अने एक बे वात जे कहेवानी होय ते सहर्ष कहो एम तेओए कह्युं.

पछी में मारी वात संजीवन करी लब्धि संबंधी कह्युं. आप ए लब्धि संबंधी शंका करो के एने क्लेशरुप कहो तो ए वचनो ने अन्याय मळे छे. एमां अति अति उज्वळ आत्मिक शक्ति गुरुगम्यता अने वैराग्य जोइए छीए. ज्यां सुधी तेम नथी, त्यां सुधी लब्धि विषे शंका रहे खरी; पण हुं धारुं छउं के आ वेळा संबंधी कहेला बे बोल निरर्थक नहीं जाय. ते ए के जेम आ योजना नास्ति अस्तिपर योजी जोइ, तेम एमां पण बहु सूक्ष्म विचार करवाना छे. देहे देहनी पृथक् पृथक् उत्पत्ति, च्यवन, विश्राम, गर्भाधान, पर्याप्ति, इंद्रिय, सत्ता, ज्ञान, संज्ञा आयुष्य विषय इ० अनेक कर्मप्रकृति प्रत्येक भेद लेतां जे विचारो ए लब्धिथी नीकळे ते अपूर्व छे ज्यां सुधी लक्ष पहोंचे त्यां सु

थी सघळा विचार करे छे. परंतु द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक नये भा-
खी शक्तिनुं ज्ञान ए त्रण शब्दोमां रह्युं छे, तेनो विचार कोइज करे
छे; ते सद्गुरु मुखनी पवित्र लब्धिरूपे ज्यारे आवे त्यारे द्वादशांगी
ज्ञान शा माटे न थाय? जगत् एम कहेतांज मनुष्य एक घ-
र, एक वास, एक गाम, एक शेहेर, एक देश, एक खंड एक
पृथ्वि ए [illegible] मूकी दइ असंख्यात द्वीप समुद्रादिथी
भरपूर वस्तु केम समजी जाय छे? एनुं कारण मात्र एटलुंज
के ते ए शब्दनी वहोळताने समज्युं छे, किंवा एनुं लक्ष एवी अ-
मुक वहोळताए पहोंच्युं छे; जेथी जगत् एम कहेतां एवडो
मोटो मर्म समजी शके छे; तेमज ऋजु अने सरळ सत्पात्र शिष्यो
निर्ग्रंथ गुरुथी ए त्रण शब्दोनी गम्यता लइ द्वादशांगी ज्ञान
पामता हता. आवी रीते ते लब्धि अल्पज्ञता छतां विवेके जोतां
क्लेशरूप पण नथी.

शिक्षापाठ ९२ तत्त्वावबोध भाग ११.

एवज नवतत्त्व संबंधीछे. जे मध्य वयना क्षत्रियपुत्रे "जगत्"
अनादि छे, एम बेधडक कही कर्ताने उडाड्यो हशे, तेने पुरुषे
शुं कंइ सर्वज्ञताना गुप्त भेद विना कर्युं हशे? तम एनी निर्दोषता
विषे ज्यारे आप वांचशो त्यारे निश्चय एवो विचार करशो के ए
परमेश्वर हता. कर्ता नहोतो अने जगत अनादि हतुं तो तेम
कह्युं. एना [illegible] विषे आवे अव-
[illegible] अनंत
नथी [illegible]
[illegible]

आ पछी केटलीक वातचित थइ. प्रसंगोपात ए तत्व विचारवानुं वचन लइने सहर्ष अमारुं त्यांथी उठवुं थयुं.

तत्वावबोधना संबंधमां आ कथन करेवायुं. अनंतभेदथी भरेला ए तत्व विचारो काळभेदथी जेटला ज्ञेय थाय तेटला जाणवा; ग्राह्य थाय तेटला ग्रहवा; अने त्याज्य देखाय तेटला त्यागवा.

ए तत्वोने जे यथार्थ जाणेछे; ते अनंत चतुष्टयिथी विराजमान थाय छे ए सत्य समजवुं; ए नवतत्वनां क्रमवार नाम मूकवामां पण अरधुं सूचवन जीवने मोक्षनी निकटतानुं जणायछे!

शिक्षापाठ ९२ तत्वावबोध भाग १२.

एतो तमारा लक्षमां छे के जीव अजीव ए अनुक्रमथी छेवटे मोक्ष नाम आवे छे. हवे ते एक पछी एक मूकी जाए तो जीव अने मोक्षने अनुक्रमे आद्यंत रहेवुं पडशे.

जीव.
अजीव.
पुण्य.
पाप.
आश्रव.
संवर.
निर्जरा.
बंध.
मोक्ष.

आगळ कहेवायुं छे,के ए नाम पूरवामां जीव अने मोक्षनें निक-
टता छे. छतां आ निकटता तो न थइ.पण जीव अने अजीवने
निकटता थइ.वस्तुतः एम नथी.अज्ञानवडे तो ए बन्नेनेज निकटता
रहीछे;पण ज्ञानवडे जीव अने मोक्षने निकटता रहीछे जेमके.—

हवे जुओ ए बन्नेने कंइ निकटता आवी छे! हा कहेवी
निकटता आवी गइ छे. पण ए निकटता तो द्रव्यरूप छे. ज्यारे
भावे निकटता आवे त्यारे सर्व सिद्धि थाय.ए द्रव्य निकटतानुं सा-
धन सत्परमात्मतत्त्व, सद्गुरुतत्त्व अने सद्धर्मतत्त्व ओळखी सर्द-
हवुं ए छे. भावनिकटना एटले केवळ एकज रूप थवा ज्ञान,
दर्शन, अने चारित्र साधनरूप छे.

ए चक्रथी एवी पण आशंका थाय के ज्यारे बन्ने निकट
छे त्यारे शुं बाकीना त्यागवां? उत्तरमां कहेवानुं के जो सर्व
त्यागी शकता हो तो त्यागी द्यो. एटले मोक्षरूपज थशो. नहिंतो
हेय, ज्ञेय, उपादेयनो बोध ल्यो. एटले आत्मसिद्धि प्राप्त थशे.

—१०१०—

देव नथी, तरीने अनंत दुःखथी पार पामवुं होय तो ए सर्वज्ञ दर्शनरूप कल्पवृक्षने सेवो.

शिक्षापाठ ९५ तत्त्वावबोध भाग १४.

जैन ए एटलां बधां सूक्ष्म विचारसंकळनाथी भरेलुं दर्शन छे के एमां प्रवेश करतां पण बहु वखत जोइए. उपर उपरथी के कोइ प्रतिपक्षीना कहेवाथी अमुक वस्तु संबंधी अभिप्राय बांधवो के आपवो ए विवेकीनुं कर्त्तव्य नथी. एक तळाव संपूर्ण भर्युं होय, तेनुं जळ उपरथी समान लागे छे; पण जेम जेम आगळ चालीए छीए तेम तेम वधारे वधारे ऊंडापणुं आवतुं जाय छे; छतां उपरनुं जळ सपाटज रहे छे; तेम जगत्ना सघळा धर्ममतो एक तळाव रूप छे, तेने उपरथी सामान्य सपाटी जोइने सरखा कही देवा ए उचित नथी. एम कहेनारा तत्त्वने पामेला पण नथी. जैनना एकेका पवित्र सिद्धांतपर विचार करतां आयुष्य पूर्ण थाय, तो पण पार पमाय नहीं तेम रह्युं छे. बाकीना सघळा धर्ममतोना विचार जिनप्रणीत वचनामृतसिंधु आगळ एक बिंदुरूप पण नथी. जैनमत जेणे जाण्यो, अने सेव्यो ते केवळ विरागी अने सर्वज्ञ थइ जाय छे. एना प्रवर्तको केवा पवित्र पुरुषो हता! एना सिद्धांतो केवा अखंड संपूर्ण अने दयामय छे! एमां दूषण कांइज नथी! केवळ निर्दोष तो मात्र जैनुं दर्शन छे! एवो एक पण पारमार्थिक विषय नथी के जे जैनमां नहीं होय अने एवुं एक पण तत्त्व नथी के जे जैनमां नथी; एक विषयने अनंत भेदे परिपूर्ण कहेनार ते जैनदर्शन छे. प्रयोजन

भूततत्त्व एना जेवुं क्यांय नथी. एक देहमां बे आत्मा नथी; तेम आखी सृष्टिमां बे जैन एटले जैननी तुल्य बीजुं दर्शन नथी. आम कहेवानुं कारण शुं? तो मात्र तेनी परिपूर्णता, निरागीता, सत्यता अने जगद् हितैषिता.

शिक्षापाठ ९६ तत्त्वावबोध भाग १५.

न्यायपूर्वक आटलुं अमारे पण मान्य राखवुं जोइए के ज्यारे एकदर्शनने परिपूर्ण कही वात सिद्ध करवी होय त्यारे प्रतिपक्षनी मध्यस्थ बुद्धिथी अपूर्णता दर्शाववी जोइए. पण ए बे वातपर विवेचन करवा जेटली अहीं जग्यो नथी; तो पण थोडुं थोडुं कहेता आव्या छिए. मुख्यत्वे कहेवानुं के ए वात जेने रुचिकर थती नहोय के असंभवित लागती होय तेणे जैनतत्त्वविज्ञानी शास्त्रो अने अन्यतत्त्वविज्ञानी शास्त्रो मध्यस्थ बुद्धिथी मनन करी न्यायने कांटे तोळन करवुं. ए उपरथी अवश्य एटलुं महावाक्य नीकळशे, के जे आगळ नगारापर दांडी ठोकीने कहेवायुं हतुं ते खरुं छे.

जगत् गाडरियो प्रवाह छे. धर्मना मतभेद संबंधीना शिक्षापाठमां दर्शाव्या प्रमाणे अनेक धर्ममतनी जाळ लागी पडी छे. विशुद्ध आत्मा कोइकज थाय छे. विवेकथी तत्त्वने कोइक शोधे छे. एटले जैन तत्त्वने अन्यदर्शनियो शा माटे जाणता नथी ए खेद के आशंका करवा जेवुंज नथी.

छतां एने बहु आश्चर्य लागे छे के केवळ शुद्ध परमात्म-

तत्त्वने पामेला,सकळ दूषणरहित,मृषा कहेवानुं जेने कंइ निमित्त नथी एवा पुरुषनां कहेलां पवित्रदर्शनने पोते तो जाण्युं नहीं, पोताना आत्मानुं हित तो कर्युं नहीं, पण अविवेकथी मतभेदमां आवी जइ केवळ निर्दोष अने पवित्र दर्शनने कहेनाराओए नास्तिक शा माटे कह्युं हशे ? पण ए कहेनारा एनां तत्त्वने जाणता नहोता. वळी एनां तत्त्वने जाणवाथी पोतानी श्रद्धा फरशे, त्यारे लोको पछी पोताना आगळ कहेला मतने गांठशे नहीं; जे लौकिक मतमां पोतानी आजीविका रही छे, एवा वेदादिनी महत्ता घटाडवाथी पोतानी महत्ता घटशे; पोतानुं मिथ्या स्थापित करेलुं परमेश्वर पद चालशे नहीं. एथी जैनतत्त्वमां प्रवेश करवानी रुचिने मूळथीज बंध करवा लोकोने एवी भ्रमभुरकी आपी के जैन नास्तिक छे. लोको तो बिचारा गभरुगाडर छे; एटले पछी विचार पण क्यांथी करे ? ए कहेवुं केटलुं मृषा अने अनर्थकारक छे ते जेणे वीतराग प्रणीत सिद्धांतो विवेकथी जाण्या छे, ते जाणे. अमारुं कहेवुं मंद बुद्धिओ वखते पक्षपातमां लइ जाय.

शिक्षापाठ ९७ तत्त्वावबोध भाग १६.

पवित्र जैन दर्शनने नास्तिक कहेवरावनाराओ एक मिथ्या दलीलथी फावता इच्छेछे, के जैनदर्शन आ जगत्ना कर्त्ता परमेश्वरने मानतुं नथी. अने जगत्कर्त्ता परमेश्वरने जे नथी मानता ते तो नास्तिकज छे. एवी मान्यता लीधेली वात भद्रिकजनोने शीघ्र चोंटी रहे छे. कारण तेओमां यथार्थ

प्रीत करीछे, एक रजकणथी करीने आखा जगत्ना विचारो जेणे सर्व भेदे कह्याछे तेवा पुरुषोनां पवित्र दर्शनने नास्तिक कहेनारा कयि गतिने पामशे ए विचारतां दया आवे छे!

शिक्षापाठ ९८ तत्त्वावबोध भाग १७.

जे न्यायथी जय मेळवी शकतो नथी; ते पछी गाळो भांडे छे; तेम पवित्र जैनना अखंड तत्त्वसिद्धांतो शंकराचार्य, दयानंद संन्यासी वगेरे ज्यारे तोडी न शक्या त्यारे पछी जैन नास्तिक है, सो चार्वाकमेंसे उत्पन्न हुआ है एम कहेवा मांड्युं. पण ए स्थळे कोइ प्रश्न करे, के महाराज! ए विवेचन तमे पछी करो. एवा शब्दो कहेवामां कंइ वखत विवेक के ज्ञान जोतुं नथी; पण आनो उत्तर आपो के जैनवेदथी कयि वस्तुमां उतरतो छे; एनुं ज्ञान, एनो बोध; एनुं रहस्य; अने एनुं सत्शील केवुं छे ते एकवार कहो! आपना वेद विचारो कयी बाबतमां जैनथी चढे छे! आम ज्यारे मर्मस्थानपर आवे त्यारे मौनता शीवाय तेओ पासे बीजुं कंइ साधन रहे नहीं. जे सत्पुरुषोनां वचनामृत अने योगबळथी आ सृष्टिमां सतदया, तत्त्वज्ञान अने महाशील उदय पामेछे, ते पुरुषो करतां जे पुरुषो शृंगारमां राच्या पड्या छे, सामान्य तत्त्वज्ञानने पण नथी जाणता, जेनो आचार पण पूर्ण नथी, तेने चढता कहेवा,—परमेश्वरने नामे स्थापवा अने सत्य-स्वरूपनी अवगणना बोलवी, परमात्म स्वरूप पामेला ने नास्तिक कहेवा, ए एमना केटली बधी कर्मनी बहुलतानुं सूचवन वे छे [illegible]

रूपमां तत्त्व प्रसिद्धिमां आणवा ज्यां सुधी प्रयोजन नथी, त्यां सुधी शासननी उन्नति पण नथी. लक्ष्मी, कीर्ति अने अधिकार संसारी कळाकौशल्यथी मळे छे, परंतु आ धर्मकळाकौशल्यथी तो सर्व सिद्धि सांपडशे. महान् समाजना अंतर्गत उपसमाज स्थापवा. वाडामां बेसी रहेवा करतां मतमतांतर तजी एम करवुं उचित छे. हुं इच्छुं छउं के ते कृतनी सिद्धि थइ जैनांतर्गच्छ मतभेद टळो; सत्य वस्तु उपर मनुष्यमंडळनुं लक्ष आवो; अने ममत्व जाओ!

शिक्षापाठ १०० मनोनिग्रहनां विघ्न.

वारंवार जे बोध करवामां आव्यो छे तेमांथी मुख्य तात्पर्य नीकळे छे ते ए छे के आत्माने तारो अने तारवा माटे तत्त्वज्ञाननो प्रकाश करो; तथा सत्शीलने सेवो. ए प्राप्त करवा जे जे मार्ग दर्शाव्या ते ते मार्ग मनोनिग्रहताने आधीन छे. मनोनिग्रहता थवा लक्षनी बहोळता करवी जरुरनी छे. ए बहोळतामां विघ्नरूप नीचेना दोष छे.

१ आळस.	११ तुच्छवस्तुथी आनंद.
२ अनियमित ऊंघ.	१२ रसगारवलुब्धता.
३ विशेष आहार.	१३ अतिभोग.
४ उन्माद प्रकृति.	१४ पारकुं अनिष्ट इच्छवुं.
५ मायाप्रपंच.	१५ कारणविनानुं रळवुं.
६ अनियमित काम	१६ झाझानो स्नेह.
७ अकरणीयविलास.	१७ अयोग्यस्थळे जवुं.

८ मान.

९ मर्यादाउपरांतकाम.

१० आपवडाइ.

१८ एके उत्तम नियम साध्य न करवो.

ज्यां सुधी आ अष्टादश विघ्नथी मननो संबंधछे, त्यां सुधी अष्टादश पापस्थानक क्षय थवानां नथी. आ अष्टादश दोष जवाथी मनोनिग्रहता अने धारेली सिद्धि थइ शके छे. ए दोष ज्यांसुधी मनथी निकटता धरावेछे त्यां सुधी कोइपण मनुष्य आत्मसार्थक करवानो नथी. अति भोगने स्थळे सामान्य भोग नहीं,पण केवळभोग त्यागव्रत जेणे धर्युंछे, तेमज ए एके दोषनुं मूळ जेनां हृदयमां नथी ते सत्पुरुष महद्भागी छे.

शिक्षापाठ १०१ स्मृतिमां राखवांयोग्य महावाक्यो.

१ एक भेदे नियम एज आ जगतनो प्रवर्त्तक छे.

२ जे मनुष्य सत्पुरुषोना चरित्ररहस्यने पामेछे ते मनुष्य परमेश्वर थाय छे.

३ चंचळ चित्त एज सर्व विषम दुःखनुं मूळियुं छे.

४ झाझानो मेळाप अने थोडा साथे अति समागम ए बंने समान दुःखदायक छे.

५ समस्वभाविनुं मळवुं एने ज्ञानीओ एकांत कहेछे.

६ इंद्रियो तमने जीते अने सुख मानो ते करतां तेने तमे जीतवामांज सुख, आनंद अने परमपद प्राप्त करशो.

७ रागविना संसार नथी अने संसारविना राग नथी.

८ युवावयनो सर्व संग परित्याग परमपदने आपेछे.

९ ते वस्तुना विचारमां पहोंचो के जे वस्तु अतींद्रिय स्वरुप छे.

१० गुणीना गुणमां अनुरक्त थाओ.

शिक्षापाठ १०२ विविध प्रश्नो भाग १.

आजे तमने हुं केटलांक प्रश्नो निर्ग्रंथप्रवचनानुसार उत्तर आपवा माटे पूछुं छउं. कहो धर्मनी अगत्य शी छे?

उ—अनादि काळथी आत्मानी कर्मजाळ टाळवा माटे.

प्र—जीव पहेलो के कर्म?

उ—बन्ने अनादि छेज. जीव पेहेलो होय तो ए विमळ वस्तुने मळ वळगवानुं कंइ निमित्त जोइए. कर्म पेहेलां कहो तो जीव विना कर्म कर्यां कोणे? ए न्यायथी बन्ने अनादि छेज.

प्र—जीव रुपी के अरुपी?

उ—रुपी पण खरो; अने अरुपी पण खरो.

प्र—रुपी कया न्यायथी अने अरुपी कया न्यायथी ते कहो?

उ—देह निमित्ते रुपी अने स्वस्वरुपे अरुपी.

प्र—देह निमित्त शाथी छे?

उ—स्वकर्मना विपाकथी.

प्र—कर्मनी मुख्य प्रकृतियो केटली छे?

उ—आठ.

प्र—कयि कयि?

उ—ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, वेदनीय, मोहनीय, नाम,

याटे जे पुरुष त्रयोदश गुणस्थानकवर्ति विहार करेछे ते.

प्र—गुणस्थानक केटलां ?

उ—चौद.

प्र—तेनां नाम कहो ?

उ—१ मिथ्यात्वगुणस्थानक. २ सास्वादनगुणस्थानक. ३ मिश्रगुणस्थानक. ४ अविरतिसम्यग्दृष्टि गुणस्थानक. ५ देशविरतिगुणस्थानक. ६ प्रमत्तसंयतगुणस्थानक. ७ अप्रमत्तसंयतगुणस्थानक. ८ अपूर्वकरणगुणस्थानक. ९ अनिवृत्तिबादरगुणस्थानक. १० सूक्ष्मसंपरायगुणस्थानक. ११ उपशांतमोहगुणस्थानक. १२ क्षीणमोहगुणस्थानक. १३ सयोगीकेवळीगुणस्थानक. १४ अयोगी केवळीगुणस्थानक.

शिक्षापाठ १०४ विविध प्रश्नो भाग ३.

प्र—केवळी अने तीर्थंकर ए बन्नेमां फेर शो ?

उ—केवळी अने तीर्थंकर शक्तिमां समान छे; परंतु तीर्थंकरे पूर्वे तीर्थंकर नामकर्म उपार्ज्युं छे; तेथी विशेषमां बार गुण अने अनेक अतिशय प्राप्त करेछे.

प्र—तीर्थंकर पर्यटन करीने शा माटे उपदेश आपे छे ? ए तो निरागी छे ?

उ—तीर्थंकरनामकर्म जे पूर्वे बांध्युं छे ते वेदवा माटे तेओने प्रकार [illegible] करवुं पडे छे.

[illegible]

[illegible]

प्र—महावीर पहेलां जैनदर्शन हतुं ?

उ—हा.

प्र—ते कोणे उत्पन्न कर्युं हतुं ?

उ—ते पहेलानां तीर्थंकरोए.

प्र—तेओना अने महावीरना उपदेशमां कंइ भिन्नता खरी के ?

उ—तत्त्वस्वरुपे एकज छे. भिन्न भिन्न पात्रने लइने उपदेश होवाथी अने कंइक काळभेद होवाथी सामान्य मनुष्यने भिन्नता लागे खरी; परंतु न्यायथी जोतां ए भिन्नता नथी.

प्र—एओनो मुख्य उपदेश शुं छे ?

उ—आत्माने तारो; आत्मानी अनंतशक्तियोनो प्रकाश करो; एने कर्मरुप अनंत दुःखथी मुक्त करो ए.

प्र—ए माटे तेओए कया साधनो दर्शाव्यां छे ?

उ—व्यवहारनयथी सद्देव, सध्धर्म, अने सद्गुरुनुं स्वरुप जाणवुं; सद्देवना गुणग्राम करवा; त्रिविध धर्म आचरवो अने निर्ग्रंथ गुरुथी धर्मनी गम्यता पामवी ते.

प्र—त्रिविध धर्म कयो ?

उ—सम्यग्ज्ञानरुप, सम्यग्दर्शनरुप अने सम्यक्चारित्ररुप.

शिक्षापाठ १०५ विविध प्रश्नो भाग ४.

प्र—आवुं जैनदर्शन ज्यारे सर्वोत्तम छे, त्यारे सर्व आत्माओ एना बोधने कां मानता नथी ?

उ—कर्मनी बाहुल्यताथी, मिथ्यात्वनां जामेलां दळियाथी, अने सत्समागमना अभावथी.

प्र—जैनना मुनियोना मुख्य आचारनुं शुं छे?

उ—पांच महाव्रत, दशविधि यतिधर्म, सप्तदशविधिसंयम, दशविधि वैयावृत्य, नवविधि ब्रह्मचर्य, द्वादश प्रकारना तप, क्रोधादिक चार प्रकार कषायनो निग्रह. विशेषमां ज्ञान, दर्शन चारित्रनुं आराधन इत्यादिक अनेक भेदछे.

प्र—जैनमुनियोना जेवांज संन्यासियोनां पंचयाम छे; अने बौद्धधर्मनां पांच महाशील छे. एटले ए आचारमां तो जैनमुनियो अने संन्यासियो तेमज बौद्धमुनियो सरखा खरा के?

उ—नहीं.

प्र—केम नहीं?

उ—एओनां पंचयाम अने पंचमहाशील अपूर्ण छे. महाव्रतना प्रतिभेद जैनमां अति सूक्ष्मछे. पेला बेना स्थूळछे.

प्र—सूक्ष्मताने माटे दृष्टांत आपो जोइए?

उ—दृष्टांत देखीतुंज छे. पंचयामियो कंदमूळादिक अभक्ष्य खायछे; सुखशय्यामां पोढेछे; विविध जातनां वाहनो अने पुष्पनो उपभोग लेछे; केवळ शीतळ जळथी तेओनो व्यवहार छे. रात्रिये भोजन लेछे. एमां थतो असंख्याता जंतुनो विनाश, ब्रह्मचर्यनो भंग एआदिनी सूक्ष्मता तेओनो जाणवामां नथी. तेमज मांसादिक अभक्ष्य अने सुखशीलियां साधनोथी बौद्धमुनियो युक्तछे. जैन मुनियो तो केवळ एथी विरक्तजछे.

—·—

शिक्षापाठ १०८ विविध प्रश्नो भाग ५.

प्र—वेद अने जैन दर्शनने प्रतिपक्षता खरी के?

उ—जैनने कंइ असमंजस भावे प्रतिपक्षता नथी; परंतु सत्यथी

असत्य प्रतिपक्षी गणायछे, तेम जैनदर्शनथी वेदनो संबंध छे.

प्र—ए बेमां सत्यरुप तमे कोने कहोछो ?

उ—पवित्र जैनदर्शनने.

प्र—वेददर्शनियो वेदने कहेछे तेनुं केम ?

उ—एतो मतभेद अने जैनना तिरस्कार माटेछे; परंतु न्यायपूर्वक बन्नेनां मूळतत्त्वो आप जोइ जजो.

प्र—आटलुं तो मने लागेछे के महावीरादिकजिनेश्वरनु कथन न्यायना कांटापर छे; परंतु जगत्कर्त्तानी तेओ ना कहेछे, अने जगत् अनादि अनंतछे एम कहेछे ते विषे कंइ कंइ शंका थायछे के आ असंख्यात द्वीपसमुद्रयुक्त जगत् वगर बनाव्ये क्यांथी होय?

उ—आपने ज्यांसुधी आत्मानी अनंत शक्तिनी लेश पण दिव्य प्रसादी मळी नथी त्यांसुधी एम लागे छे; परंतु तत्त्वज्ञाने एम नहीं लागे. "सम्मतितर्क"आदिग्रंथनो आप अनुभव करशो एटले ए शंका नीकळी जशे.

प्र—परंतु समर्थ विद्वानो पोतानी मृषा वातने पण दृष्टांतादिकथी सिद्धांतिक करी दे छे; एथी ए त्रुटी शके नहीं, पण सत्य केम कहेवाय ?

उ—पण आने कंइ मृषा कथवानुं प्रयोजन नहोतुं, अने पळभर एम मानीये, के एम आपणने शंका थइ के ए कथन मृषा हशे ! तो पछी जगत्कर्त्ताए एवा पुरुषने जन्मपण शा आप्या? नामबोळक पुत्रने जन्म आपवा शुं प्रयोजन हतुं? तेम वळी ए पुरुषो सर्वज्ञ हता; जगत्कर्त्ता सिद्ध होत तो एम कहेवाथी तेओने कंइ हानि नहोती

शिक्षापाठ १०७ जिनेश्वरनी वाणी.

मनहर छंद.

अनंत अनंत भाव भेदथी भरेली भली,
अनंत अनंत नय निक्षेपे व्याख्यानी छे,
सकळ जगत हितकारिणी हारिणी मोह,
तारिणी भवाब्धि मोक्षचारिणी प्रमाणी छे;
उपमा आप्यानी जेने, तमा राखवी ते व्यर्थ,
आपवाथी निज मति मपाई मे मानी छे,
अहो ! राजचंद्र बाळ, ख्याल नथी पामता ए,
जिनेश्वर तणी वाणी, जाणी तेणे जाणी छे. १

शिक्षापाठ १०८ पूर्णमालिका मंगळ.

उपजाति.

तपोपध्याने रविरूप थाय,
ए साधिने सोम रही सुहाय;
महान ते मंगळ पंक्ति पामे;
आवे पछी ते बुधना प्रणामे. १
निर्ग्रंथ ज्ञाता गुरु सिद्ध दाता,
कां तो स्वयं शुक्र प्रपूर्ण ख्याता;
[illegible]
[illegible]

[illegible]

॥ इतिश्रीमद् राज्यचंद्र प्रणीत ॥

॥ मोक्षमाळा पुस्तक बीजुं. ॥

बाळावबोध शिक्षापाठ

समाप्त.